कृष्णसागर

श्रीमद्विष्णुप्रसाद वकीलके पुत्र श्रीराधाकृष्ण चरणार-
विन्द मधुप ज़िलअ़ गयाजी स्थान टेकारीनिवासि
हालबासी स्थान हज़ारीबाग़ ज़िलअ़ हज़ारी
बाग़ मुन्शीजगन्नाथ सहायकृत

जिसमे

भूभारहरण सर्व्व सुखकरण राधाकृष्णजी के उत्त
चरित्र अति सरस दोहा चौपाई आदि छन्दों
सज्जनों के मनोरंजनार्त्थ वर्णित हैं

तीसरीबार

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने मे छपी ॥

नवम्बर सन् १८८५ ई० ॥

विज्ञापन ॥

इसमहीने अर्थात् नवम्बर सन्१८८५ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यारहैं वह इस सूचीपत्रमें लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफायत से घटा के नियत हुआहै और व्यापारियोंके लिये औरभी सस्ता होगी जिनको व्यापारकीइच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोरके छापेखाने मुक़ाम लखनऊ हजरतगंज के पतेसे खतभेजकर कीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषाइतिहास	म०भा०पर्वपर्व जुदाभीहै	विनयपत्रिका मूल
महाभारत	रामायणरामबिलास	विनयपत्रिका सटीक
१ (पहिलेहिस्सेमें)	रामायणतुलसीकृतमूल	लिंगपुराण
आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व	रामायण सटीकमयेम-	विष्णुपुराण
२ (दूसरेहिस्सेमें)	नसदीपिका कोषआदि	गरुडपुराण प्रेतकल्प
विराट् पर्व, उद्योगपर्व	तथामोटेअक्षरोंकीमूल	ब्रह्मोत्तरखण्ड
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	मये तसवीर व क्षेपक	मिश्रितमाहात्म्य
(तीसरे हिस्सेमें)	रामायणअध्यात्मविचार	**वैद्यकभाषा**
कर्णपर्व, शल्यपर्व	रामायणतुलसीकृतसातो	निघण्ट
गदापर्व, सौप्तिकपर्व	काण्ड अलगर भीहै	अमरविनोद
ऐषिकपर्व, विशोकपर्व	रामायणसुखदेवलालकृत	वैद्यजीवन
स्त्रीपर्व (शान्तिपर्वमें)	भाषाटीका सहित	औषध संग्रहकल्पवल्ली
राजधर्म, आपद्धर्म	रामायण रामचरण दास	अमृतसागर बड़ा
मोक्षधर्म	कृतभाषा टीका सहित	तथा छोटा
४ (चौथे हिस्सेमें)	रामायण शब्दार्थकोष	वैद्यमनोत्सव
शान्तिपर्व, दानधर्म	रामायणका इतिहास	वैद्यप्रिया
अश्वमेध आश्रमवासिक	रामायणमानसदीपिका	हंसराजनिदान
पर्व व मुसल पर्व	रामायण कवितावली	**नाटक**
वानप्रस्थानपर्व	रामायण गीतावली स०	प्रबोधचन्द्रोदयनाटक
स्वर्गारोहणपर्व	अध्यात्मरामायणसंस्कृत	रामाभिषेकनाटक

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

कृष्णसागर का सूचीपत्र ॥

छप्पै ॥

प्रथमऽध्याय सँहार बाखदूजो अस्तुतिसुर । तीजे जन्मनहरि उपाय चौथे कंसासुर ॥ पंचम उत्सवजन्म षष्ठमहँ पुत्नामारी । सप्तम तृणासंहार चरितशिशु अष्टमझारी ॥ दावरि बंधन नवम महँ दशमो यमलार्जुनतरन । श्रीकृष्णसागरको सूचिपत्र सुनिये सुजानजन १ एकादश वध वत्सवका द्वादसहि अघाजस ॥ त्रयोदश ब्रह्माहरण वच्छ दशचतुर विनयतस ॥ धेनुक वध दशपंच षोडसोकालीदमनो । धुंधुकवध दशसप्त प्रलम्ब अष्टदशहननो ॥ उनविंशो पावक शमनविंश शरद पावस वरन। श्रीकृष्ण० ॥ २ ॥ एकविशो गोपी परेम द्वाविंश हरण चिर । द्विजनारी याचनत्रिविंश चौविंस पूजनगिरि ॥ व्रजरक्षन पच्चीस विंशषड शक व्रज वासी । सप्तविंश अस्तुति सुरेशकीन्ही अविनासी ॥ अष्टविंश दधिदान ज्यों उनतिस रास विलास भन ॥ श्रीकृष्ण० ॥३॥ तीसहि गोपीबिरह एकतिस कथन विरहतिन्ह । बत्तिस भगुपालरासतें तिसमें शशकिन्ह ॥ चौतिसमें वधशंखचूड पैंतिस गोपिन गित ॥ छत्तिस नारद मिलन सैंतिसहिं व्योमाकीगति ॥ अरतिस व्रज अक्रूरकह कीन्होंवरणन आगमन श्रीकृष्ण ॥ ४ ॥ उनतालिस अक्रूरदरश चालिस अस्तुति तेहि । इकतालिस में रजकबधन ब्यालिस भय कंसहि ॥ तेंतालिस बध ब्याल कस चौवालिस मारे । पैंतालिस शंखासंहार कीन्हो असुरारे ॥ छि-

छिस अक्रूर भवन जिमि गवन कन्हाई ॥ हैपुर्वार्द्ध समाप्त अध्या उनचास तमों । जरासधकी हारभई जम पचासतमों ॥ एका-वन मुचकुंद कह जैसेभौ उद्धारतन । श्रीकृष्ण०॥ ६ ॥ बावन में रुकमिनि सदेस तिरपन तेहि हरनो । रुकमिनि मंगल चवन पचपनहि सवर मरनो ॥ छप्पन सतभामा विवाह सतावन जैसे। सतधन्वा को सहार वरने सबतैसे ॥ अठावन जैसे प्रभुहिं पंच विवाह भयो करन०। श्रीकृष्ण ॥ ७ ॥ उनसठ भौमा वधन साठ जिमि रुकमिनि रूषा । एकसठ रुकमनि पात बासठहि सपना ऊषा ॥ तिरसठ ऊषा चरित चौसठहि नृग की मुक्ती । पैंसठ राम गमन बृज में देखन तिन्ह भक्ती ॥ छासठ में पौंड्रीक वध सरसठ मे द्विविदो मरन०। श्रीकृष्ण ॥ ८ ॥ अरसठसाम्ब विवाह उनतरहिं माया दरसन । सत्तर पाडव के संदेस एकतर हरिपहुंचन ॥ जरासंध को वध बहतर तेहतर नृपछोडन । चहुतर वध शिशुपाल पचतरहि मानहि तोडन ॥ मुर्छा छेहतरमें भई जाविधि ते श्रीपरदुमन ।॥ श्री कृष्ण० ६ ॥ सतहत्तर वधसाल्व अठतरहि सतसंघारन। विल्वलहतन उनासिअसी सुदामसिधारन ॥ एका सी में तेहिदरिद्रता दूरकीन्हहरि। व्यासी मे कुरुक्षेत्र गमनतिय ...ै ति तिरासरि ॥ चौरासी वसुदेव मख पंचासी दरसन सुतन । ...कृष्ण०॥ १० ॥ हरन सुभद्राभयो छयासि मेसो कियगायन । ...तासी संवाद देवऋषि अरुनारायन ॥ अष्टासी भस्मा वध और सुर भेदनवासी । नब्वे मे विस्तार वंस श्रीपति अविनासी ॥ ज-गन्नाथ याविधि कियो सूचनिकाको संपुरन । श्रीकृष्णसागर को सूचिपत्र सुनिये सुजानजन ॥ ११ ॥

योधिक
स्त्रीपर्व
राज
मे

इति सूचीपत्र संपूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ कृष्णसागर ॥

सोरठा ॥

बन्दौं प्रथम गणेश जो दिनकर अज्ञानतम ।
जासु कृपा लवलेश विमलबुद्धि नरपावहीं ॥
बन्दौं बहुरिमहेश उमासहित करुणा सदन ।
सुमिरत मिटतकलेश होहुप्रसन्न सोमोहिंपर ॥
पद पंकजतनु श्याम रमारमण पालनजगत ।
क्षीर सिंधु जेहिधाम बसहुसो मेरे उरसदन ॥
श्रीगुरुपद अरविन्द बन्दौंमहिशिर टेकिजो ।
देहिंज्ञानअसिवृन्ददरशिभजतजेहिमोहरिपु ॥
जिनबिनतरैनकोयअतिअपार यहभवजलधि ।
करहुकृपागुरुसोयजेहिबरणौंप्रभुचरितशुचि ॥

चौ० बन्दौं चारों वेद सुहाये । औबिधिजो यह जग उपजाये ॥ प्रणाऊं चित्रगुप्त निज देवा। उधरहि नर क-रे अल्पहिसेवा ॥ कार्तिकयम दुतिया जो अहई। करि पूजा नर अति सुख लहई ॥ करिपूजाजो बिप्र जेंवावै । अन्त समय हरिलोक सिधावै ॥ नृप पापी सौ दासा नामा । पुष्पचढ़ाइ गयो हरिधामा ॥ एक पुष्पते तरेसो राजा । जो पूजहि करिभक्ति सुकाजा ॥ तिन्हकर फल

जग बरणिसकत को । बिनु पूजा सुखलहत जगतको ॥ पाप पुण्यकहं करहि जो लेखा । मोपर करहु सो कृपा विशेषा ॥ क्षमिये सदा मोर अपराधू । महिमा जिनकर अगम अगाधू ॥

सो० बन्दौमुनि समुदाय शुकव्यास पुनि नारदा ।
बालमीक कविराय प्रणवौं शेष औ शारदा ॥
बन्दौं संतसमाज जो सहिदुख तन आपनो ।
करतजगतहित काजसदा नामप्रभु जापनो ॥

दो० बन्दौंपुनिभक्तनचरण जिन्हसमान नहिकोय ।
जिनकेवशप्रभुआपहैं महिमाविदित नगोय ॥

चौ० बन्दौ तुलसीदास गुसाईं । सूरदास पुनि तिन कहं नाईं ॥ बन्दौं सब गुणधाम कबीरा । माधवदास बहुरिमति धीरा ॥ ऐसेहि और सकल जो अहहीं । नाम अग्निजसुअघबनदहहीं ॥ करि प्रणामअसविनयसुनावौं दीढ़भक्ति हरिकेपदपावौं ॥ प्रणऊंबहुरिपिताअरुमाता । औ सब सज्जन जगसुख दाता ॥ जो प्रभु चरित देखि हरषाहीं । औगुण त्यागि गुणहिं मनलाहीं ॥ होइप्रसन्न देहु बरदाना । करौं कथा श्रीकृष्ण बखाना ॥ हरिप्रेरित मोहिं भइ अभिलाषा । कहौं कथा यदुवर की भाषा ॥ परनहिं भक्ति चरण भगवाना । दूजेनहिं कछु संस्कृत जाना ॥ ताते बरणत मन सकुचाई । पंखबिना किमिबिहग उड़ाई ॥ धनिधनि माखनलाल उजागर । जो जग हित गायोसुखसागर ॥ तेहिते दशमकरौंचौपाई । बिपुल ग्रन्थ भाषा बलपाई ॥

सो० हौंसबबिधिमतिमन्द तरणचहौंयहभवजलधि।
गाइ चरित व्रजचन्द क्षमहुढिठाई कविनमम॥

चौ० छन्द विधान एक नहिजाना। मनमानत करु हरिगुण गाना॥ यदपि काव्य गुणहै कछुनाही। तदपि आस असहै मनमांही॥ तुलसीदास बचन जियआनी। भनित मोरि आदरि हैं ज्ञानी॥ सबगुण रहित कुकवि कृतबानी। राम नाम यश अंकित जानी॥ सादर कहहिं सुनहि बुधताही। मधुकर सरिस संतगुणग्राही॥ प्रणऊ कलियुग तारणि सुरसरि। आई जग महं धोवन पदहरि॥ मज्जनपान छुटै अघढेरा। आशिष देहु जानि निजचेरा॥ हरिद्वार अरु गंगासागर। काशी सदा बसहिं जहं शंकर॥ बन्दौं मथुरा गोकुलधामा। जहँजन्मेहरि हलधरस्यामा॥ बन्दौं ब्रह्मघाटजहं नाथा। मृतिकाखाई बालनसाथा॥ वृन्दाबन जहं धेनु चराये। यमुनातटजहं रास मचाये॥ कदंबवृक्ष जापै चढ़िमोहन। टेरेउ गाय सखासब गोहन॥ गिरि गोबर्द्धन जेहिहरिपूजा। जिन्ह समान नहिं कोउसुर दूजा॥ बन्दौ बशीबट सुखदाई। राधाकृष्ण कुण्ड शिरनाई॥ वटभंडीर तालबनमधुबन। जेते बन सब जोव सुहावन॥

दो० बरसाने जहं राधिका जन्म लीन्ह सुखधाम।
नन्दगांव श्रीनन्दको गृहश्यामा अरु श्याम॥

चौ० बन्दौं बहुरि द्वारिकाधामा। बहुरि रहेजहं चख अभिरामा॥ बन्दो पुनि बसुदेवके चरणा। पायेसुत प्रण तारत हरणा॥ अरु देवकी कृष्णकी माता। जिन्हकेडुख

हरि कंसनिपाता ॥ नन्दयशोदा परमसुशीला । जिनहिं दिखाये हरिकरिलीला ॥ दरौं बहुरिरोहिनि पदबन्दन । जो माताश्रीद्विविद निकंदन॥ कृत्योदा वृषभानुज्ञानी । जिनकीसुता राधिकारानी ॥ बन्दौं उग्रसेन जुगपानी । करहुकृपा किंकरअनुमानी ॥ बन्दौं नाइकृष्णपदमाथा। ग्वालबाल अरुसखियन साथा ॥ श्रीदामा सुबाहु अरु मंगल। अर्जुन मद्धुभोज औ मणडल ॥ यहसबसखाकृष्ण संग रहहीं । राधादल सखियन जो अहही ॥

दो० तिनकेपद मैं वन्दऊ सदा पाणि युगजोरि ।
श्रीमतिललिताश्यामलाऔचन्द्रावलिगोरि॥

चौ० प्रणऊं पुनि बलदेव के चरणा । ऊधौसहितपाप कलिहरणा॥ बन्दौ कृष्णनाम यदुराई । जेहिजपितरे खलनबहुताई ॥ सारद गाइनसकहिप्रतापू । कोटिन पाप कटत जेहिजापू॥ मोप्रभु ।जियछुठतअघमोरा । यद्यपि पाप कुण्डमनबोरा ॥ जानौंनहि कुछ भजनप्रभाऊ । बिषयीकाज सदामनभाऊ॥ अबआयउंप्रभु शरणबिचारी । तुमशरणागतके भयहारी ॥ छमहू सकल मोरअपराधा । वरणोचरित सप्रेम अबाधा ॥

दो० तुमप्रभु पावनपातकी मैं तिनकर सरदार ।
अबआयोंतुम्हरेशरणकिमिनहिंहोयउबार॥

चौ० प्रथमभक्त द्विजसेवकज्ञानी। निजकुल गृह दीपकगुणखानी॥ बासिन्देमोकामटेकारी । शहरशहरघाटी पगुधारी॥ देवचन्द लालमोरपरआजा । भयेवकीलन्हमें सिरताजा ॥ बहुरिहजारी बागहिआये । इहां बहुरि सो

कामहिपाये ॥ रामचरणतिन्हके सुतजानो। श्रीगुरुच-
रण प्रेमअधिकानो ॥ धर्म्म शरीर ज्ञाननिधि मानहु।
विष्णुप्रसाद तनय तिन्ह जानहुं ॥ अब हैं सोइ वकील
यह देशा। संततकृपा रखहिं अवधेशा ॥ जिन के चित
रह संतत धर्म्महि। हरिद्विजपदरति सदासुकर्महिं ॥
तिन्हके सुत सब गुणते न्यारा। जगन्नाथ भौ नामहमा-
रा॥ कायथकरन जाति है मेरी। वयसहै वरष अष्ट दश
केरो ॥ हरिहर नाथभयो सुतमोरा। बालचरितजो करत
नथोरा ॥ वर्षदुईकेजानहुजाको। चिरंजीवराखैहरिताको

दो० बाणीपावनकरण को कहौंकृष्ण गुणगाथ।
नामकृष्णसागर रच्यो लीला गोपीनाथ ॥
नभ संध्याग्रह इन्दुमिति संवत को संचार।
करौंकथा उरध्यानधरि राधानन्द कुमार ॥
जाविधिश्रीशुकदेवमुनिनृपपरिक्षितसेगाय।
कहबसोइसबचरितमैंमुनिवरकोशिरनाय॥

अथ सम्बाद

सो० जाविधि भासम्बाद भूपति अरु शुकदेवमुनि।
राधा कृष्णप्रसाद प्रथमसोइ बर्णन करौं ॥

चौ० द्वापर गत जब कलि नियराई। अन्तर्धान भये
यदुराई ॥हिमगिरि तपचरित्यागन प्राना। पांडव गये
दुखितहुवैनाना ॥ राजसकल परिक्षितकहंदयऊ। सोइ
हस्तिनापूर नृप भयऊ ॥ धर्मराज नरपति विस्तारी।
रखतप्रजासबअमितसुखारी ॥ दिवसएकआखेटकहेतू।
गये विपिन सोई नरकेतू ॥ तहं एकगौ एक वृषभ नि-

हारा । मारत जात मनुषएक कारा ॥ कह नृप अबहिं सहारो तोही । मारसि गौवनशठ निर्मोही ॥ असमुनि भा तेहिउर अति त्रासा । तब नृप बोलिलिये दोउपा- सा ॥ कह नृप आपन करहु बखानी । हौ सुरया कोऊ मुनि ज्ञानी ॥ सकन सताव कोउ ममआगे । कहनलगे तब दोउ भयत्यागे ॥ कहतवृषभ हम धर्मगुसांई । चारि चरण राखहुं सुखदाई ॥ तप सतदया शौच यह चारी । सतयुगमेरहविंश सुखारी ॥ त्रेताषोड़श द्वापर द्वादश । कलिमेंचारि देखतहौंतुमसज ॥ कहगौहैं पृथ्वीहमराई । यहि कलिकेडर जात पराई ॥ हतन चहा कलिको नृप जबही । विनय करनलागा सो तबहीं ॥ अब आयोमैं शरण गुसाईं । देहु बताय रहनकी ठाईं ॥

दो० कहनृपमिथ्याद्यूतमद हाटकहत्याचोरि ।
वेश्याकेगृहरहहुतुम असकहिभूपबहोरि ॥
धर्मकोराख्योहृदयमहं महीमिलीनिजरूप ।
इत कलिअपनेधामगो उत गृहगवने भूप ॥

चौ० राज करनलागे नरनाहू । पुनि अहेर लगिगे दिनकाहू ॥ तृषितभये तहंमिलान पानी । आयेआश्रम यकमुनिज्ञानी ॥ भिगडीऋषीनाम मुनिकेरा । रहे ध्यान मे सोमतिढेरा ॥ कलिकेबश अस नृपति बिचारी । गर्ब भयो मुनिकहं बड़भारी ॥ यहिनेनहिं देखा ममओरा । दगडदेन चाहियकछुघोरा ॥ परोहतोएकमृतकभुजंगा । डारिदियो सोईमुनिके अंगा ॥ टूटोनहिं तद्यपिमुनिध्य । ना । ऐसेहते चितत भगवाना ॥

दो० ऋषिगणकेबालकबहुत खेलतगयेसमीप।
तिनमहंजाकेकह्योएक मुनिबालकसेक्षीप॥

चौ० मुनिके सुत शृंगीऋषि नामा। कौशिक तीर खेलनगेधामा॥ पितुकीदशा सुनत जब भयऊ। तुरत नीर चुल्लुकमें लयऊ॥ दीन्होशाप भूपकहंभारा॥ यही सर्पहोयकालतिहारा॥ सप्तमदिन तोहिं काटत नीचू। यातेहोत अवश्यक मीचू॥ देईशाप गयोपितुपाही। कह्योसकलहर्षित मनमाही॥ सुनि मुनिकहा उचितनहिं कीन्हा। वृथाशाप राजाकहं दीन्हा॥ यह राजा अतिशय हितकारी रहैंराज सबप्रजा सुखारी॥ सेवक ऋषि द्विज संतनकेरा। दीन्होताही शाप घनेरा॥

दो० होतजगतउपहासमम तदपिउचितयहबानि।
चाहियकहनसोभूपको करपरलोकसोचानि॥

चौ० शिष्य एक तहंमुनीपठावा। सो राजाकोहाल जनावा॥ उरगडारि नृपजब गृहआयो। मुकुटउतारत ज्ञानहिं पायो॥ कंचनमहं कलियुगकर बासू। रहामुकुटमम सोइ हुलासू॥ ताते डारेउ व्यालहि ग्रीवा। केहि विधि उबरब अघकी सीवा॥ मुनिसुत शाप भयो हितमोरा। अस कहि गयो रानिकी ओरा॥ अब मैं बन सबराजस त्यागी। मुक्तियतनकरूंहोइ बिरागी॥ रानी गण जब बरजन करेऊ। उचितजानि संतोषहिं धरेऊ॥

दो० नृपबनगयोबिरागह्वै पुत्रकोदीन्होराज।
व्यासपराशरआदिसब आयेऋषिनसमाज॥

चौ० जब शुकमुनि आये जहंराजा। उठेदेखि सब

मुनिन समाजा ॥ कह नृप ठाढ़ भयो किमि देखी । ते कहहैं इन्हेबुद्धि विशेषी ॥ आयुबढ़े नहिं कछु मनुसाईं । ज्ञानबढ़े सोइ अहै बड़ाई ॥ ताते ठाढ़भयो इन्ह देखी । सुनि हर्षित भये भूप विशेषी ॥ कह नरेश सुनु व्यास कुमारा । कैसे होतउबार हमारा ॥ अघहैं घोर समयहै थोरा । कहमुनि सुनहु वचन अबमोरा ॥ सप्त दिवसहैं तुमहिं नरेशा । मुक्ति होत क्षणमहँ बिनुक्लेशा ॥ भयो मुक्त खट्वांग नृपाला । एक मुहूर्त्तमहँसुनहु भुवाला ॥ कहू भागवतसुनु चितलाई । यातेमुक्तिलहहु सुखदाई ॥

दो० जिमिधर्मनमेवैष्णव पुण्यमध्यजिमिदान ।
तिमिपुराणमेभागवत भवसागरजलजान ॥

चौ० तबनृपलगे सुनन चित लाई । कहनलगेमुनि कथा सुहाई ॥ पंचदिवस बीते भूपतिको । सुनत भागवत दायक गतिको ॥ नवमस्कन्ध कथा मुनिगाई । तब बोले राजाशिर नाई ॥ कहिय कथा प्रभु कृष्ण अवतारा । जो हरिहैं कुलपूज्य हमारा ॥ अश्वत्थामा अस्त्रचलायो । मोहि माताको मारन धायो ॥ तहँ प्रभुकीन्हो मोरि सहाई । गर्भमाह मोहि लिये बचाई ॥ कह मुनि सुनु राजा हितकारी । भक्ति देखि तव भयउ सुखारी ॥ पंचदिवस अनजलनहिं कीन्हा । अधिक परिश्रम निज तन लीन्हा ॥ अनजल करहु कथा तबगाऊं । लीलाकृष्णकी सकल सुनाऊं ॥

दो० कहनृपअमियकथाप्रभु कियउश्रवणतेपान ।
गईक्षुधामनकीसकल कहहुकथाभगवान ॥

अथ कथाप्रारम्भः ॥

चौ० तबशुककरि श्रीकृष्णहि ध्याना। लगे करन प्रभुचरित बखाना॥ यदुबशीभजमानाराजा। तेहिकुल शूरसेन शुभ गाजा॥ यहराजा भा अतिबलवाना। नवो खण्ड जीत्यो नृपनाना॥ पूरिरही जगमें तेहि करणी। ताकरि नारि मरिष्या बरणी॥ पंचसुता अरु दश सुत जयऊ। बड़सब से बसुदेव जु भयऊ॥ रोहिणि भइ बसुदेव कि नारी। पटरानी तहँ द्वादश चारी॥ देवकि पुनि देवक की कन्या। अति सुन्दरि सो त्रिभुवन धन्या॥ स्यहु ते व्याह भयोबसुदेवा। कंसदुखी हरषेसबदेवा॥ नभवाणीतहँभईनृपाला। तेहिते उपजतकसकोकाला॥ अष्टमगर्भमेदेवकि नारी। तातेभयो दुखित सो भारी॥

छं० तातेभयोसो दुखितभारी हृदयमहं अतिशयडरा।
करिबंदिशालाबन्द दम्पतिअधिकउरआनंदभरा॥
तहंपारब्रह्मअनादिसबघटबासि श्रीभगवान ने।
अवतार लीन्ह्योकृष्णनामसे कौनकविशोभाभने॥

सो० तबबोलतभय राय कैसे जायो कंस नृप।
कैसेगये कन्हाय मथुरा ते गोकुलनगर॥
सुनिबोले शुकदेव सुनराजा गुणज्ञाननिधि।
कहबकथा मैं सोउ जन्मकंस औ हरिगमन॥

चौ० यदुवशी आहुकनृपनामा। रह्योभूप मथुरासुख धामा॥ भे सुत उग्रसेन औ देवक। बड़उग्रसेन साधु

द्विजसेवक ॥ कालभयो आहुक को जबहीं । उग्रसेन भे राजा तबहीं ॥ नाम पवनरेखा इनकी तिय । धर्मशील आयसुकारी पिय ॥ इकदिनह्वै पवित्र सो नारी । मज्जन करि रजस्वला बिचारी ॥ पतिआयसुलै करन विहारी । चढिरथ बनसग सखिन सिधारी ॥ चहुं दिशि सुमनरहे तहं फूली । विविधप्रकार बोल खगबोली ॥ मन्द सुगंध टढ बह ब्यारी । अरु यमुनाकी लहरैं न्यारी ॥

दो० देखिसुहावन बनसघन छांड़िकैसंगसहेलि ।
अतिगह्वर बनमें गई रानी तहां अकेलि ॥
रजनीचर इकतहँमिला नामदुर्मलिकताहि ।
देखि रानिको रूप सो मोहित भा मनमांहि ॥

चौ० उग्रसेनको वेप सु धरेऊ । संगकरनकी इच्छा करेऊ ॥ बहुबिधिसमुझायो तेहिरानी । मानानहिं निशि-चर दुखदानी ॥ जोनरकरहिं दिवसमहंसंगा । धर्मशील ते नशहि अभंगा ॥ कामबिवश निशिचर नहिं मानी । निजपति जानिभजो तेहिरानी ॥ भोगउप्रान्त धर्यसि निजवेषा । देखिरानि भइलजित विशेषा ॥ धिक् तव मातुपिता गुरुकोरे । जो उपजायो बुधिंदियतोरे ॥ पति-व्रत धर्म बिगारहि जोई । जन्मअनेक नरकलह सोई ॥ सुनिबोला निशिचर अभिमानी । दे जनिमोहिं शाप तू रानी ॥ कोखिबन्द देखेउं मैं तोरी । मन महं शोच भयो अति गोरी ॥ जन्मिहिसुत इक अतिबलवाना । नवोखंड जीतिहि नृपनाना ॥ लैअवतार लड़हिं प्रभुतासे । पूरण-ब्रह्म कृष्ण सुखरासे ॥ पूर्वजन्ममोहिं बध हनुमाना ।

कालनेमि निशिचर जगजाना ॥ अब यहि जन्म दियेउं सुततोरा। असकहि गयो असुर गृहओरा ॥

दो० असहरिइच्छाजानिकै इत रानी धर्मसेतु।
गई सहेलिनके निकट पूछातिनसबहेतु ॥

चौ० देखिसहेलिन भंगशृंगारा। पूछनलगीं चकित यकबारा ॥ कहरानी तोहिं संगहि त्यागी। गईघनेबन परमअभागी ॥ मिलाएकबानर मगमाही। सोइसतायो मोहिं शकनाहीं ॥ सुनि चेरिनउरभय अति भयऊ। रथ चढ़ाय मन्दिर लैगयऊ ॥ दशम मास बीते जब रानी। जायोपुत्र महाबलखानी ॥ जेहिअवसर सोजन्मनलागे। तारनमहीखसे नभत्यागे ॥ महिकंपन आंधीबहुचलेऊ। अंधकार दिन निशिसम भयऊ ॥ शुक्लत्रयोदशि माघहि मासा। जन्म वृहस्पतिवार प्रकाशा ॥

छं० भोजन्मतब पज्योतिषिनकोकह्योकरनबिचारहीं।
तिनकह्यो शोचिविचारिनृपसे कंस नामपुकारही ॥
यहहोत अतिबलवन्त सकलसमाज भूपन जीतके।
लेइराज सकलतिहार होवतनिशिचरनसबमीतके ॥
हरिभक्त संतसमाज द्विजके होतदुखदायक सदा।
तब पारब्रह्म कृपालु लै अवतार देहैं द्विजमुदा ॥
यहिमारि सबगुणधामप्रभुजी भारमहिके टारिहैं।
निजभक्तगण सबसुखीकरिहैं निशिचरन संहारिहैं ॥

सो० सुनिनृप उरभाशोग दै दै द्रव्य बिदाकिये।
सभी ज्योतिषिनलोग अरुविप्रन सन्मानिकै ॥

चौ० कंसहिं लगेकरन प्रतिपाला। उग्रसेननृप दीन

दयाला ॥ भयोकंस षटवर्षहिकेरो । लग्योकरन उत्पात घनेरो ॥ मथुराके बालकजो पावै । तिनहि मारि गिरि कंदरनावै ॥ काहु बहानाकरि अस्नाना । लाइहतैयमुना हरषाना ॥ पावे जेहिअपनेते बढ़िकै । ताहिबधै छातीपर चढ़िकै ॥ कीन्हेसि सकल प्रजान दुखारी । कहनलगे ते सकल विचारी ॥ यहनहिं वीर्य्य नृपतिधर्म्मोको । लिये असुरकोइ जन्म कहीको ॥

दो० परजाके दुख देखिकै समुझायो नृप ताहि ।
तदपिनसमुझाअसुरकछुरहीकुमतिमनमांहि॥

चौ० अष्टवर्षकोभयोसुजबही॥लड्योमगधकेनृपसेतबही ॥ मगधभूप जानामनमाहीं । मोंते अधिकबली ये आहीं ॥ निज द्वै सुता बिवाही ताको । करिबिवाह आयो मथुराको ॥ लगा कहननिजपितुहिं सुनाई । राम नाम तुम लेहु न भाई ॥ कहनृप ममकर्त्ता है सोई । बिनाजपे कैसे हितहोई॥तब तेइ भाषा जपन उमेशू । तजेउ न रामहिं नाम नरेशू ॥ राज्यपिता को तबलै लीन्हो । राव प्रजन को आयसुदीन्हो ॥ करो न कोइजप तपमखदाना ।लेहु न राम नाम नहिध्याना ॥

दो० ममआयसुजोटारिहै तुरतहिबधिहौं ताहि ।
कंसकेआयसुभयउ जब काहेनधर्मपराहि ॥
कहुंनहोतशुभकर्म्मतहँ जीतेउनृपसबठोर ।
कटकलेइ तबसोचहा चलन इंद्रकी ओर ॥

चौ० जीतन इन्द्र चला सो जबहीं । मंत्री एक बुझायो तबहीं ॥ वृद्धरहा उग्रसेन समयके । तजो आश

तुमइन्द्रविजयके ॥ शतअश्वमेधयज्ञजिनुकीन्हे ।
कोउ सकहि न लीन्हे ॥ बलअभिमान तुमहिंबड़
गर्बकरत सबहीको ख्वारी ॥ कुंभकर्ण रावणबलवा
नाशकियेतिनहूं अभिमाना ॥ मंत्रीकेहित बचनसुनतही ।
तज्यसि कुसङ्गा और कुमतिही ॥ हरिके भक्तदु:ख अति
पावैं । सो असुरन सँग राजचलावे ॥ सुनन्टप कंस के
राजहिंभारी । भयेसंत ऋषिजबहिं दुखारी ॥

दो० यज्ञकरननहिं पावकोउ नहीभजनभगवान ।
अतिव्याकुल धरणीभई गई इन्द्रके थान ॥

चौ० कंस कुमति बहुबिधि सो बरणी । गौ स्वरूप
धारण करि धरणी ॥ शक्रगये पुनि ब्रह्मा पासा । विधि
तिन्ह सहितगये कैलासा ॥ जानिहृदय शिव असुर सँ-
हरिहैं । कंसमारिमहिभारउतरिहैं ॥ कह शिव नहिंहम
विधि यहि योगू । टारिसकहिं जो महिकर शोगू । तब
देवनमिलिगये तहांपर । क्षीरसिंधुमें श्रीपति जहँपर ॥
लगेकरनअस्तुतिजुरिपानी॥करहुकृपामहिकेदुखजानी॥

छं० जय जय हरि मीनस्वरूप धरम् । जय जयहरि
कच्छप रूप वरम् ॥ जय जय हरि ब्राहपतित पावन ।
जय जय सुख धामा श्री वामन ॥ जय जय प्रभुरामा
रामहरे । निज भक्तन हेतु स्वरूप धरे ॥ जब जबपावे
महि दुख भारो । तब तब करु असुरन सहारी ॥

दो० देख्योव्याकुल देवसब अरुमहिके दुखजानि ।
संहारहुनिशिचरसकल कंसअसुर दुखदानि ॥
तब अकाशवाणीभई सबहि कलेश विचार ।

सब असुरनको मारिहौं लेइ मनुज अवतार ॥

सो० जन्म मरण नहि देव तदपिलेउं अवतारजग।
दीन्हेउं बर वसुदेव देखिकै तप तियकेसहित ॥
अपर दियेउ बरनन्द देखिकैतप नारीसहित।
जन्मौं तहां अनन्द उन्हें दिखावौं बालसुख ॥

चौ० मारौंकंस अधर्मी राजा। और सकल निशिचरन समाजा। देवी और देव गण जेते। यदुकुल जन्म लेहु सबतेते ॥ चरित देखि मम ब्रज सुखलेहू। धरहु सकल गोपनकीदेहू ॥ चारिरूपधरि पुनिमैं आऊं। सुनिहर्षित गे सुर निजठाऊं ॥ गई बहोरि मही निज थाना। तीय सहित किन्नरसुरनाना ॥ जन्मलीन्ह ब्रजमण्डलआये। यदुबंशी अरु गोपकहाये॥ वेदऋचाविधि आयसुपाई। गोपी तनुप्रकटी ब्रजआई ॥ सुनु नृप कहुं अबब्याह देवकी। जो माता श्रीकृष्णदेव की ॥

दो० उग्रसेन के अनुज सुनु देवक जाके नाम।
चारि पुत्र ताकेभये छः कन्या छबिधाम ॥

चौ० दीन्ह बिबाह सो छवों सुताको।श्रीवसुदेवभक्ति सीमाको ॥ सप्तम कन्या भई देवकी। हर्षदानि जनु सकल देव की ॥ कंसादिक दशसुत बलवाना। उग्रसेन के भे जगजाना ॥ देवकि ब्याह योग जब भयऊ। ब्याह तिलक वसुदेवहिं गयऊ॥ तब वसुदेवके पितु शुरसेना पहुंचे लै बरात मुददेना। कंस सहित निजपितु सुखकन्दा। लायो निजदल सहित अनन्दा॥ करिपरतिष्ठा अधिकदेव की। ब्याहिदई निज बहिन देवकी ॥ कौन

कहैं कवि शोभा व्याहा । जाहि उदर जन्मे जगनाहा ॥
छं० जन्मे उदरतेनाथ जेहि तेहि व्याहशोभाकोभनै ।
देइभूप श्रीवसुदेवको शतअष्ट दशरथसुदमनै ॥
अरुचारिसहसगयन्द गौदशपचसहसतुरंगको ।
शतयुग्मदासीदास भूषण दीन्हसबबहुरंगको ॥
सो० बिदाकिये सुखमानि शूरसेन वसुदेव को ।
ज्ञातीगण सन्मानि देइद्रव्य अरु बस्त्र बहु ॥
आपुहिंबनिरथवान पहुंचावनदेवकिचल्यो ।
कंसासुरबलवान अतिअभिमाननिधानपुनि ।
चौ० कंसवहांसेरथहिहँकावा । मथुराते कछुदुर जब आवा ॥ नभबाणी भूपतिभइ तहँवा । कंसरहा हांकतरथ जहँवां जेहि तू पहुंचावसि महिपाला । तेहि अष्टमसुत है तदकाला ॥ भयाकंस सुनिपरमदुखारी । मारनधावा बहिन सुरारी ॥ देखि सबहिभेहृदय दुखारी । बोलि न सकहिं कंस भयभारी ॥ तब वसुदेव लगे समुझावन । नारिबधे अतिपाप भयावन । सकहि न रोकि मृत्युकहँ केहू । काहनारिबधि अपयशलेहू ॥ बलनहि प्रकटनारि के मारे । कंसभयो सुनि परम दुखारे ॥
दो० कंस कह्यो वसुदेव सुनु करिहौंव्याहतिहारि ।
याविधि दूसरनारिसे जनिमनहोहु दुखारि ॥
चौ० पुनि विप्रन तेहिअतिसमुझावा । तदपिनकछु ताके मनआवा ॥ कह वसुदेव पुत्रजेहोइहैं । सोसबलाइ तुमहिं दिखलइ है ॥ कंससुनी वसुदेवकिबानी । आवा फिरि तब गृह अभिमानी ॥ गत दिन कछुक पुत्र जब

भयऊतब वसुदेव निकटलैगयऊ ॥ कंसभयो आनन्दित देखो। निजहितलगि तिनकेपनपेखी ॥ फेरिदियोवसुदेव कोबालक। कंसासुर रजनीचर पालक ॥ आइकह नारद मुनितबहीं । कंस पुत्र तिन फेर्यो जबही ॥ निजअरिको काहे तुम फेरो । तनक विचार हृदय नहिहेरो ॥

दो० अष्टचिह्न खिंचवाइकै गीनन भाष्योसोइ ।
आदि अन्त या मध्यसे गिनातोआठैहोय ॥
याविधिआठों पुत्रमेंकरिनसकहुपहिचानि ।
कौन तुम्हारो शत्रुहै केहिते होवत हानि ॥

चौ० नारदमुनि असकहिगे तबही । मथुरा गोकुलके नर सबहीं ॥ देव सकल लीन्हो अवतारा । इन्ह महं है कोउशत्रु तुम्हारा ॥ असमुनि कंस तमीचरघोरा। सकल बधनपठयो तिन्हओरा॥ दइ सिखावन तिनहिं किजावो। मथुरा गोकुल महं जेपावो ॥ तिनहिं संहारहु बाल समेता । जाइ सकललग करनअनेता ॥ बोलि तबहिंवसुदेव सुरारी। हतिदीन्हा बालक मुदभारी ॥

दो० दम्पतिकोदिय कैद करि बन्दीशालामांह ।
बड़ो निर्दयीकंस नृप असुरनको जो नाह ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथकृते बालबधो नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० छौ बालकवसुदेवके याविधिहत्यो सुरारि ।
अरुतहंअसुरनकरनलग सकलउपद्रवभारि ॥

चौ० प्रजा दुखित भय देखत काला । भाजे सकल

देखो तसबीर नम्बर १ ॥

देशपंचाला ॥ तब वसुदेव रोहिणी नारी। भेजी गोकुल माहँ सुखारी ॥नन्दमित्र इनकेहितकारी। निजगृहरखी मित्रकीनारी ॥ कहपरिक्षित सुनु मुनिवरज्ञानी। नारद मुनि ह्वै ज्ञानकेखानी ॥ देवकिसुत काहेवधवाये। कहु शुकदेव सुनहु मनलाये ॥ पूर्वजन्मकेसुकृतनथी हैं। देखि पाप अति हरिजग ऐ हैं ॥ तुरतहिं कंसअसुरको मारै। सुरमुनि संतनको दुखटारैं ॥ यहिलगिनारदमुनि अस ठयऊ। आगे कथासुनहु जसभयऊ ॥

दो॰ षटसुत जब वसुदेवके हत्यो कंसदुखदान।
तबदम्पतलागेकरन विनयसुनहुभगवान॥

चौ॰ षटसुत मोर संहारेउ कंसा। करन चहतहै अब निर्वंशा ॥ सुनिअस हरि निजहृदय विचारा। अबचाहिय लेनो अवतारा ॥ श्रीबलदेव होय अब लक्ष्मन। भरत प्रद्युम्न अनिरुद्ध शत्रुहन ॥ सीता होइ रुक्मिणी नारी। बासुदेवह्वै हम तनधारी ॥ असविचारि देवकि अवधानहि। अस्थिरकिय बलदेवसुजानहि ॥ तबमाया ते कहेउ विचारी। कर्षि गर्भ तुम देवकिनारी ॥ धरहु रोहिणी गर्भमे ताही। तुम जन्महु गोकुल यशुदाही ॥ हमहूं देवकीगृह अवतरि हैं। गोकुल जाइ सबहिंसुख करिहैं ॥

दो॰ दुर्गा देवी नाम तव होइ बिदित संसार।
पूरिहिंमनोरथसकलनर पूजाकरततिहार॥
नैत्रजनित हरिमाया कर्षिगर्भ सोनारि।
राखिउदरमें रोहिणी सोउनजानै पारि ॥

चौ० देवकिको पुनि स्वप्नोदीन्हों। गर्भतिहार कर्षि हम लीन्हो॥ रखवारन सबकंस सुनावा। गर्भगिरन सुनि अति सुख पावा॥ अष्टम गर्भके हाल सुननको। भेज्यो सबरखवारगननको॥ श्रावण चतुर्दशीबुधबारा। भयोजन्म रोहिणीकुमारा॥ राजनश्रावणशुक्ल मंजबही। जन्मे श्रीबलदेवजि तबहीं॥ मायारही गर्भ यशुदाके। देवकि उदररहे हरिआके॥ रहेगर्भमें यदुपतिजबहीं। देवकिबदन दिव्यभा तबहीं॥ प्रथमएकदिन बनहिं क्रैद ते। गई देवकी यमुन भवनते॥

दो० रह्योदिवससो वर्त्तको गईकरन अस्नान।
नँदरानी आवतभई तेहिक्षणसोइअस्थान॥

चौ० जाविधिहती कंसकी करणी। सकल देवकी बहु विधि बरणी॥ कह यशुमतिसुनु सखिवच मेरो। निज सुतदै पालबसुततेरो॥ असकहिसो निजभवनसिधारी। इतफिरिआई देवकिनारी॥ अष्टमगर्भ करनबिध्वंसा। दियेपठाइ पाहरूकंसा॥ करपगमहं बेरीदैडाला। दिये द्वार तालापैताला॥आइगे हरिहि गर्भउपवासा।छायउ अस उरमे हरित्रासा॥ जहां जहां सो असुर निहारत। कालस्वरूप लखत हरआरत॥ खात पियत सोवत अरु जागत। चलत फिरत कहुँचैन न लागत॥ पूरणदिवस गर्भ जबआयो। तबहि शोच अतिशय उरछायो॥ दीन्हों हरि तेहिअवसरसपना। काहुन चिन्ताकैकु मनअपना॥ सपदि हरबदुख लैअवतारी। जागिउठ दोनों मुदभारी॥ कहत देवकी हृदय विचारी। चहिय धर्मतजि सुत रख-

वारो ॥ कह वसुदेव कैद में अहऊं। वचन उपाय कौन-
विधि कहऊं ॥

दो० देवकि को दुख देखिकै ब्रह्मा औ शिवआय।
गर्भस्तुतिलागेकरन विनय सुनाय सुनाय ॥
सपदिलेहु अवतारप्रभु हरौधरणिकोभार।
कोउनहीदेखेउतिन्हैं निजनिजलोकपधार ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णराम
जगन्नाथकृतेगर्भस्तुति वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० राजन हरिको जन्मदिन जब आयो सुखमूल।
विविध वरण बोलत खगन फूलरंग बहुफूल ॥

चौ० सबके मनमहँ भयउहुलासा। नामहु रहेउ न
दुखकरवासा ॥ सरि सर माहँ नीरभरि आये। विप्रन
यज्ञ करत हरपाये ॥ देवन्ह दुन्दुभिलगे बजावन। ग-
धर्वन लागे यशगावन ॥ भादों वदी निशाअँधियारी।
दिनबुध रोहिणिनखतविचारी ॥मध्यनिशा तिथिअष्टमि
पावन। ऐसेसमय भये मनभावन ॥ राखि चतुर्भुजरूप
सुहानी। शंख चक्र गद अम्बुजपानी ॥ मोर मुकुट कु-
ण्डल अति सोहर। जलज नयन शशिबदन तापहर ॥
हेमवरण पीताम्वरकाछे। उरमाला शोभित तनआछे॥
देखिरूप तिन्हकहँ भा ज्ञाना। हरि अवतार गये पहि-
चाना ॥ करिअस्तुति देवकि वसुदेवा। तुमप्रभु सकल
देवके देवा ॥ जबहिंभक्तपावत दुखभारी। धरिइकरूप
लेहु अवतारी ॥ शेपतकहि महिमा नहिंगाई। सो हम
से कैसे कहि जाई ॥

दो॰ बोलेहरि मोहि जाहुलै सपदिहिं गोकुलग्राम।
यशुदा की लै बालिका आवहु अपने धाम॥

चौ॰ माता कहेउ तात यह रूपा। अन्तर्द्धानकरहु सुरभूपा॥ तब हरि बालरूप किय धारन। लगे करन रोदन दुखदारन॥ किय संकल्प सहसदश गाई। लिये पुत्रकहँ उरहि लगाई॥ कहत देवकी अब पतिजावहु। गोकुलते बालकधरिआवहु॥ वहांरोहिणीनारितिहारी। अपर यशोदा सखीहमारी॥ कहबसुदेव जाउँ मैं केहि बिधि। घिरे तमीचर पाहरु यहिविधि॥ ऐसे बचन करतउच्चारा॥ आपुहि आपुगयेखुलिद्वारा॥ टूटि गईं कर पग की बेरी। भे अचेत रखवार निंदेरी॥ अस महिमा देखतसुरदेवा॥ राखा सूपमाहिंवसुदेवा॥

छं॰ धरिसूपमें श्रीकृष्ण को वसुदेव गोकुललै चले।
भादेवकीउरशोचजनिकोउ पंथमेंनिशिचरमिले॥
पहुँचेजबहिं यमुना निकटभाशोचतबदारुणसही।
है सिंह पीछे गुंजरत आगे नदी यमुना बही॥
हरिसुमिरिपैठतभेयमुनजलपदछुवनउमड़तभयो।
लै माथते सो सूप को कछु ऊर्ध्व ते ऊंचे कियो॥
आयो जवे नासानिकट तब त्रासअतिउरमेंछये।
हरिदेखिभयओयमुनरुचिलखिचरणकोनीचेकिये।

दो॰ चरण छुआये नीरते। करत भये हुंकार।
छुवतथाहयमुनाभई। बसुदेवउतरेपार॥

सो॰ पहुंचे नंद के धाम। खुले द्वारदेखा तहां।
चलेसुवाघनश्याम। संगमहरिलैबालिका॥

चौ० जानत रही न यशुमति हाला । पुत्री जनम भयो केहि काला ॥ कारण माया मोहनि डाली । रहे अचेत सब नींद बेहाली ॥ कन्या लै वसुदेव जब आये । तब देवकि मनमें हरषाये ॥ बालक दिया कंसके हाथा । अब भल कीन्हों है यदुनाथा ॥ समाचार वसुदेव सुनाये । जा विधि कन्या को लै आये ॥ नन्द गेह के दर खुलि पाये । पुत्री लै हरि दिये सोवाये ॥

दो० पुनि किवाड़ ता विधि लग्यो कर पद गये बँधाय ।
रोवन लागी सो बालिका पहरू कंस सुनाय ॥

इति श्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ
कृते श्रीकृष्ण जन्म कहनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० कंस सुना हरि जन्म भा धावा चलो साथ ।
पत्री लै बोलत भयो रिपु आयो अब हाथ ॥

चौ० कहत देवकी सुनहु रे भाई । षट बालक मम दीन्ह नसाई ॥ छांड़हु एक सुता यह मेरी । यही अन्त को सुखद घनेरी ॥ याहि देखि मन अति सुख पाऊं । तिन्ह सब मम शोक बिसराऊं ॥ माना नहिं कछु निश्चर नाहा । लै कन्या महि पटकन चाहा ॥ धरि पद पटकन चहेउ सो जबहीं । छूटि प्रकट देवी भइ तबहीं ॥ अष्टभुजी सुन्दर महरानी । बोली सुनहु कंस अभिमानी ॥
जनमि चुका ब्रजयदु तिहारा । कंस भयो सुनि परम दुखारा ॥

दो० जाइ देवकी निकट तब बोला विनय सुनाइ ।
क्षमा कीन्हु अपराध मम मनके दुख बिसराइ ॥

बंदिछोड़िघरलाइकै बहुविधिअशनकराय।
बिदाकियोतिन्हकंसनृप तेनिजगृहमेंआय॥

चौ० अन्न द्रव्य गो कीन्हो दाना। बहु विधि बिप्रन किय सन्माना॥ इहांदेवरिपु घरमें आई। कहेउ निश्चरन को बुलवाई॥ देवन सब छलहमते कीन्हों। चहिय युद्धकरि तिन्ह दुखदीन्हों॥ मत्री कहत सुनहु गोसाँई। तुमतेसुरकिरसकु न लड़ाई॥ नारायणरह सिंधुमेंसोये। ब्रह्मा ध्यान सदा मन खोये॥ शिव न सकत तजि संग भवानी। मोरे मत तुम सुनु सुखदानी॥ मारहु सबमुनि अरु बालकको। तिन महँ मारहु निज घालकको॥

दो० बालबधनसबनिश्चरन तुरतहिकंसपठाय।
याविधिपातककरतहीगयसबसुकृतनशाय॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेकंसउपद्रववर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

दो० बासुदेवको तात जब यशुदासंग सुलाय।
आयेमथुरा नगरमे। जागत देखी माय॥

चौ० हरषित नन्दहिंहाल जनाये। पुत्रहोन सुनि सो तहं आये॥ देखि कृष्णके रूप सुहावन। नन्द यशोदा भये मुदितमन॥ नान्दीमुख सराध तब कीन्हा। निगममाहि जिमिआयसु दीन्हा। श्यामसुन्दर के तेज नृपाला। भयो प्रकाशित गेहगुवाला॥ गोपी ग्वालसुना जब हाला। किये मंगलाचार निहाला। सकल परस्पर बोलहिबानी। बनमें जाहु न कोउ सयानी॥ नन्दरायके बालक जाये। आइ सकल मिलि देहु बधाये॥

सो० प्रातहोतजबनन्दबोलिज्योतिषिनद्विजनवर।
पूछा हृदयअनन्द पुत्रजनमसाइतिलगन ॥
तेकह सुन नंदराय दूसर हरिहैं बालतव ।
गोपीनाथ कहाय टरिहैं महिकं भार ये ॥

चौ० नन्द वचन सुनि अति सुखपाये । द्विलक्ष गैयां दान कराये ॥ चांदी अरु सोननकी घाड़ा । दुग्धदहीदे भरि भरिभाड़ा । नर्तकयाचक आदिकजेते । विदाकीन्ह दे दे धन तेते ॥ गोप गोपि सब देन बधाये । भूषण विविधि पहिरि तहँ आये ॥चोली लहंगा को सुमरगा । सारी सोहर शोभितअंगा॥ कचनथार मणिनका बाती। आरति करनलगे हरपाती ॥ कहहिं यशोमति पद शिर नाई । दिखादेहुमोहि कुंवरकन्हाई ॥ मुखउघारि यशु-मति दिखरावहिं। दरशनकरिजन्मक फलपावहिं ॥

छं० पावहिं जनमफल औ निछावररत्नमणिकरहीघना ।
हैधन्यतेरोभाग यशुमति कहहिं सबहरषितमना॥
तेकीनदधिकांदोमुदित मन गोकुलादधिबहिचला ।
सबदेवमुदितविमान बैठे सुमनवर्षहिं खिलखिला ॥

सो० भाग सराहहिं देव धनिगोकुलके वासिनर ।
दरशकरहिं सबकेव जोन आव अजध्यानमें ॥

चौ० ताहिसमय योगीकेरूपा । आयेघरि महेशसुर भूपा ॥ भिक्षाले निकसी नंदरानी । नहिंवछुकामभीख जो आनी ॥ कृष्णहिं दरश देखावहु आनी । दरशपाइ फिरिगये निदानी ॥ राजन षष्ठीदिन जब आवा । नन्द मुदित प्रोहितहि बलावा ॥ भलेवस्त्र तब दम्पतिपीन्हे ।

पीतवसन कृष्णहि तनदीन्हे ॥ केसर ते अजीर लिपवाये। मोतिन ते चौका पुरवाये ॥ राखिकृष्णको गोदयशोदा। लागी पूजनकरनप्रमोदा ॥ तब वृषभानु आदिगोकेतू। आयेवस्त्र लेन हरिहेतू ॥

दो० सबगोपी औ गोपके बहु विधिदिय सुखनन्द।
विदा किये सन्मानि के ते गृह गये अनन्द ॥

चौ० बनवाये तब पुनि यकपालन । मातु झुलावत कहिकहि लालन ॥ पोढ़ेकृष्ण पालनेमाहीं। दरशपाय गोपिन हरषाहीं ॥ जबते जन्म भयो हरिकेरा। छायो गोकुलमेंसुखढेरा ॥ नन्दसुनी जब कंसकीबाता। पठबा निश्चर बाल निपाता ॥ भेंटलेइ मथुरामें आये। दुग्ध दही भांड़नभरि लाये ॥ ग्वाल बाल गवने संग ताको। भेटदेइ बहुरे यमुनाको॥ भेटे तब बसुदेवहु आके। कहन लगे तिन्ह नन्दसुनाके ॥

दो० तुमसमान मोहिंमित्रनहिं किये भलाइअनेक।
ऋणोद्धार नहि हो सकूं पलटाकरूं जो एक ॥

चौ० कहहु कुशलतुम गोकुलगांऊ। यशुदासुतरोहिणि बलदाऊ॥ ग्वालबाल सबगायसमेतो। नन्दकहा हैं भल सबजेतो ॥ एकशोक मोरे मनभारी। षटसुतकंस दियो तोहिंमारी ॥ कह वसुदेव कर्मकी रेखा। टारिन सक कोउ जो विधिलेखा ॥ निश्चरगणबहुकंस पठाये। तुमहूंहो यहिनगर में आये ॥ जाहुसपदिसुधि लेहु वहांकी। जो न करें निश्चर कछु बाकी ॥

सो० विदाभयेनँदराय सखानमोहिंबिसारिहहु।
बोले नन्द सुनाय बहुरि मिलेंगे आइ के॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास नगदास कृतेश्रीकृष्णजन्मोत्सववर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० कंसअमितनिशिचरपठे तदपिरहाप्रभुत्राम।
याते पूतना राक्षसी पठई करन बिनास॥

चौ० तेसब रहे बिपति बहु करते। चली बहुरि पूतना तहँ फिरते॥ लगी बिचार करन मनमाहीं। पुत्र भयो गोकुल यशुदाहीं॥ गोपीरूप तुरत सोइ धरेऊ। कुच महँ विष सिंदुर शिर भरेऊ॥ गईनिशंक नन्दके गेहा। यशुमति बैठारी करिनेहा॥ जानाहै कोउ देवकीनारी। आईहैदेखन बनवारी॥ पलने झूलत रहे मुरारी। नयन मूंदि तेहि देख बिचारी॥ कपटरूप यह निशिचरिआई। भलोभयो जोमम गृह आई॥

दो० जोयहजातीआनगृह करती अधिकउपाध।
अबफलपावत कपटको गोपीहोनकीसाध॥

चौ० लगी कहन सोसुनु नंदरानी। पुत्र होन सुनि अति सुखमानी॥ कंस मोहिं देखन सुत तोरे। अतिहर्षित पठई सुनमोरे॥ यशुदा बालकको दिखराई। पलनेमें मेरोयदुराई॥ जाइसोदुग्धपिलावन लागी। कृष्ण हतनको परम अभागी॥ पीवतप्राण खिंचतप्रभु ताके। लगी कहन यशुमति सोआके॥ यह बालक यमदूत समाना। अस कहि उड़ीसो मगअसमाना॥ छांड़ानहीं तदपि यदुराई। बाहरग्रामगिरीअकुलाई। प्रकटिविकट

तेइरूपनिश्चरी । छवोकोशमाहीजबपरी ॥ अमितविटप टूटे तह राया । गोकुलबासी उर भयछाया ॥

दो० यशुमतिशब्दसुनतगई पलनेनिकट डेराय ।
पायानहिजबलालको गईदिखन तहंधाय ॥

चौ० देखा कृष्ण लाल तेहि छाती । फिरी उठाइ चकितबहुभांती ॥ दुग्धपान तब हरिनहिं करेऊ । यशुदा देखि शोच उरभरेऊ ॥ गोपिनतब गोपुच्छधराई । झारन लगेनन्दसुत आई ॥ तबहरिदुग्धपानलगेकरना ॥ सबका मिटा शोच अटहरना । आतहिं नंद तहां पर गयऊ । पुतामरन जहांपर भयऊ ॥ रहा भाग ममधन्य गुवाला । यातेंजोबचिगयो गोपाला ॥ षटसहस्त्रगोदान कराये । कृष्ण हाथते तब नंदराये ॥

छं० तब नन्द आयसु पाय ग्वालन लासटुबा जायके ॥
करि खडखंड जलाइ दीन्हों उड़सुगंध बसाइके ॥
कह भूपसुनहु मुनीशसोहवै पानकर आमिषसुरा।
केहिकारणअसगधगमकी कहतमुनिहर्षितगिरा॥
तेहिदुग्धपान कन्हाइ कीन्हा चरणतेहिछातीधरे ।
किमिगंधहै न सुगंध ऐसी नाथहाथसे जो मरे ॥
करिबैर पुत्ना प्रभु सँहारन आइ वेष बनाइ के ।
तेहिमुक्तिदीन्हों कृपासगर भजहिजोमनलाइके ॥

सो० तिनहिकथानहिकोय जगन्नाथसक वरणिकर ।
कहहिं सुनहिं नरजोय भक्ति मुक्तिते पावहीं ॥

इति श्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेपूतनाबधानामषष्ठोऽध्यायः॥ ६ ॥

दो० कहन्नृप बालचरित प्रभु औौर कहहु मुनिराय ।
कहमुनि पुता मरणजब सुनाकंस दुखदाय ॥

चौ० लियेबोलि सब सुभट तुरन्ता । यहबालकमोहि मारत अन्ता । बीरालेइ जो मारण योगू । सो अबजाहु मिटावहु सोगू ॥ श्रीधरविप्र एकतहँ रहेऊ । सोइ बधन की कंससेकहेऊ ॥ धरिबुधवेष तहां तेइगयऊ । यशुमति द्विजलखि आसनदयऊ ॥ कह द्विज जन्म नन्दकेलाला । भयो हृदय आनन्द विशाला ॥ देखन आयहं सुतआलि मोदा । देखरावहु मोहिं सपदियशोदा ॥ कहतयशोमति यमुननहाई । आइ देखावब कुंवरकन्हाई ॥ यमुन करन अस्नानसोगइजब । विप्रगयो श्रीकृष्णनिकटतब ॥ देखि श्याम ताकरि चतुराई । जिह्वा लीन्ह मरोरि गहाई ॥

दो० दधि भांडे फोरे बहुत दधि तेहि बदन लगाइ ।
दधिजननीजबदेखऊं दधिलगिआधिकरिपाइ ॥

चौ० सकेउ न बोलि सयनकरिकहई । यहसबचरित कृष्णकेअहई ॥ इनहि सकल भाड़न दधि ढारे । पायदुग्ध मखि पुनि जीभमरोरे ॥ सनुझि वचनबोली हरिजननी । सकल बालकरि अनकरनी ॥ तुरतताहि गृहतेनिप-रायो । लज्जितहोय कंसपहं आयो ॥ निश्चय दृढ़ कंसे मनभयऊ । ममबैरी यह बालक जयऊ ॥ काकासुरकहं तुरत पठावा । कृष्ण हतन सो गोकुल आवा ॥ बहुरि तासु ऐंठीहरिग्रीवा । याविधि बधि यदुपति बलसीवा ॥ दीन्होफेंकि कंसअस्थाना । देखिभया सो शोकनिधाना ॥ सकटासुरकहं बहुरिपठावा । पवनरूपह्वै गोकुलआवा ॥

कृष्णलालकहँदेखाजबही । मनमेंकथनलागुशठतबही ॥ यह बालक पूतना कहँ मारी । ममकर बचत न अबका कारी ॥ सकटरहा तेहिपर चढ़िगयऊ । कृष्णचरण यक मारतभयऊ ॥ निसराप्राण गिरा सो ताहां । कंसस्थान रहा नृपजाहां ॥ सकटा पर तेहिं हता मुरारी । सकटा-सुर भा नामसुरारी ॥

छं० सकटागिरादधि भाण्डफूटा, नदीदधिकीबहिचली ।
सुनिशब्द नन्दरुग्वाल धाये एनियशोदाहूमिली ॥
मनचकित ह्वै सब कहन लागे बज्रपात भयोसही ।
दधिभंड अतिपरचण्ड फूटे बहिगये माखन मही ॥

सो० सप्तविंशदिन वयस में मारेहु हरिसकटको ।
आगे सुनहु नरेश गुणगाथा श्रीकृष्ण की ॥

चौ० पलने निकट ग्वाल के बाला । खेलतरहे सो मुदितविशाला ॥ ते सबकहा सुनहु नंदराये । कृष्णलाल यह सकट गिराये ॥ कछु विश्वास काहु नहिं कीन्हा । बालकजानि न केउचितदीन्हा ॥ पंचमास के कान्हभये जब । तृणावर्त्त निश्चरआयो तब ॥ जौन समय सो गो-कुलआवा । अंधकारतहं चहुंदिशिछावा ॥ टूटिखसे तब वृक्षपवन ते । ठाढ़गिरे उड़िसकल भवनते ॥ रहीखेला-वत पुत्र यशोदा । आंगनमहँ अति हृदयप्रमोदा ॥ कृष्ण देह कीन्ही तहँ भारी । दीन्ह सुलाय तुरत महतारी ॥ लागीकरन भवनकोकाजा । तब निश्चरसो अघकेसाजा ॥ धरि नभ माहँ उड़ा यकयोजन । नन्द यशोदादिक गै खोजन ॥ नन्द यशोमति रोहिणि ग्वाला । व्याकुल भै

पटकि मुक्ति तेइंपाई ॥ तृणावर्त्त को जब हरिमारा । भयोविगत तब सब अंधियारा ॥

दो० नन्द यशोमति ग्वाल सब तबदेखे घरआय ।
एक तमीचर बधकियो तेहि छाती यदुराय ॥

चौ० देखिभई सबकह मनमाना । नूतनजन्म कृष्ण को जाना ॥ लिय यशुमति हरिगोद उठाये । तादिनहूं बहुद्रव्य लुटाये ॥ कहत नन्द तब हृदयविचारी । सत्य वचनपतिदेवकिनारी ॥ मोसनकहारहा जो तबहीं । सो सब गोचर चक्षुभ अबहीं ॥ निशिचर गया अब बहुत सताई । नहिंजानोको करतसहाई ॥ पुत्रादिक इतिश्री यदुराये । तिन्हकर छूटि बहुरि गृहआये ॥ यशुमतिनिकट सखिन तब आई । बोलो सुन तुम यशुमतिमाई ॥ कृष्णहुंते तोहिकाजभलारी । लज्जितभई सुनतमहतारी॥ राखनलगी संगबनवारी । लगी दुलारन हृदयसुखारी॥

दो० खोलेयकदिन श्याममुख तहलखि तीनहुंलोक ।
डारे देवकि छांह मुख भा जननी उर शोक ॥
गुणिनबोलि झरवनलगी व्याघ्रनखींपहिराय ।
जगन्नाथ के नाथ को जेहि भय काल डेराय ॥

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेतृणावर्त्तवधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७ ॥

दो० भूपति कंसके त्राससे जन्म भेद बलदेव ।
काहूतें भाषानहीं हरि पितु श्री बसुदेव ॥

चौ० नाम धरन तिन्ह मन अनुमानी । गर्गाचार्य्य

सकल गुणखानी ॥ निज उपरोहित बोलि पठाये। हर्षित गोकुलमेंआये ॥ मिले नन्द ते हाल जनाये। सो सुनि अधिक हृदय हरषाये ॥ सपदि दीन्ह बैठन कहँ आसन। जोरिपाणियुग जाविधि दासन ॥ लगे कहन बड़भागहमारे। दरशपाइ अतिभयो सुखारे ॥

दो० मम बालक यकश्याममुनि तेहु न धरायोनाम।
करिकिरपा तेहुनामधरु उपरोहित सुखधाम ॥

चौ० कहतमुनीशनामसुततोरा। धरत्यों परयकसंशय मोरा ॥ कंससुनत जबऐसोबानी। जानत तब देवनदुख-दानी ॥ निजबालक वसुदेव पठाये। नामकरन उपरो-हितआये ॥ याते कछु न जनावन कामा। गुप्तधरावहु निजसुत नामा ॥ राखा तब बलदेव के नामा। श्रीराम सबगुण के धामा ॥ श्रीदाऊ कालिन्दी भेदन। अरुबल-भद्रबली संकर्षन ॥ हलधर रेवतिरमण आदिबहु। होत नाम बलदेव के जानहु ॥ सुनहु नन्दजी बालतुम्हारा। परब्रह्म लीन्हो अवतारा ॥ ये दोउबाल संग अवतरहीं। सुरमुनि भक्तनके दुखटरहीं ॥ तप प्रतापतुमपायहु इन-हीं। महिमासकल सुनतहो जिनहीं ॥

दो० प्रथम लीन्ह वसुदेवगृह जन्मतुम्हारेलाल।
वासुदेव भा नामतेहिं जगतसुखद रक्षपाल ॥

चौ० इनहिं नाम परगटतघनेरे। करिहैं जबकौतुक बहुतेरे ॥ जन्मकुण्डली दीन्ह बनाई। राखानाम कृष्ण यदुराई ॥ बहुआदरि बसुदेव पुरोहित। बिदाकिये दै द्रव्ययथोचित ॥ मथुरानगर गर्गमुनि आये। सम—

वसुदेवहुपाये ॥ यहां चरित बहुबालदिखाई। कृष्णदेहिं सुख निजपितुमाई ॥ प्रकटभये जब दशन मुरारी। तब जननी आनन्दितभारी ॥ मिसरी और हविष ते पावन। शुभसायतकीन्हीअनप्रासन ॥ विप्रनदान बहुतनहंपाये दम्पति हरषि कुटुम्बखिलाये ॥

दो॰ धरिगोपुच्छहरिहलधर उठहिंगिरहिंअंगनाइ।
ब्रजबनिताहरि सुंदरता आवहिं देखनधाइ ॥

चौ॰ तत्क्षण एक विप्र तहंआवा। नंदरानी तेहिअन्न पठावा। तुरतहिं द्विजतहंहविषबनावा। नयनमूंदि हरि ध्यान लगावा॥ तबश्रीकृष्णनिकटतेहिंजाई। लगेकरन भोजन हर्षाई ॥ तेइ यशुमति कह हाल जनावा। तोहि बालक मम हविप जुठावा ॥ तुरतयशोमतिदूसरदीन्हा। बहुरि कृष्णताही विधिकीन्हा ॥ तृतियबारयशुदा रिसियाई। काहे खात हविप तुमजाई ॥ सुनहु मातसो मोहि बुलावा। प्रेम सहित पुनि ध्यान लगावा ॥ तबमैं तासु निकटचलिगयऊ। मुदितहृदयभोजन तेहिपयऊ॥ सुनि द्विजकहंभोज्ञानविशाला। अस्तुतिकरनलगे।नंदलाला॥

सो॰ हौंप्रभुलियअवतारपहिचान्यों नहिकरुक्षमा।
असकहि गेहपधार अवरजमानामातुपित ॥
खेलत हते संगग्वाल यक दिनसंकर्षणहरी।
तहईं श्री गोपाल खाइ मृतिका भूप सुन॥

चौ॰ अवलोक्योश्रीदामा ग्वाला। जाइकहायशुमति सोंहाला॥ सुनि जननीअतिशय रिसियाई। डाटनलागी श्री यदुराई। बोलेहरि माटीनहिंखाई। मृषाकहीकोतो-

सन आई ॥ सुनि जननीसोइबालबतावा। हरिपूछातेइंनहिं कहिआवा॥ तदपिनभा विश्वास यशोदा। खोले हरि तव बदन प्रमोदा॥ तीनहुंलोक बहुरि नहंदेखी। लज्जित भइ नंदरानि विशेषी॥ नन्दरायसेकही सोतबहीं। भाषाभयो गर्ग सति अबहीं॥ ज्ञानभयो तबनन्दको रानी। त्रिभुवन पति श्रीकृष्णको जानी॥

दो० तबहरिहृदयविचारकिय करिहौं लीलाढेर।
पुनिसुतकर जाननलगी ज्ञानलीनहरिफेर॥

चौ० एक समयहलधरकेसाथा। खेलतरहेहरित्रिभुवन नाथा॥ तिन्हसंग भये विगारमुरारी। रुदनकरतगेजहँमह-तारी॥ सुनु माता मोहिं दै दै गारी। चिढ़वत हैं बलदेव पुकारी॥ कछु न ठिकानताहिपितुमाता। मथुराजन्मिजुरेब यह नाता॥ गोरपिता अरु मातागोरी। तुमहौश्याममाल के चोरी॥ ग्वालबाल पुनि तेहि अनुहारो। मोहिपुकारत दै दैगारी॥ कह जननी तुम बालक मोरे। खेलहु निशँक नदीके खोरे॥ सुनि हरि हृदय परम सुखमाना। बहुरि खेलनगे तेहिअस्थाना॥ सांझ समय खेलन जबजाहीं। कह जननी तहं जावहु नाहीं॥ हौवा काटलेत डरभारी। या विधि रोकत श्रीबनवारी॥

दो० कर्णवेध अरुमुंडन पुनि हरि कीन्हीनन्द।
पंच वर्षके कृष्णभै तबअतिहृदयअनन्द॥

सो० ग्वालबालकेसाथ गोकुल अरु ब्रजकीगली।
लगेखेलनयदुनाथ ब्रजबालामोहिनिरखि॥

चौ० देखि सुंदरता मोहन सबही। निज निज घर

लेजाइके तबही ॥ लगेखेलावनमाखन हंसिके । तबहरि परकिगयेदुधरसिके ॥ पाइसूनगृह तब नंदलाला । संग लेइसब गोपकेबाला ॥ दुग्ध दहीसबदेत लुटाई । रखन लगीं तब सीक चढ़ाई ॥ जेहि नहिं पाइसके यदुराये । तुरतहि कृष्ण उपायबनाये ॥ धरिपीढ़ाऊखल ताहीपर । बाल चढ़ाइआप तेहि ऊपर । मुरलीतेमटुकीकहं फोरी । सखी एकपकरीहरि चोरी ॥ माखनचोरनामहरिधरेऊ । जननी ते चुगली अस करेऊ ॥ तब बालकममदूध गि-राई । अपहुखात अरुदेत लुटाई ॥ तबहरिबोलि उठेतेहि अवसर । मम करकिमिपहुंचे सीकनपर ॥ झूंठकहतियह बात बनाई । उलटि मोहिंनिज गृह लेजाई ॥

छं० लेजाइनिजगृह कोउ सखि चूमतिबदनहरषाइके ।
सखिकोउमारकपोलकोउसखिइचतदामनधाइके ॥
मोहिंकहतनृत्यकरनसखीकोउदेतदुखदारुणसही ।
अरु देतउलटिउराहनो कहिखाइगेमाखनमही ॥

सो० सुनिमाताहरिबात तिन्हकरिबातमृषासमुझि ।
उर विश्वास न आत गोदउठालियकृष्णको ॥

चौ० या विधि गोरस खात भुवाला । गोपिनके गृह जाइ गोपाला ॥ सखियांबचनसुनतचितचोरा । लज्जित हृदय फिरेंगृहओरा ॥ देन उरहनोजायंसखियजब । क-हैं सखिनसे नंद रानीतब ॥ तुमहिं करहुकछुहृदयविचा-रा । किमिसिक छुव लघुबाल हमारा ॥ आन कोउबा-लक गोपाला । करतहोत उत्पातविशाला ॥ पलटालेहु जोमानहुंनाहीं । याधरिलावहुजबहरिजाहीं ॥ तेलज्जित

हर्षित पुनिगई । धरन उपाव कृष्णके ठई ॥

दो० राजनकोउ ब्रजबाम जबनिजगृहहरिकोपाय ।
पूछत क्यों आये इहा तब बोलत यदुराय ॥
निज गृहधोखे आइके खायउमटुकिउघारि ।
धरन जोचाहत कोउहरि देतनयनमहंडारि ॥

सो० जबसो नयन उघारि देखन चाहतश्यामको ।
तबलौंकृष्णसिधारिप्रविशतनिजगृहधाइके ॥

चौ० सुनिनँदरानि बुझावत भारी। नौलखगो के तुम-अधिकारी । जाहु न आन गोप गृह केहू । वृथाचोरात के अपयश लेहू ॥ देत उराहन सबब्रजनारी । निजसुइ खान न दे महतारी । बहुरिजोअस कबहूं तुमकरिहौ। नन्द दण्ड दीन्हें दुखभरिहौ ॥ बड़सुतहोइकै चोरकहाई । अति सपूतनिज पितहिहंसाई ॥ तबबोलेहरि अब-नहिंजाई । तिन गृह खेलन सुनतुममाई ॥ असकहित-दपि न छांड्यो जाना । एक सखी पकड़ो भगवाना ॥

छंद ॥

धरिकृष्णउलहननिकटयशुमतिदेनज्योंग्वालिनिचली।
तब रची माया नाथ यह तेहि पुरुषकरगहवा भली ॥
नहि जानि सो माया मुरारी महरिप्रति कहने लगी।
इति भये अन्तर्द्धान यदुपतिजननिकह तब रिस पगी ॥

सो० सुनग्वालिनिअज्ञाननिजपतिको श्रीकृष्णकह ।
देखिहारि जियमानह्वै लज्जित गृहकोचली ॥

चौ० ताहू दिन जननी समुझावा । परप्रभुकेमनकछु नहिंआवा ॥ बहुरिगयेयकग्वालिनिकेघर । रहीसोइसो

तहंशय्यापर॥ धरिझोटीबांधीचरपाई।माखनखानलगेय-दुराई॥लागेदधिमटुकीफोरनजब।शब्दसुनतगोपीजागी तब॥ चोटीदधनदेखिपुकारी।धाईंसुनतसखियतहसारी॥ हरि कहं गहि माता पहं लाईं। सकल चरित मातापहं गाईं॥ माखन खाइ मटुकिया फोरी। आज पकड़िपायों मैं चोरी॥ चोटी बांधि उपाधि मचावत। ऐवतचार जहां कहुं पावत॥ लज्जित ह्वै यशुदा लगिबोलन। खायो लेहु सो देहु न ओलन॥ सो गोपी निजभवन सिधारी। लगी कृष्ण डाटन महतारी॥ मानत नहिंकछु सिखवन मोरा। राखब बांधितोहि अबचोरा॥ सुनु माता तेमोहिं ले जाही। धरि धरि घरके काज कराही॥

दो० नँदरानी सुन चुप रही लीलाकरि बनवारि।
जगन्नाथ सुख याहिविधि देतेपितु महतारि॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेबालचरित्रवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

दो० एक समयदधिमथत रहि नन्दरानिभूपाल।
आइ गये अतिक्षुधिततह मुरलीधर गोपाल॥

चौ० माखनलाइयशोमतिमाई।लगीखिलावनश्रीयदु-राई॥ताहिसमयमायाहरिकरेऊ। उबलनदुग्धतहांपरभ-यऊ॥ तुरत यशोमति देखन धाई। इहां विचारत भे यदु राई॥मोतेअधिककदुग्धकोचाही। मातागईउठावनताही॥ क्रोधातुर लै बासन माखन। काढ़ि काढ़ि लागे प्रभुचा-खन॥ ग्वाल बाल कह सुनहु कन्हाई। मम गृह बसत

दधी तुमखाई ॥ आज आपने गृहके माखन । देहुसकल ग्वालनकोचाखन ॥ तब ऊखल बैठे यदुराई । चहुंदिशि ग्वाल बाल समुदाई ॥ बहु बासन दधि फोरि गिराई । आपुखात अरु तिन्हहिं खिलाई ॥ ताहि समय नँदरानी आई । देखिताहि गे सकल पराई ॥

दो० ह्वैक्रोधितनँदमहरितब लेइसखिनकोसाथ ।
पाछे माता कृष्ण की आगे भागत नाथ ॥

चौ० सक्यो न कोउ धरन यदुराई । मातुदुखीलखि गये धराई ॥ बांधन कारण कृष्ण मुरारी । लावन रजु पठवामहतारी ॥ सुनत सखिन जहँपाये जेते । लायेनिकट यशोमति तेते ॥ तदपि कृष्णबंधन नहिंभयऊ । दो दो अंगुल सबघटि गयऊ ॥ जननी रुचिलखि गये बँधाई । यशुमति सबगोपिन समुझाई ॥ खोलहुनहिं ऊखलते इनहीं । तब हँसिबोली गोपिन तिनहीं ॥ बहुत बात तुम हमहिं बुझाई । आजआप पकड़े यदुराई ॥

दो० अलखअगोचरजगतपति जोअजध्यान न आह ।
जगन्नाथ सो भक्ति वश बँधेउ ऊखली माह ॥

चौ० यशुमति बांधिगई जब यदुपति । भापछिताव सखिन कहं तबअति ॥ दधि कारण प्रियप्राण बंधाई । हृदयदुखित यशुदा पह आई ॥ क्षमाकरहु अपराध जो अहई । सुनिक्रोधित हरि जननी कहई ॥ बहुत उराहन दीन्होंमोहो । जाहुआज नहिंछाडब ओही ॥ ते लज्जित निजगेहसिधाई।सुनतहि तहंआये हरिभाई ॥ सोउयशोमति बहु समुझाई । तदपि न खोला श्री यदुराई ॥ गो

बलदाउ निकटतबभाई। कहनलगे अस हरिहिसुनाई॥
तुनहवैप्रेमदश्य सुनुभ्राता। बंधागयेभक्तनसुखदाता॥

दो० तुम्हरी महिमा अगमहै असकहि प्रेम समेत।
तह ते संकर्षण गये गुणनिधि ज्ञान निकेत॥

सो० याविधिशोचहिआप नलकूबरअरुमणिग्रिव॥
तनय धनद के शप नारद ते भे वृक्ष दोउ॥
इनहिं उधारन काज हनबंधिगे यहिऊखली।
इनहिंउधारवआज नामजिनहि यमलार्ज्जुन॥
व्रजवासी के दाम गये बधि हरि भक्त हित।
दामोदर भा नाम याही ते यदु वीर कहं॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास
जगन्नाथकृतेदामबंधनोनामनवमोऽध्यायः॥ ९॥

सो० कहनृपसुनमुनिराय भयोशापकैसेतिनहिं।
सोमोहिंकहहुबुझाय कहनलगेशुकदेवतब॥

चौ० कहमुनि दोउबालककुबेरके। मृगसम मदमृग पति अहेरके॥ मदमाते गंगातट जाई। संगतियन विहरन लगुराई॥ विहरत समय देवऋषिआये। गर्वविवशते शिरनहिंनाये॥ शोचामुनि ऐसे निर्लज्जित। करिहैं अघ नामहुको नहिंहित॥ तातेभोगहु अघकरदूखा। जायहोहु गोकुल दोउरूखा॥ सुनतशाप गिरिगे मुनि चरणा। कवप्रभु होत हमारो तरणा॥ बोले मुनि जब हरिअवतरिहैं। बालचरित करिकै तब तरिहैं॥ सुननृप सोइ शापते दोऊ। गोकुलमाहँ वृक्षतनुहोऊ॥ तातेसुस क्त गे यदुराये। उखलनाइ दोउ मध्य गिराये॥ भये

प्रकट जड़ते तसदोनर । अस्तुति करनलगे मुरलीधर ॥ हेप्रभु अखिललोक के नायक । भक्तविपति भंजन सुख दायक ॥ कीन्ह कृपा नारदमुनि भारी । याते दर्शन भयउ मुरारी ॥ तुम्हरे भजन होत नरज्ञानी । तुम ते विमुख अधजिमिप्रानी ॥ सुनिहरि कहा मांगुवरदाना । नवधाभक्ति मांगि भगवाना ॥

दो० पाइ मनोरथ भूपतव दोनों होइ अशोक ।
चढ़िविमानशिरनाइकै गे कुवेर के लोक ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेयमलार्जुनमोक्षवर्णनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दो० वृक्षगिरनको शब्दसुनि आईनन्द किनारि ।
तेहिविचहरिको देखिकै कीन्ही घोरपुकारि ॥

चौ० सुनत पुकार महरतहंआये । यशुदाकहं अतिशय रिसिआये ॥ कृष्णहि खोलिकै गोद उठाये । हर्षित भे गोपन समुदाये ॥ मातुलेइ पुनि श्रीयदुवरको । गइ हरिसुमिरि मुदित निजघर को । कहतनन्द यह विटप पुराने । कैसेगिरे कहहु सब स्याने ॥ ग्वाल बाल मह कह यकबानी । इन्हें गिराये जन सुखदानी ॥ बालक जानि न कोउ विश्वासे । तब यदुवीर कहत मातासे ॥ भूखलगीभोजननहिंकीन्हों।माखनरोटियशोमतिदीन्हों॥

दो० राजन जब नंदनंदके आवगांठ को वर्ष ।
नंदकियेबहुदानतब अतिदम्पतिउरहर्ष ॥
नंदकहतउपनंदसे नहिंसुखगोकुलग्राम ।
जहं सुखगोमानुषमिलै कहहू तैसो ठाम ॥

चौ० कहउपनन्द नन्दसोंबाता। वृन्दाबन थलसुख कहंदाता॥ जहँ राजत भूधर गोबर्द्धन। नन्दसुनत तहँ बसे मुदितमन॥ गोपी ग्वालरहे नृपजेते। बसे सकल वृन्दाबन तेते॥ पचवर्ष के कृष्ण भये जब। कहनलगे नँदभामिनिसोंतब॥ हमहुंचरावन गोबनजैहों। सगहि ग्वाल बालफिरिऐहों॥ हरिजननी कह सुनुसुत बाता। हैं बहु अनुचर गो सुखदाता॥ तेइ जाइ करिहैं रख-वारी। हरि माना नहिं तब महतारी॥ बोलि ग्वाल समुझावन लागी। हरिको संगन कबहूंत्यागी॥ राखेहु सदा संगहलधर को। जीवन धन मोहिं नदकुंवरको॥ असकहि दोउभ्राता संगग्वाला। भेज्यो यशुमतिमुदित विशाला॥ लगे यमुन तटधेनुचरावन। बांटिबांटिदल आपन आपन॥ माखनरोटी मातुपठाई। बन कलेउ हलधर यदुराई॥

दो० वृन्दाबन में रहन के सुना कंस जबहाल।
कृष्णहतनपठवातबहि वत्सासुर विकराल॥

चौ० वत्सरूपधरि लगा सो चरना। जहांरहे प्रणतारतहरना॥ अन्तरयामी श्रीभगवाना। कपटरूपकहं गे पहिचाना॥ चरण घुमाइ वृक्षजड़ पटका। तुरतहिं प्राण तहां तेहिसटका॥ पुनितेहि भाइबकासुर आवा। बक स्वरूप तेइं किये बनावा। धरि हरिओठ चरण ते दावा। करते चिरके स्वपुर पठावा॥ सब देवन अति-शय उरहरषे। सुमनबहुत नभके मगबरषे॥ औरहुलगे बजावन बाजा। गरजेउ असुर मरत अतिराजा॥

छं० जबप्राणजान समयबकासुर शब्दकियप्रकमघसे ।
सुनिआय हलधरग्वालसंगबक बधनदेखिअधिकहँसे ॥
हरिविमलकीरति कहत ग्वालन कृष्णकेसंग घरगये ॥
निजभवन ओरहुनन्दसे कहिसकल मन हर्षित भये ॥

सो० जाइ सुनाये ग्वाल वत्सबकासुर के वधन ।
सुनत नन्दतेहिकाल दानदिवाये कृष्णसे ॥

चौ० गोकुल तजि वृन्दाबनआये । तहँ पुनि निश्चर कंस पठाये ॥ अब मतिजाहु कृष्ण बनमाहीं । अति उत्पात निशाचर लाहीं ॥ कह हरि मैं खेलब घर माई । मगादेहु मोहिभवरचकाई ॥तुरतहि माता चकइमगाई। खेलनलागे श्रीयदुराई ॥ गोपी सबहरि देखन आवे । तिन्ह कुच चकई श्यामबुझावे ॥ तिन्हैं हर्ष उर अन्तर भारी । देहिंहृदय बाहरते गारी ॥कोइजामुन बेचनप्रभु पासा । आवैमुदितदरशकीआशा ॥ जामुनलेइ देत हरि नाजा । सोसबहोतमणिनसमराजा ॥ लोभविवशते प्रभु पहंआवैं । मनमोहननवमोदबढ़ावैं ॥

दो० भूपति पूरब जन्ममे किय ग्वालन बहुपुण्य ।
जोनहिंआवतध्यानअज तेहिसंगखेलतधन्य ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेवत्सासुरऔबकासुरबधोनामएकादशोऽध्यायः॥ ११ ॥

सो० एकदिवससंगग्वाल पावनयमुना तटनिकट ।
जहां रहे गोपाल मज्जन तहं राधा गईं ॥

चौ० मोहितभे देखतहरिताही । राधाहूमोहित मन माहीं ॥ कहा कृष्ण काकी तूकन्या । कबहुं न देख्यों

त्रिभुवन धन्या ॥ सुनिबोलीवृषभानु दुलारी । हौंतनया वृषभानु मुरारी॥ कहहरिकबहुं कबहुंममपासा । आवहु खेलन संग हुलासा ॥ गईसुनत राधागृहओरा । चित लगि रह्यो सुरति चितचोरा ॥ करिमातातें विविध बहाना । आवे निकट जहांभगवाना॥ मातातेकरिगई बहाना । गो दोहनको यक दिनठाना ॥ आईमिलन जहां यदुराई । खरका में रह कुंवरकन्हाई ॥

दो० हरिमाया तब असरची कीन्हींबहुअँधियारि ।
तेहिअवसर राधाविषे बतराही मुद भारि ॥

चौ० तमदेखत राधा अकुलानी । तब यदुबर लीला असि ठानी ॥ आपु बस्त्र राधाकेलीन्हा । पीताम्बरराधा कहँ दीन्हा ॥ गये गेह अपने भगवाना । राधागई भूप बरसाना ॥ जब हरि भवनगयेअतिमोदा । देखितिनहिं अस कहति यशोदा ॥ करितुमप्रीतिसंगकोउनारी । आयो पहिरि ताहिकीसारी ॥ कहहरिसुनुमाताममबाता । यमुना तटहूंगायचराता ॥ पीताम्बर ताकेतटधरे । सखी एक तहँमज्जनकरे ॥ धेनुएक तहंगईभड़क्के । धोखे पहिर भजी सो धड़के ॥ मैं जानूं सोऊ ब्रजनारी । लावउं वस्त्र बदल महतारी ॥ अस कहि गवन भवनते कीन्हा । ताहि बदलि माया ते दीन्हा ॥ जननीपहं सोइ लाइदिखावा । उर विश्वास यशोमति आवा ॥

दो० निज गृहजब राधागई अतिभयकंपितगात ।
मातकृत्योदा देखितेहि लगीपुछन कुशलात॥

सो० कह राधा सुनु माय गई दुहावन धेनुवन ॥

तहां सर्पयक आय डरुओहुतायक्गोपकी ॥

चौ० झारि दीन्हतेहि श्रीननवारी । भईसचेत तबहिं सोनारी ॥ ताकेभय आतुरमैं आऊं । अबनहि जाइब तजिनिजगाऊं ॥ कहत कीर्त्ति मैं प्रथमहि तोही । बरजतरही न मानेसि मोही ॥ चलत समय निरखसिअसमाना । पांव धरसि अन देखे थाना ॥ कबहुं जातयमुना अस्नाना । कबहू वरका धेनुदुहाना ॥ याविधिमातु बहुत समुझाई । राधाके उरबसी यदुराई ॥ गइहरिधाम पुकारन कारन । सुनतहि आये दनुज सँहारन ॥ कह मातासे यदुकुलराई । रहेउकबहुँ मैं पंथभुलाई ॥ सखी एकमोहि पथदिखाई । आजुमोइ सखिमम गृहआई ॥ आयसुदेहु आव ममगेहा । दियेनिदेश मातुभरिनेहा ॥ तबश्यामागइहरिगृहमाहीं । पूछनलगीमहरितियताहीं ॥

सो० कोहै पितुरुमातु काहै नामतिहारकहु ।
भानुकीर्त्ति पितुमातु नामहमारो राधिका ॥

चौ० हरिजननी सुनिकह हरषाई । मै जाने तुमरेपितु माई ॥ पिताखोट बलवन्ती माई । सुनिबोली राधामुसकाई ॥ मनपितु लीन्ह खुटाई कैसे । कह बुझाइ सर्वहिं मोहितैस ॥ सुनि असबचन कृष्णमहतारी । अतिआनंदित हृदयविचारी ॥ चाहिय करनविवाह हरीसे । अरु श्यामाअतिप्रेम परीसे । असउरभाषि शृंगारसजाई । अंचल महँदे बहुत मिठाई ॥ कहहरि मातु वचन रस सानो । आइ सदातुम प्रेमकि खानो ॥ खेलहुसंगकृष्ण मुरलीधर । श्यामहु कहखेलन मुसुकाकर ॥ तेहिक्षण

राधागेह सिधारी। किये शृँगार देखिमहनारी॥ पूछ-
नलगी शृँगारको कीन्हो। राधासमाचारकहिदीन्हो॥
सुनिकृत्योदा भईसुखारी। याहूअसनिजहृदयबिचारी॥
चाहियकरनकृष्णसोंब्याहू। दाउजोरीराधाजगनाहू॥

दो० असबिचारि वृषभानुकेकहीब्याहकीबात।
सुनितियकेवच प्रेमयुतहर्ष कह्योनहिंजात॥

चौ० राधा लगी खेलन हरि संगा। श्यामा श्याम
खेलहिं बहुरंगा॥ कौन कहै कबि शोभा जोरी। श्यामं
कृष्णतनुराधागोरी॥ राधाकहगो दुहनबिहारी। हर्षम-
मेतदुहेवनवारी एकदिवस जबगाइदुहाई। राधाअपने
गेहसिधाई॥ पंथमिलीयकसखीसयानी। पूछनलगिसुन
राधा रानी॥ कतगेआजु धेनुरख वारे। जोदूहीगोनन्द
दुलारे॥ कृष्णनामसुनतहिमोहगिरी। गिरतसमयतेहि
कहदुखभरी डांस्योश्यामसर्पमोहिंआई। सोसखिकहेउ
कीर्तिसेजाई॥ बहुतगुणी से मातुबरावा। मंत्रतंत्र कछु
काम नआवा॥ गईकीर्त्ति तबगृहयशुदाहीं। कहहुकृष्ण
कोझारन जाहीं॥ यशुदा सुनीमंत्रहरि आवा। तुरतहि
झारन संगपठावा॥ गेहरि जबहिं राधिकादेखा। छूटि
गयो विषतकत विशेषा॥ कछु पढ़ि हरितनु बेणुछुवाई।
ह्वैसचेत तबअंगछिपाई॥ राधाकहँ दिपहरिमुखलागा।
श्याम स्वरूप देखि विषभागा॥ लीन्हों हरिकहँ गोद
उठाई। दीन्ह कीर्त्ति तब मेवामिठाई॥

छं० तबकीर्त्तिदैमेवामिठाई बिदाकियजगनाहको।
जेहिबिमलउरतेहिबसतश्यामस्वरूपउरगाउछाहको।

जबभवनगमनलग्योसमयदुखकृष्णतबललिताकही।
तुम मोहनी ते मोहिलीन्ही राधिकाको हरि सही ॥
सुन बचन प्रभु मुसकात आपन गेहमे आवतभये।
सुनिमातुयशुमतिहर्षउरअति प्यारकरिगोदहिलिये॥
हैं एक पर दुइ रूप धरिकै प्रकटह्वै लीला किये।
कहजगन्नाथ सो धन्यजगमे जो सप्रेम सुनतभये॥

दो० एकदिवससँगग्वालसब खेलतरहेगोपाल।
चित्रकारि अगनकिये सुमनहारगलडाल॥

चौ० सबमिलि ग्वाल पुकारत गाये। तहां अघासुर कंसपठाये॥ धरि तेइ सर्परूप अतिमोटा। योजनचारि माहँगा लोटा॥ ऊपरओष्ठ गगनलगि गयऊ। नीचेकर भूनीलग भयऊ॥ कह हरि यह गिरि गुहा समाना। यामें जाहु न कबहुं भुलाना॥ यद्यपि हरि तिन्ह बहुत बुझाई। सखातोष असमसबहिसुनाई॥ चलहुहोबयद्यपि कोउनिश्चर। हतिहैं श्यामसमान बकाधर॥ ज्योते पैठगयेमुखतासू। गयेउदरबिचखींचतश्वासू॥ तबहरि तिनहिं बचावन कारन। पैठगये मुख असुरसंहारन॥

दो० बदनबन्दकरिकहततेइं बकपलटा अबलेव।
असलषिहरषे असुरसब भेसबशोचित देव॥

चौ० तेहिमहं निजतनु श्याम बढ़ावा। निसरा प्राण मुक्ति तेइं पावा॥ देवनदेखि बहुत उरहरषे। हरिकेतनु सुमन नभबरषे॥ ग्वालन निसारे संग हरिआये। कहनलगे धनि प्राण बचाये॥ कह हरि बिन बल किये तहारे। सकत्यों मारि न असुरसुरारे॥ कुंजवनमें कुंज

बनके नाथा। खेलनलगे सखासबसाथा॥ सूखाअस्थि अघासुर केरे। खेलहिं ग्वालन प्रविशि घनेरे॥ मरत समय तेइं हरिपदध्यावा। याहीते मुक्तीफलपावा॥ जे नर मरतसमय हरि ध्यावहिं। ते अवश्य वैकुण्ठसिधावहिं॥ राजनबीतिगये यकसाला। तबतेहि बधनप्रकाशे ग्वाला॥

दो० कह नृप निजनिज गेहमें वर्षउप्रान्त गुवाल।
किमिबधताकरकहतभे कहु मुनिकथा रसाल॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथकृते राधिकामिलनअघासुरबधवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

दो० मारि अघासुर कृष्णजू यमुनाकिये नहान।
ग्वालबालमज्जनकिये यशुमतिभेज्योखान॥

चौ० ग्वाल बाल बैठे चहुंओरा। तिनहिं बीच बैठे चितचोरा॥ आपन जूंठ ग्वालमुख नावे। ग्वालनहूं श्रीकृष्ण खिलावें॥ दशा विलोकि देव पछिताये। तुरतहिं चतुरानन पहँआये॥ तुम भाष्यो हरिलिय अवतारा। देखा जूठखात हमग्वारा॥ भामुख चारहु संशयभारी। यांचन यदुकुलकेतु विचारी॥ खातहुते जबही यदुराई। इत ब्रह्मालिय बच्छ चुराई॥ कहहि ग्वाल उत सुनु यदुराई। कछुसुधि गौवन की नहिंपाई॥ बोले हरि मैं लाउब भाई। असकहि खोजनगये कन्हाई॥

दो० इत ब्रह्मालै ग्वाल पुनि राखा गर्त्त छिपाइ।
खोजत हरिपाये नहीं जानी विधि चतुराइ॥

चौ० मायाते सब बछरू ग्वाला । रचेकृष्ण प्रभु दीनदयाला ॥ वाही विधि सब निजघर जाहीं । माता प्यारकरत कमनाहीं ॥ जबते विधि सबबछरु छिपाये । मृत्यु भुवनतजि गेह सिधाये ॥ तबतेबीतिगयो नरसाला । तब ब्रह्माआये जहँ ग्वाला ॥ निद्रावश देखा सब काहू । गयेबहोरि जहांजगन हू ॥ देखाचरित नन्दसुत जबही । पुनि गै रहा गर्त्त जह तबहीं ॥ प्रथमहि विधि गो बछरूपाये । गे बहोरि निकट यदुराये ॥ भयेचतुर्भुज सब गोपाला । देखतही भा कम्पविशाला ॥ जानि नाथमायाहरिलीन्हीं । तबपदगिरिअसविनतीकीन्हीं ॥

दो० तुम प्रभु दीनदयालु जगगर्व्व प्रहारि मुरारि ।
मोहहरेउ ममकरिकृपा देहुअपराधविसारि ॥
तवहरि अपने चरणते लीन्हो विधिहिउठाय ।
प्रभुकृपालुदेखाजबहिं ग्वालबछरुदियलाय ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेश्रीकंठवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृते ब्रह्माबच्छहरणोनामत्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

सो० कहब्रह्मा सुननाथ धन्य भाग ब्रजनारिनर
जो जनमो इन्ह साथ पावैं दरश सदा प्रभु ॥

चौ० तिनमहँ हो य जोजन्म हमारो । यातनतें सोइ अधिक पियारो ॥ मोह विवशमैंकियेउं ढिठाई । याचन चहेउं चराचर साईं ॥ भक्त विवश अवतरेहु स्वामी । आदिअन्तनहि अंतर्यामी ॥ क्षमाकरहुअपराधहमारे । सुनिविधि वचन कहा असुरारे ॥ करि ब्रजमण्डल की परिकर्म्मा । आपनलोक जाहुतुम ब्रह्मा ॥ सुनिप्रभु

बचन चहूंफिरिआये। तबब्रह्मा निजलोक सिधाये॥ यद्यपि बीतिगयो यकसाला। रही न सुधि तद्यपि कछु ग्वाला॥ कहहि कृष्णसे सुन यदुराये। तुरतहिं तुम बछरू लेआये॥ असकहि गमनभवन सबकीन्हा। जननी कृष्ण लाइउर लीन्हा॥ सुनाअघासुरहतेकन्हाई। कियादान बिचिग्रे यदुराई॥ पंचवरष की उमरगोपाला। कीन्ही असलीला संगग्वाला॥ जोजनकहहिं सुनहिं चितलाई। पावहिंमुक्ति मनोरथ राई॥

दो० राजन जबहरि जायबन रहे मखिनचितलाय।
जब फिरिके आवैं भवन दरशिहृदय हरषाय॥

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेब्रह्मास्तुतिकरनवर्णनोनाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

दो० एकदिवस बलदेव संग लेइगाय चरुग्वाल।
चले वृन्दावन विपिन में मुरलीधर गोपाल॥

चौ० संग परस्पर कौतुक कीन्ही। तालीमारसखा यदुवरहीं॥ कृष्णहुं तिनकर तालीमारी। भागहि करि करि कौतुक भारी॥ श्रीदामा यकसखासुसरी। कहन लगे तेहिते बनवारी॥ नवे वृक्षजो देखहु इनमें। फल अरु पुष्प चहूंदिशि जिनमें॥ सो सब तरु हलधर के हेतू। फलेफूले हैं सुनगो केतू॥ धनिधनिहैं वृन्दावन बासी। महिमाअकथमंडल चौरासी॥ असकहि दोदल सखा बनाई। इतहलधर उतयदुकुलराई॥ हयहाथीको

देखो तसबीर नम्बर २॥

बोलहिंबोली । विविधप्रकारकरहिं मिलिठोली ॥ कारी घूमरि नामबुलाई ।निजनिजगाय पुकारहिंजाई॥हरिके दलदूसरिदिशि गयऊ। हलधरकीदलबिछुरतभयऊ ॥

दो० संकर्षणते एकतहँ सखा कहत सुन भाइ ।
आगेहै बनतालफल सुधासमान मिठाइ ॥

चौ० धेनुकखर रखवारी बैठा । मोवनदेत काहुनहिं पैठा ॥ तुम्हरी कृपा हमहुं चहैंखाना । हलधरकहा खाहु फलनाना ॥ असकहि दीन्हों वृक्षहिलाये । फलबहुटूटि धरणिपरआये ॥ गिरन शब्दसुनि खरतहंआवा । हल· धरको तेइँ मारनधावा ॥ संकर्षण दोउ पदधरिपटका । गिरतहिंमात्र प्राणतेहि सटका ॥ ताके बन्धु तमीचरआ- ये । तिनहुंमारि बलदेवगिराये ॥ तबसबलै फल हर्षित भारी । बलमोहनसंगगेहसिधारी ॥ बाँटिबाँटिलागेफल खाना । गायगाय हलधर गुणनाना ॥ दूसरदिन बिनु हलधर ग्वालन । गये कृष्णसंग धेनु चरावन ॥ तृषित भये सँगतजिबनवारी। जलपीवनगे यमुनबिचारी ॥ श्री कालीदह नाग बसेरा । तेहिविष मूर्छितपरे बछेरा ॥

दो० सबग्वालन गायन सहित मूर्छितपरे अचेत ।
देखि बिलम्बनग्वाल सबआये यदुकुलकेत ॥
अमिय नयनते देखेऊ सब पुनिभये सचेत ।
बोले यामे नाग है तेहि विष भयउ अचेत ॥
जगन्नाथ तिन्ह संगलै आये गृह गोपाल ।
गोपिनदरशिभई मुदितचन्दबदननंदलाल ॥

सो० सोवत भे हरिरैन कालीदह ढूवत निरखि।
कहास्वप्नकौबैन जननि शांति नन्द नकिय॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णसागर जन्मखण्डे
कृष्णेधेनुकबधवर्णनोनामपञ्चदशोऽध्यायः॥ १५॥

दो० राजन कालीनाग विष ते नरकीन्हि विचार।
मरतरहेनहि लागकोउ छूतहोत जरिक्षार॥

चौ० लगै न तरुकोउताके पासा। रह्यो इक कदंब तरुवासा॥ कहनृप सो तरु केहि विधि रहेऊ। तबमुनि अन भूपतिसे कहेऊ॥ रहेजात काइ युगहि स्वर्गा। तिनमुख अमृतरहा नरेशा॥ बैठेसोइतरुपर खगराई। गिराटपकि अमृत तहँजाई॥ याहि कारणसोइ तरुतहँ रहेऊ। फल गृहलक विभीषरहेऊ॥ तातेनागको दह ते निकालन। इच्छाकीन्ह कृष्ण जगपालन॥ हरिरुचि ते कंसासुरपासा। गये देवऋषिमहितहुलासा॥ साद बैठन आसन दयऊ। तबनारद अस पूछतभयऊ॥ काहे नृप तुमअहहु उदासा। कसकहा तब हृदये त्रासा॥

सो० कहाकहौं मुनिनाथ गोकुल जन्मे बालदो।
तिन्हभय जीवन साथ अबाउदलेग साहिते॥

चौ० कहि न जात तिनके बल मारा। जो बलवन्त अघासुर मारा॥ जानतहते सुनी हरि इच्छा। दीन्हीं कंसहिं या विधि शिक्षा॥ दुनहि एक कालीदह याही। मरहि सकल जो तेहितट जाही॥ तहँते पुष्पकमल के सुंदर। मांगि पठावहु नंदसे नृपबर॥ तह दोउबालक लावनजैहै। जातहिमात्र मृत्युदोउ पैहै॥ असकहिमुनि

निजधाम सिधाये । इततेइ नंदहि हालजनाये ॥ कोटि पुष्प भेजहु दहलाई । नहिंतो करबकैद दोउभाई ॥ नँद उपनंद शोचउर भारी । कैसेलाउब पुहुप निकारी ॥

सो० शोचनगयनिजप्रान शोचअधिक दोउभाइके ।
कंसासुर दुखदान कत गयबचो उपाधिके ॥
तेहि अवसर यदुराय पूंछा आयके मातु से ।
काहे सब पछताय कहा नन्द तब कृष्णसे ॥

चौ० जबते तुम जन्मे यदुराया । कंस बहुत उत्पात मचाया ॥ कमलपुष्पदह मांगेउलाई । कैसे लाउब दह बिच जाई ॥ जो नहिं पुष्पपठावब तेई । हमहिनिकारि तुमहिं दुखदेई ॥ कहाकृष्ण भजहूभगवाना । करिहैंसोई सहाय निदाना ॥ असकहि जाय यमुन गोपाला । लेइ गेंद श्रीदामा ग्वाला ॥ दीन्हों कालीदहमहँ नाई । गेंद लेन तेइ रारिमचाई ॥ कहहरि जान न मम प्रभुताई । पुष्पलाय तोहिं देउँ दिखाई ॥ असकहिकूदिपरे यदुराई । सखा एक यशुमतिहि सुनाई ॥ नन्दयशोमति व्याकुल धाये । तिन पीछे ग्वालन समुदाये ॥ लगेडुबन दोनो जलमाही । सखा रोकिलीन्हो यशुदाही ॥

छं० तहँसखासबलियरोंकिदम्पतिरोवनलगेसुनाइकै ।
तुमकीन्हसूनासकलव्रजकहँ हमनकोबिसराइकै ॥
तब लगेसंकर्षण बुझावन देखि दुख ब्रजवासिही ।
हरिगमनकीन्होनागनाथनमृत्युकिमिअविनाशिही॥

सो० नहिं आवै जो श्याम नाथि नाग लै हाथ मे ।
नाम न ममबलराम समुझितजो मनशोचसब ॥

दो० संकर्षण के कहन ते धीरज कछु उरपाय ।
जेहिमगंहरिकूदतभये देखहिंसहि समुदाय ॥

चौ० इतगे श्याम नाग जहँ रहेऊ । हरिहि देखि नागिनि अस कहेऊ ॥ जाहुबाल अपने गृह माहीं । नहिं तो नाग उठत रिसियाही ॥ ताके विष जरिजात शरीरा । लखि कोमल तन मोहि अतिपीरा ॥ कहत श्याम मोहिंकंस पठायो । कमलपुष्प लेनेको आयो ॥ कह नागिनिसो मरा न काहे । जो तोहि पुष्प लेनभेजा है ॥ बोले हरिकिन देहुजगाई । जाकेबल तुम मोहिंसुनाई ॥ नागिनि जबनहि नाग जगावा । तब हरिजाय के पूंछ दबावा ॥ जानि गरुड़सो उठासत्रासा । देखा ठाढ़ बाल यकपासा ॥ काटनलागा कुवँर कन्हाई । विष नहिंचढ़ा तदपियदुराई ॥ अंगलिपटिसोहरिहिंदबावा । त्रिभुवनपति तब देह बढ़ावा ॥

दो० टूटनलगा शरीरतेहि दियोछांड़ि तबनाथ ।
तव हरिताकेफन चढ़े लीन्होनागहिनाथ ॥

चौ० तेहिफन चढ़ि हरिनाथा जबहीं । नृत्य करन लागे प्रभु तबहीं ॥ देवनपुष्प लगे बरषाना । गन्धर्वन लागे गुणगाना ॥ चरणपरा तेहि नाथ मुरारी । तबहिं नाग असगिरा उचारी ॥ कहा रहा ब्रह्मा असबाता । गोकुल अवतरिहैं जन त्राता ॥ अबधों सोइ लिये अवतारा । अस जिय जानि विनय अनुसारा ॥ नागिनिहूं अस्तुति बहुकीन्हे । भलकिय नाथ गर्व हरिलीन्हें ॥ कहतनागहौं शरणतिहारे । क्षमाकरहु अपराध हमारे ॥

हरि पदरज ब्रह्मानहिं पावहिं । सोप्रभु ममशिर ना-
चहिं गावहिं ॥

सो० दीनवचनसुनि नाथ क्षमाकीन्ह अपराधतेहि ।
पुष्पलादि तेहिमाथ चढ़िकै पार भये यमुन ॥

चौ० कहा कृष्ण तुमसब परिवारा । रमणकद्वीप में
रहहु सुखारा ॥ कहा नागतहँ रहहिं खगेशा । तिनको
भय मोहिंलगतसुरेशा ॥ कहहरि ममपद छापविलोकी ।
कहिहहिं नहिं कछु रहहु अशोकी ॥ तदपि मिटा नहिं
तेहिउर त्रासा । लियेबोलि हरि खगपतिपासा ॥ मिटा
दीनहरि तेहि उरत्रासा । धरि तेइपुष्पकियोतहँबासा ॥
नाथेनागपुष्पतिन्हगोहन।हर्षितभयेदेखिछबिमोहन ॥

छं० देखि कृष्णको मातपितु कहं हृदय आनंदता भई ।
ब्रजबासिनरनारीमुदितभेउरगमनि मिलिग्रहगई ॥
जोकहहिंसमुझहिंसुनहिंचितदैनागनाथनश्यामहीं ।
नहिंहोतकबहूं सर्पभयतिन्हजाहिंकृष्णके धामहीं ॥

सो० श्रीयदुराज बिराज नाथे नाग समाज ब्रज ।
सब देवन शिरताज जगन्नाथ मम उर बसे ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ
कृतेकालीदमनवर्णनोनाम षोड़शोऽध्यायः १६ ॥

दो० कहनृप रमणकद्वीप प्रभु थानमहा सुखखान ।
तहँते भागेउ नागकिमि सोअबकरहु बखान ॥

चौ० सुनु नृप कश्यपमुनि रहकोऊ । कद्रूविनतारह
तियदोऊ ॥ नागादिक अहिगणबहुजाये । कद्रूतेसुनिये
चितलाये ॥ बिनताते दो बालक जयऊ । प्रथमहिंगरुड़

अरुणद्विज भयऊ ॥ गरुड़भये बाहन भगवाना । अरुण भये दिनकर रथवाना ॥ खगपतिनाग अहिनकरवासा । रमणकद्वीप रहा सुखरासा ॥ कद्रूविनता इकदिनराई । कीन्ह परस्पर बहुत लड़ाई ॥ कद्रूकहरविहयहै काला । विनताकहै रगश्वेत नृपाला ॥ भे कद्रू पुत्रन इकओरा ॥ इतखगपतितेआयुधघोरा॥ खगपतिकोरहहरिवरदाना । करिहहुतुमब्यालनकोखाना ॥तातेलगे उरगगणखाना। तेगे विधिकेपास निदाना ॥ विधियाविधि दिय मेलक-राई । अहि यकदिय मासहि खगराई ॥ काहूनहि करिहैं तवनाशा । देन लगेते सहित हुलासा ॥ कछु दिनबीति गये यहिभांती । आवापारनागकीजाती ॥ नागगर्द वश कहा नरेशा । देवनहीं मैं सर्प खगेशा ॥

दो० तब खगपति तेहिद्वारगे कियेयुद्ध तबनाग ।
भयो पराजित युद्धमे बसा यमुनतट भाग ॥
सकत खगेशनजायतहँ सौभरिऋषिके शाप ।
बसा मुदितमननागतहँयमुनभरीतेहिताप ॥
सौभरिऋषितट यमुनमे रहेकरत हरिजाप ।
व्यालारीबध मत्स्यतहँ तब मुनिदीन्हाशाप ॥
आवहु जो तुम कबहुइत होतप्राणकोअन्त ।
मारिसकतनहिंजीवकोउजहांभजनभगवन्त ॥

चौ० तातेजात न तहां अहीशा । आगे सुनहु कथा जगदीशा ॥ नागविदाकरिआयदुरारे । भय आतुरमाता पहँआये ॥ देखि चरित हलधर मुसुकाने । नन्दराय तब बतहु रिसाने ॥ विपतिसमय यहहर्षितभयऊ । तबहल-

धर अमनन्दहिं कोऊ ॥ नागनथतनहिंना हरित्रासा। अबडेराइ गे मातापासा ॥ नंदमहर सुनिभये सुखारी। कृष्ण दरशि हरषीं ब्रजनारी ॥ कहजननी बरजनपरमोरे। गयेउ न जाहु कबहुंअबभोरे ॥ नन्द कीन्ह बहु दान गोसांई। प्राण बचनहित यदुकुलराई ॥ तबमातासंकह बनवारी। सत्यभयो स्वपना महतारी ॥ गेंद खेलतरह यमुनातीरा। डारिदीन्ह मोहि कोउ तेहिनीरा ॥

दो॰ सर्पनिकट जबमैं गयउँ कही कसकी बात।
ताकेभयपहुंचादियो मोहिंसहितजलजात ॥

चौ॰ देखि कृष्ण श्रीदामा ग्वाला। कहा धन्य तुम दीनदयाला ॥ जाबिधिकह्यो ताहिबिधि कीन्हा। नाग नाथि प्रभुपुष्पहि लीन्हा॥ भा अबमम उर अमविश्वासा। करिहौ अवशि कंसकोनाशा ॥ तेहिठम तादिन सबब्रज-बासी। किय विश्राम शोकभा नाशो ॥ नन्दमहर तब ग्वालन साथा। पुष्पभेजि दोनों नरनाथा ॥ या बिधि पातीदीन्ह पठाई। तुम्हरीकृपा कृष्ण यदुराई ॥ काली नागहिंभयदिखरायो। कमलपुष्प यमुनाते लायो ॥ पाती बांचत निशिचरनाहा। उपजा उरमहँ दारुण दाहा ॥ जाना कृष्ण लिये अवतारा। असबोलतभा ग्वालनि-हारा॥ करिहौं भेट नन्द दोउ बालक। कहियो नंदहिं सुनहु गोपालक॥सुनि तेफिरे ताहिकीबाता। कहिदीन्ही सबहीकुशलाता ॥ सुनतकृष्ण हलधर मुसुकाने। शयन किये तहँ सब हरषाने ॥

सो॰ बीतिगई निशि याम निशिचर पठयो कंसइक।

धुंधुक ताको नाम आइ सो पावक दीन्ह ला ॥
दो० चहुँदिशि पावक देखि उठि घबराईं ब्रजनार ।
कह हरि मूँदहु पलक सब बूझिजात अंगार ॥
ते सब पलमूँदी जबहि धरि हरि रूप अनेक ।
अग्नि बदन महँ पीगये मिटी निशाचर टेक ॥
धुंधुक को पुनि मारिकै खोलन भाष्यो नैन ।
अग्निबुझी देखो सबहि अस्तुतिकरी सुबैन ॥
तबमाया विस्तारिहरि मिटिगा तिन्हकर ज्ञान ।
निजनिज गृहआये सकल हर्षितहोत बिहान ॥
ताविधि हरि मानन लगी जननी पुत्रहिमान ।
जगन्नाथ जहँ श्याम हैं तहँ सब सुखकर थान ॥

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसम्वादे
श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेधुंधुकबधवर्ण
नोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

दो० कहमुनि सुनहु भुआल अब कहो कथागोपाल ।
रचि याविधिखेलतभ खेल सुखद सँगग्वाल ॥
चौ० ग्रीषमऋतु जब आई राई । भूमितपतभई सब ठाईं ॥ वृन्दाबन महँ बस यदुराई । ग्रीषमभो बसन्त की नाई ॥ गुंजहिं मधुकर पुष्पन ऊपर । मोरनचहिं वृक्षन छायातर ॥ शीतसुगन्ध मन्द बहब्यारी । यमुना की पुनि लहरैं न्यारी ॥ तहँ हरि हलधर सखासमेता । केलि करत बहु कृपानिकेता ॥ कबहुं घुमहि चरखी कीनाई । कबहु आखि मूँदहिं हरषाई ॥ मुरलि बजाइ राग बहुगावैं । सुनि ग्वालन सब बहुसुख पावैं ॥ असुर

प्रलम्ब तहां पर आया । भेजा कंसरची तेइमाया ॥ मिला सकल ग्वालन में जाई । तिन्ह सन रूप बनाय सुहाई ॥ बहु ग्वालन कहँ लेइ उठाई । एक गर्त महँ रखालुकाई ॥

दो० अन्तर्य्यामी कृष्णतब । जाना कपट स्वरूप ।
हलधरतेकह सैनकरि यह निशिचरकुलकूप ॥

चौ० तब हरि दोदल सखाबनाई । जारिजोरि संग केलि मचाई ॥ श्रीदामा जोरा चिनचोरा । परलम्बासुर हलधर जोरा ॥ तहां परस्पर कीन्ह विचारा । जाके दलहिजाइ जो हारा ॥ ताके पृष्ठचढ़े जो जीते । याविधि खेलत कछुक्षणबीते ॥ विजयभई हलधरकी जाई । तेहि दल हारिगये यदुराई ॥ फल बुझोल लीलारह राजा । हारा असुर कपटकेसाजा ॥ हलधर पृष्ठअसुरके चढ़ेऊ । श्रीदामा हरिपर चढ़ि गयेऊ ॥ भयो असुर सबहींते आगे । योजन इकनभउड़ा अभागे ॥ निशिचरकार गोर संकर्षन । सोहहिं जिमि घनमें शशिकेतन ॥ सकर्षण कीन्हो तनभारी । महिपरगिरेऊ प्रकटिसुरारी । मुठिका एकमस्तकहिमारा । निसरा प्राण बमतलहुधारा ॥ ग्वालबाल सबही हरषाये । नभप्रसून देवन बरषाये ॥

दो० ग्वालबाल बहुसंग के रहे जुगर्त्तछिपाय ।
जायतिनहिंहरिलायऊधन्यधन्यदोउभाय॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासज
गन्नाथकृतेप्रलम्बासुरबधोनामअष्टदशोऽध्यायः १८ ॥

दो० भूपतिजबलगिग्वालसबदिखतरहे तेहिलास ।

गऊ गईं बढ़ि मुंजबन बेणुबजी मुखरास ॥
चौ० सुनतशब्द हरिपहँ आईं सब। यक निशिचर पुनि कंस पठौतब ॥ लाइदीन्ह पावक बन आते। तब ग्वालन उर अति बिकलाते ॥ शरणशरण कहिहरिपहँ आये। प्राणबचावहु श्रीयदुराये ॥ कह्यो श्यामतबमूंदहु नयना। मूंदिदिये सब तबसुख अयना ॥ अग्नि बुझाइ रजनिचर मारा। बट भांडीर पहुंचि गेग्वारा ॥ ग्वालन कहा नेत्र तबराजन। अग्निबुझी लखिभयेमुदित मन ॥ देखाआइगयेबटपासा। भाअनुरागअधिकहहरिआसा ॥
सो० पिये यमुनकेनीर सांझहोत हरिसँगचले।
गेह निकट यदुवीर कीन्हींबंशी रवसुखद ॥
चौ० ब्रजबनितनि सुनि तजितजिकामा। आईंजहँ लोचन अभिरामा ॥ रहीदशा यहगोपिनकेरी। दिनरहि ब्रत सांझे हरिहेरी ॥ भोजन करतरहीं हरषाई। जबमाता पहंगे यदुराई ॥ जननीलीन्ह गोद बैठारी। बेरभयो किमि कहु बनवारी ॥ ग्वाल बाल सब कह समुझाई ॥ निशिचर बधि यहअग्निबुझाई ॥ ग्वालन पितु बहुदान कराये। कृष्णकृपा बचि सबगृहआये ॥ हरि छविदेखि सकल ब्रजनारी। मोहितरही न कबहुं बिसारी ॥
दो० कोउ बहाने नीरके कोउ दधि बेचनहेत।
आइमिलैं श्रीकृष्णसे श्यामतिन्हेंसुखदेत ॥
चौ० एकदिन सबसखियनसँगराधा। गईं नीरलगि दर्शनसाधा ॥ कंकर फेंकि गगरि हरिमारी। मुसकत मोहलीन्ह ब्रजनारी ॥ कहहिं सखिन यशुमतिहिंसुना-

ई । ऊखल पुनि बँधवब यदुराई ॥ क्रोधित हरि गिडुरी छियछीनी । यमुनामहँ डुबाइ हँसिदीनी ॥ जाहुकहहु मातासनजाई । देखबकिन मोहिंदेहुबँधाई ॥ सखोजाइ यशुमतिहि सुनाई । कह नँदरानी सबहिं रिसाई ॥ बांधा रहा जबहि यदुराई । छाड़न कहति रही सब आई ॥ बहुरिदेन उरहनसबआई । फिरीसुनतसबहृदयलजाई ॥

छं० सबफिरीहृदयलजायतबहरिमातुसंकहहीबना ।
तटयमुनमोहिलेजाइमारिकबोलमहँगुलचाघना ॥
चलतठोकरलगतपगमहँ गिरपरत जबगागरी ।
तबकरतउरहननिकटआइकेमातुसुनुब्रजनागरी ॥

सो० सुनिहरिमीठेबयन मृषाजानिसखियनवचन ।
कहयशुमतिसुखअयनअबकहिहैतिन्हतोरुमुख॥

चौ० याविधिलीलाकरिबनवारी । रहेदेत सुखगोप कुमारी ॥ पूर्व जन्मकी प्रीतिसेभाई । राधा अतिमोहित यदुराई ॥ कहनलगी सखियन तेबानी । लोकलाज सब तजिय सयानी ॥ करिहौ पतिहरि असमति मोरी । ल- लिता कह सुनु राधागोरी ॥ मेरेउ हृदय बसो चितचोरा। जो पतिहोय तो हितनहि थोरा ॥

दो० राजन याविधि काटिदिन हरिके विरहबिहाल ।
सांझसमयश्चवलोकिकबि बुझवततमविशाल ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे
श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेदावाग्निमो-
चनोनामऊनविंशोऽध्यायः १६ ॥

देखा तसवीर नम्बर ३

दो० जब नृपग्रीषम कवला भये दुखी सबजीव।
तब नृपपावस सैनलै धावा अति बलसींव॥

चौ० घनगर्जत सोइ मारूबाजा। कड़खागानमोर कल राजा॥ बर्षतबारि सोइ तेहिबाना। दामिनि दमके जानु कृपाना॥ दल बादलकर सेना माहीं। बक उड़ाहिं सो ध्वजफहराहीं॥ नृपग्रीषम अस सेनादेखी। भागिगयोभयहृदयविशेषी॥ अष्टमास शोषारविवारी। सो बर्षतभइ महीसुखारी॥ जड़चैतन्य जीव जगजेते। नृपति सुखारिभयो सब तेते॥ फूलेपुष्प हरितभइ धरणी। वृन्दाबन छवि को सक वरणी॥ तहँ हरि हलधर सखा समेता। झुलत हिंडोलहिं कृपानिकेता॥

दो० रागमलारादिक बहुत करतसखी सबगान।
ऋतुपावस याविधिकढ़ी शरदपहूंचोआन॥

चौ० कहहरि सुनु संकर्षण भाई। या ऋतुहै सबहीसुखदाई॥ याहीदिन नृप करहिं चढ़ाई। सन्तनतीरथ करहिं सुहाई॥ वृन्दाबनथल अतिभल भाई। मेरो भक्ति सबहिउर छाई॥ जहँ हमलीन्हो हरि अवतारा। अस सुनिहलधर कहासुखारा॥ देहुमोहिप्रभु असबरदाना। जहँअवतरहु हमहुं सँग जाना॥ सुनि बोले हरि हर्षित भारी। तुम सँग लेब सदा अवतारी॥ तुम भ्राता मम प्राणसमाना। तुमसमान मोहिप्रिय नहिंआना॥ सुनि हरिवचन सबीहरषाये। ग्वालबाल सबकहहिंसुनाये॥

दो०मुरलीध्वनिप्रभुसुननचहु करहुकृपाकरिगान।
रागिनिकनिम रागषट तब गाये भगवान॥

चौ० सुनिमोहितभइ सब ब्रजबाला। खगमृगमुनन लगे सँगग्वाला॥ यमुनाजल भे थीर नृपाला। हरषि प्रसून सुरन झरिडाला॥ सब सखियन मिलि कहहि विचारी। मुरलीभइ अब सवति हमारी॥ रखत श्याम सन्तनउरलाये। धन्यभागसो बासहुंपाये॥ दूसरिसखी कहत सुनु प्यारी। सबऋतु महँ सो सहिदुख भारी॥ ठाढ़रही ताते हरिप्यारी। याते कौनअधिक तपभारी॥ बोलतरही सखिनअसजबहीं। आइगयेमनमोहनतबहीं।

दो० देखिश्यामछवि मुदितभइ ब्रजयुवतीसमुदाय।
जगन्नाथ सोइ मनहरण ममउरबसहुसदाय॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेपावसशरदवर्णनोनामविंशोऽध्यायः २०॥

दो० राजनमुरलीशब्दसुनि हरषिकहहि ब्रजनारि।
धन्य मृगन बनकेसदा दरशकरहिंबनवारि॥

चौ० कहयकधन्यभाग तिन्हकेरी। मुदितरहहिंसंतत प्रभु हेरी॥ धन्य धेनु जेहि कृष्ण चरावत। हरि लखि खगनजन्म फलपावत॥धन्यभाग भिल्लिनि ब्रजवासी। तृणमोचन के समय हुलासी॥ चन्दन गिरो छुटो हरि माला। चढ़वहिं आपनकाम भुवाला॥ धन्यविटप पुनि धनि यमुनाजल। धरतचरणहरि धन्यसोइथल॥ गिरि गोबर्द्धन भागसराहत। जापरचढ़ि हरि गायचरावत॥ धन्यकदँब असकहि ब्रजनारी। प्रीतिरखत जानी अव- तारी॥ जबहरि करु माया विस्तारी। जानेसखि पति दून महनारी॥

दो० हरिपद यांविधि प्रेमरह राजनसबव्रजनारि।
तिन्हकीमहिमाकहतकोउ सोकरुथोरविचारि॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेगोपीप्रेमवर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० राजन यकदिन सखिनसब कीन्होमंत्रविचार।
अगहन यमुन नहात जो पाव मनोरथसार॥

चौ० सोरहसहस सखिन सँग राधा। मज्जन करन लगीं अतिसाधा॥ चारि धामकी नारिन रहीं। अवध एक दुज दण्डकतहीं॥ तीजे वेदऋचा भइ नारी। चौथे गऊ लोकसुखभारी॥ करिअस्नान दिवस व्रतधरहीं। साझदरशि हरिभोजन करहीं॥ मृतिकाकी रचि शिवा सुहाई। पूजें निजनिजअर्थसुनाई॥ पूरणकरहु मनोरथ माता। जेहिहोवैपतित्रिभुवनत्राता॥ भातदधाकोभोजन करहीं। प्रीति अवलयदुपति पद धरहीं॥ मास दिवस बीतान्‍ृप जबहीं। भेप्रसन्नमुरलीधर तबहीं॥ एकदिवस मज्जनके अवसर। आयगये श्रीपति करुणाकर॥

छ० भेआइपाछेठाढ़ धरिकेरूप ज्यतनीग्वालिनी।
लगपृष्ठमरदनदेखिसखिगणजानिहैंयकहरिधनी॥
भेदऔर नजान और नजानि यकयदुकुलमनी।
कहहींहृदय भाअर्थपरण होहिंपतिगोकुलधनी॥

सो० पुनि आये बनवारि जहँ राखी ते सारि सब।
फारिसारिसबनारि भागिगयेयशुमतिसुअन॥
कहा सखिन समुदाय जाययशोमतिकेनिकट।
कहनँदरानिरिसाय लाजनआवनतनिकमन॥

चौ० लघुबालकपरपापकेनयना । देखहुतुमयुवतीरस अयना ॥ सुनतभवनसबकिनी लजाई । दिवस एकपुनि यदुकुल राई ॥ चीरउतारि यमुनदियपैठे । हरितबलेय कदंबचढ़ि बैठे ॥ मज्जनकरि पट खोजन लागी । टेरत बंशी हरि अनुरागी ॥ मांगन लगी देहु यदुराई । कहा श्याम तबहीं मुसुकाई ॥ इक इक जबलोंनिसरिनऐहो । तबलौं आपनचोर न पैहो ॥ कह राधासुनिये बनवारी । नग्न न देखियपरकीनारी ॥ तदपिन चीरदीन्हबनवारी । यक यक तब निसरी ब्रजनारी ॥ जब तजि कपट आइ यकएका । चीरदेइ प्रभु कहत बिवेका ॥ जलमहँ रहत बरुणको बासा । नग्न नहातसुकृत ह्वैनाशा ॥ ताते मैं सुधि दियउँ कराई । मज्जनफलपैहहु समुदाई ॥ प्रीति देखि हम भये सुखारी । शुक्र कुवार पूर्णिमा नारी ॥ रास करिय सब अर्थ पुराऊं । जाहु सकल अब निज निज ठाऊं ॥ सुनि सब सखिन गईगृहओरा । लागि रहीसूरति चितचोरा ॥

दो० हेमबनिज निज गृहगईं बंशीबट हरिआइ ।
लेइ सखाअरु गायसँग गयेगेह जहँमाइ ॥
कहनृपह्वैप्रभुजगतपतिकाहकियेअसकाम ।
नग्नविलोकेसखिनकहँबोलेमुनि सुखधाम ॥

सो० नग्नहोइजो नारि मज्जन जल तेहिपापबड़ ।
पापछुटेनहि भारि जब न देखावे नग्न केहु ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेचीर हरण वर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

दो॰ भूपतियकदिन बनगये कृष्ण ग्वाल बलराम ।
ग्वालन भेअति क्षुधित तहँतबबोलेघनश्याम ॥

चौ॰ इतमथुराके चौबे रहही । बनचहिं पाक यज्ञते करहीं ॥ जाइ कह्यो हरि मागहिं खाना । गे ग्वालन सबकीन्ह बखाना ॥ हरि महिमा नहिं जाननिदाना । कहन लगे बिप्रन रिसियाना ॥ हमकरै पाकसुरन मख हेतू । ये मांगत भोजन गोकेतू ॥ असमुनि सबलज्जित फिरआये । समाचारसबहरिहिं सुनाये ॥ पुनिहरिकहा बहुरिसब जाहू । चौबाइनते मांगिकेलाहू ॥ मांगनगेतिन्ह ग्वालन जबहीं । अति आनन्दित भई सुनिसबहीं ॥ जाहिभजो सोइमांगन खाना । असकहि लेइचलींपकवाना ॥ चौबेएकरोकि निजनारी । दीन्हेसिजान न जहँ बनवारी ॥ राखी बन्दएकगृह माहीं । ताकर चित्तरहा हरिपाहीं ॥

दो॰ निसरिप्राण गा हरिनिकट पाछे पहुंचेनारि ।
आइके नाये हरिहिशिर तबबोले बनवारि ॥

चौ॰ बिप्रहोयजनि नावहु माथा । दोषहोत बड़कह यदुनाथा ॥ हैं अहीरहम नन्दके ढोटा । तुमद्विजहौतुमते बहु छोटा ॥ तेकह हमन संग एकनारी । आवतकैदपुरुष करिडारी ॥ तुमहूते प्रथमहि यहआई । जस जेहि भक्ति सोइतस पाई ॥ दिखादीन्ह सोइतिय बनवारी । देखिसबनि अस्तुति किय भारी ॥ कहाकृष्णलावहुनहिंबेरी । जाहुहोत मखमें अतिदेरी ॥ जाउ न अब प्रभु

पतिके आसा । दीन्हीं छांड़ि रखननहिं आसा ॥ कहहरि नहिं करिहैं कछु काहू । गइ तब गृह सुमिरत जगनाहू ॥ विप्रन जब निज त्रियन निहारी । ज्ञानभयो तिन्हकहँ बड़ भारी ॥ हमन गर्व बशहरिहि न चीन्हा । नारिनदरशि जन्म फललीन्हा ॥

दो० सोद्विजगृह देखनगयो मरीनारिकहँ देखि ।
अति बिलापलागो करन नारिनकहतेहि पेखि ॥
तवतियहै हरिकेनिकट सुनत गयोजहँश्याम ।
भयो चतुर्भुज नारिसँग गयोकृष्ण केधाम ॥

सो० तबहरिसखा समेतभोजनकरि गृहको गये ।
देखिकेयदुकुलकेतु भईसखिन हर्षितहिये ॥

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णदासजग-
न्नाथकृतद्विजपत्नीयाचनो नामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

दो० सुननृप कृष्णा चतुर्दशि कार्त्तिकमासहुलासि ।
पूजतरहे सप्रेममिलि इन्द्रहि सब ब्रजबासि ॥

चौ० सो दिनआइगयो नृप जबहीं । बनन मिठाइ लगी गृहसबही ॥ यशुमति पकवायो पकवाना । रखत हेत डरते भगवाना ॥ जानेऊ नहिं यह देवनदेवा । हरि भयछुवनलुकावत मेवा ॥ इतहरिअस उरकीन्हविचारी । पूजियगिरि गोवर्द्धन भारी ॥ पूछनलगे नन्दसे जाई । कौनदेवकी होत पुजाई ॥ सुरपतिकी पूजा यह अहई । वर्षतवारिसबोसुखलहई ॥ कहहरि देवनको पतिजानी । पूजिय इन्द्रहि नहिं सुखमानी ॥ चाहिय करन ताहिकी सेवा । जोहैं सब देवनके देवा ॥

छं० सबदेवसुर जेहियज्ञकरि भा इन्द्रदेवन कोपती।
तेहित्यागपूजनइन्द्रपूजानीकनहिसुनममनती॥
जामेहोवतप्रतिपाल जेहिबनघासखाईगाइयां।
दधिदुग्धवेचिकेजीविकाहोवतसकलसुखदाइयां॥
अवपूजियेगिरवरकहत हरिनन्दसुनहर्षितभये।
कहिसकलब्रजबासीमहरतवसंगलयगिरिपहंगये॥
फल फूल मेवामधुरषटरस खीरबहुबिधिलैचले।
बरा पकौरी दधिहिबोरी औ मिठाई सबभले॥

सो० पहिरि वस्त्र भलबाम। नन्दसतियबलरामहरि।
गयेगोवर्द्धन धाम। पूजनसब मिलिमुदितमन॥
धरिमेवा पकवान। कहा कृष्ण गिरिध्यानकर।
धरा सकल जब ध्यान धर्यो चतुर्भुजरूपहरि॥

चौ० खोलनकहा कृष्णतब नैना। दरशिगोवर्धन भे सुख अपना॥ नन्द यशोदा सहित गुवाला। कहहि सकल अति मुदित बिशाला॥ अस प्रत्यक्षसुर तजि कै कैसे। पुजतरहे सब शक्र हमैंसे॥ खानलगे गिरि सब पकवाना। कहन लगे मांगहु बरदाना॥ देत प्रसाद आपगिरि जबही। होहिसकल आनंदित तबही॥ पुनि गिरिभय तहं अंतरध्याना। नन्द रायदीन्हो बहुदाना॥ निशितहं रहि जबभयो बिहाना। निजनिजगृह गोपन प्रस्थाना॥ ललिता कहसुन राधारानी। यामहिजुक्ति नन्द सुत ठानी॥ राखि लीन्हगोबर्धन रूपा। खायेस ब पकवान अनूपा॥

दो० राजन अन्न कूटकी। पूजा भई प्रकाश॥

तादिनतेजबकीन्हहरियहलीलासुखरास॥

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेगिरिगोवरधनपूजनोनाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

दो॰ तादिन भइ पूजा नहीं। तवकोपेउ सुरराउ॥
मेघ राजकोवोलिके। कहाब्रजहिं झरिलाउ॥

चौ॰ मेघराज जब आयसु पावा। मेघनसहितजाइ झरिलावा॥ भये आतुर सवही ब्रजबासी। सरन गये यदुपति अबिनाशी॥ कहहरि जाहु गोवर्द्धन पांही। सोइ सभन कर प्राण बचाही॥ गये सकलगोवर्द्धन पासू। नखपरटेक लीन्ह सुखरासू॥ सप्त दिवस मेघवा झरिलाये। कृष्ण कृपाकोउ दुखनहिपाये। गिरिवर तरसब रहे सुखारी। चक्र सुदरशनसोखतबारी॥ कृष्ण चन्द्र शशि वदन निहारी। क्षुधारहित भईसब ब्रजनारी॥ घटानीर जब सब सुर राई तवजानी महिमा बलभाई॥ निसरीधूप तबहिं यदुराई। दीन्हों राखि गिरिहि हरषाई॥ मातासुतकर हाथ दबावा। टेकत गिरि प्रभुबहु दुखपावा॥ कहहिं सखिन हरिते मुसुकाये। हमन गेह माखन बहुखाये॥ ताकेबल टेक्यो गिरि भारी। मुसुके सुनत गोवर्द्धनधारी॥ हरि आयसु ते पुनि ब्रजबासी। पूजनकरि गिरिवर सुखरासी॥

दो॰ निजनिज गौवन लेइके चले कृष्णके साथ।
आये गृहमें आपने गुण गावत ब्रजनाथ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेब्रजरक्षावर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः २५॥

दो॰ ब्रजबासी जब गेभवन कहहि परस्परबात।
अष्टवर्षकी उमरमें टेका गिरि बल आत ॥

चौ॰ बालहु में बहु लीला ठनी। पुतना तमीचरी को हनी ॥ सकटा बकाअघासुर मार्‌यो। वत्सादिकनिश्चर सहार्‌यो ॥ यह नहिं तनय नंदकेआही। देवनकोउगये यशुदाही ॥ तेहितेजन्मलीन्ह बलभारी। देवनंद जातिहु ते निसारी ॥ असजियठानि नंदपहंआये। भाषे तबनंद-राय सुनाये ॥ सुनीरही नहि गर्गकी बानी। कृष्णजन्म अवतार बखानी ॥ जन्मलीन्ह वसुदेवकेगेहा। वासुदेव नामाधरि देहा ॥ पूर्व्वजन्मके तपते भाई। पायों मैं त्रि-भुवनको राई ॥

दो॰ सबकेउर विश्वास भो लीन्हों हरि अवतार।
अपनें अपने घर गये सुमिरत नदकुमार ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृते व्रजवासीसन्देह वर्णनो नामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

दो॰ देवन सब जब इन्द्रको भाषा भेद कन्हाइ।
भक्तिविवश ब्रजअवतरे भाशोचित सुरराइ ॥

चौ॰ क्षमाकरावन निजअपराधू। चढ़िऐरावत ले सुर साधू ॥ कामधेनुकहं करिके आगे। आवा कृष्ण निकट अनुरागे ॥ दूरिहिते यदुपति कहं देखी। लागाअस्तुति करन विशेषी ॥ त्राहित्राहि गोवर्द्धनधारी। मैं जानातुम हौ अवतारी ॥ जय यदुकुलमणि ब्रजदुखखंडित। मोह सकलभव टारन पण्डित मायावशअसकीन्हढिठाई। सरणआयअबयदुकुलराई कामधेनुबहुअस्तुति कीन्हा।

तव अपराध क्षमाकरिदीन्हा ॥ कहहरि सुन देवनके राऊ । तुमहिंदेखि अभिमान स्वभाऊ ॥ गिरि गोवर्द्धन को पुजवाये ॥ दीन्ह तेहारे गर्व नशाये ॥

दो॰ कामधेनु निज दुग्धते नहवाई यदुराय ।
गोविन्दनामपुकारिहरिसहसनयनहरषाय ॥
चरणोदकलेइ श्याम के विदाहोइगा धाम ।
देवसुमनबरषाकियेकहिधनिधनिघनश्याम ॥

सो॰ सांझहोत सुतनंद आये माताके निकट ।
गावहिंजोआनन्द पावहिंचारिपदार्थनर ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेइन्द्रस्तुतिवर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः२७ ॥

दो॰ कार्त्तिक शुक्ल एकादशी व्रतकीन्हो श्रीनन्द ।
यमुनातट मज्जन गये हृदय परम आनन्द ॥

चौ॰ निशि एकपहर रही नृप तबही । वरुणदूतधरि लैगो जबही ॥ जानावरुण पिता हरिकेरे । उपज्यो उर आनन्द घनेरे ॥ जबअइहैंप्रभु इनहिंछुड़ाना। पैहौंदरशन श्रीभगवाना ॥ सादर आसनदै बैठारी । इतभइ दुखित सभी व्रजनारी ॥ धीरजदीन्ह श्यामतिन्हआई । लाउब मैं निजपितहिं छुड़ाई ॥

दो॰ असकहिहरिलावनगये पैठेजलबिचजाय ।
सिंहासन बैठारिके वरुणकहत शिरनाय ॥

चौ॰ जन्मसुफलभाअबप्रभुमोरा। दरशभयोश्रीपति चितचोरा ॥ धन्यधन्य गोकुलब्रजबासी । महिमाअकथ नन्द यशोदासी ॥ असकहि बहुविधि पूजनकीन्हा । तब

पितुसहित बिदाकरिदीन्हा ॥ भये मुदित मनसब व्रज-
बासी। को कह हरष कथा यशुदासी ॥ व्रजबासी कह
हृदयसुखारी। दरशावहु वैकुण्ठमुरारी॥ निशिमहंसयन
किये जबसबही। कृष्णकृपा देखाअसतबहीं ॥ धरणी
कनक कनक सबबासा। बापि तड़ाग सोह चहुँपासा ॥
रतनजड़ित सिहासनमाही। रमासहितबैठेहरिताहीं ॥
दो० चहुंदिशिदेखापारषत औतैंतीसकरोर।
देवनठाढ़े हैंतहां अस्तुति कीहै शोर ॥
चौ० बोलन चाहा हरिते जाई। पाये जान न तहं यदु-
राई ॥कहन लगे मोहियातेबृजभल। रहौंसंगजहं मोहन
बोबल॥ कीन्हाध्यान जवहियदुराई। आयगये सबनिज
निजठाई ॥ यही उपासन रीति सदाई। रहे उपासक
श्रीयदुराई ॥ बिना उपासन नर सम अहही। नारि पुरुष
बिन ग्रन्थन कहही ॥ एक दिवस पुनि कुंवर कन्हाई।
श्री दामा सन कहा सुनाई ॥ वृन्दाबनते मथुरामाहीं।
बृज नारिन दधि बेचन जाहीं ॥ दान लेन दधि चाहिय
भाई। पांचसहस्र सखा समुदाई ॥ संगभोरही गै यदु-
राई। उतराधादिक गोपिनआई ॥ कहहरिदेहु हमारो
दाना। नाही तो पैहहु नहिंजाना ॥ सुनत बचन अस
गिरिवरधारी। कहत सखीसुन कुंजबिहारी ॥
छं० सखिकहतदधिकरचोरिजबउरक्षुधानहितुम्हरीटरी।
अवदान मांगत रीतिठानत जो न कुल काहूकरी ॥
नृपकंस ते जब कहब ऐसी रहठेकानन नन्द के।
सुनिसखिनवानीकहतजिमिउत्तरसुनहुब्रजचन्दके॥

मोहिजानि बालक लाइचोरी कहतरह नंदरानिसे।
लेउसकलकसरचुकाइसबदिन लेइदधिनिजपाणिसे॥
पुनि कंसजाके गर्वसबसखि रहहु मन हुलसाइके।
तेहिमारि श्रीउग्रसेनकहं करिहोन्नृपतिहरषाइके॥
तुम दानकी जोरीतिकरिहो भागि है ब्रजदेश ते।
कहकृष्णनहिंकोउलोक असजोरहितममपरवेशते॥
तबहारिसखियनदधिखिलाई मटुकिभरिरहिहरिकृपा।
जबराधिकाकेखाइदधिप्रभुकहनलगेहरिषितगिरा॥
यहदधिसभनते अधिकमीठो चाहि हरिखानेलगे।
सबसखामिलिदधिखालियेतब श्यामगैबनकेमगे॥
इतसखिनगइगृहराधिका उरप्रीतिअतिलागीरही।
तबआइ बंशीबट निकटहरि अर्थपूरणकिय सही॥

सो० राधापुनिदिनएक निजछविदर्पणदेखिके।
हरिमाया की टेक जानेउहैकोउनारियह॥

चौ० मायाकेवशकहबौरानी। यासमसुंदरिनहिंकोउ आनी॥ हरिकहंमोहतियहब्रजनारी। सुनतझरोखेतेवनवारी॥ मूंदेनयनराधिकहिआई। दरपणउलटिदीन्हहरषाई॥ दीन्होंनयनछुरिहरिछाड़ी। जानिप्रीतिप्रीतमउरबाढ़ी॥ ललिताअरुचन्द्रावलिआई। प्रीतिदेखिराधाहरषाई॥

दो० लीलाअमितअपारप्रभु कोजगवरणैपार।
निरगुणतेसरगुणभयेभक्तिबिबशअवतार॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कलेवरमथुरागमनोबैकुण्ठ चरित्रदानलीलावर्णनो नाम अष्टविंशोऽध्यायः॥ २८॥

दो० राजन यह अध्यायमें कहौं कथा सुखदाय।
जाबिधि रास रचे हरी संगसखिन समुदाय॥

चौ० चीरहरनके समय बिहारी। कहा रहा सबही ब्रजनारी॥ रास शरदपूनोमें करिहौं। पूर्ण मनोरथकरि दुखटरिहौं॥ सोईदिन पहुंच्यो नृप आई। तीनि घड़ी निशि बीती जाई॥ आये विपिन माह यदुराई। परम सुहावन हरितबनाई॥ उदित मयंक यमुन लहराई। बैठे तरुतर मुरलिबजाई॥ सुनत शब्द ब्रजबालनधाईं। तनमनकी सब सुधि बिसराईं॥ भोजन करतरही जो नारी। जूंठेहाथ तहां पगुधारी॥ रहीजोशयन करतपति साथा। तुरतछांड़िगइ जहं यदुनाथा॥

दो० कोऊरहिकज्जल करतकरि एक नयनहिमाहिं।
करकंगन पगमे पहिरि कोउगईं हरि पाहिं॥

चौ० चादरि पहिरि ओढ़ि कोउसारी। याविधिगईं निकटबनवारी॥ पुरुषएक कोऊ ब्रजनारी। दियोनजान जहां गिरधारी॥ प्रेमातुर गौनिसरि पराना। पहुंची जहंरहे कृपानिधाना॥ मुक्तिताहि तुरतहिहरि दीन्हा। सुनि परीक्षित प्रश्नअसकीन्हां॥ कामातुर तेइ मरी गुसाईं। मुक्तिदीन्ह किमि कुवंरकन्हाईं॥ कह मुनिजो नर कपटहित्यागी। बैर भाव वा प्रेमबिरागी॥ काहू विधि भजही भगवाना। पावहिमुक्ति अवश्यनिदाना॥ पूतना बैरभावकरि जाना। ताकहमुक्तिदई भगवाना॥ यशुदा पुत्र पुरुष ब्रजनारी। मुनिन ब्रह्मगति एकबिचारी॥

दो० राजन सखियन मध्यमें सोहत किमि ब्रजचंद ।
जिमि उड़गण के बीचमें सोह मयंक अनन्द ॥
गोपिन प्रभु पूछत भये या बिधि दीनदयाल ।
तुमसब ब्याकुलआयकिमि कहुमोतेंनिजहाल ॥

चौ० सुनुसखि बेद कहतअसबानी । भजेनारि निज पति सोइस्यानी ॥ काना कूवर लूल गवारा । कोढ़ीअव-गुण निरधनभारा ॥ ईश्वर तुल्य जानसो ताही । होत ताहिदोउलोक निबाही ॥ निजपति छांड़िभजैजोआना । निंदे जगपरलोक नशाना ॥ भोगहेतु जो आयहु ठानी । पतिते भोगकरन नहिं हानी ॥ सुनि शोचातुर भईब्रज-नारी । कहन लगी तबएकबिचारी ॥ सुन चितचोरहमन तव दासी । पूरणकरहु आस अविनाशी ॥ वन्शी टेरिके लियोबुलाई । अबकाहे ठानी निठुराई ॥ तुमहींहो पति मेरेसाईं । देखिप्रेम तिन्हकेयदुराई ॥ रासस्थान बनावन हेतू । माया ते भाषा ब्रजकेतू ॥ रचीसोजाइ चबूतरएका। लालमणिन तहं खचित अनेका ॥ रास वस्त्र गोपीगण केरे । बाजन रासलगे तह ढेरे ॥ करिशृङ्गार पहिरि सब सारी । गईं निकट सब जहं बनवारी ॥ निज स्वरूप ते राधासाथा । बीचहिं ठाढ़भये यदुनाथा ॥ चहुं दिशिघेरि सखिनबैठारा । दोदो मध्यरूप यरुधारा ॥ तिन्हकेबिच हरिसोहहिं कैसे । कनकहार नीलामणि जैसे ॥

दो० कबहूं मुखचुम्बतहरी कबहुं करतहैं गान ।
आगे आगे सखि चली पाछे ते भगवान ॥
हरषितभइसबयूबतिन सुरदेखतपछताय ।

गोपिनकहँ अभिमान भा वश कीन्हों यदुराय ॥
अन्तरयामी कृष्णतब जानि सबहिं अभिमान।
भानुसुता संग लेइके होगये अन्तर्द्धान ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्वादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृते रासक्रीड़ावर्णनो नामऊनत्रिंशोऽध्यायः २६ ॥

दो० भे हरिअन्तर्द्धानजब गोपिनभईंदुखारि।
गईं कुंजमें खोजने मिले नहीं बनवारि ॥

चौ० कोउकह सखी भजन नँदलाला। देखीहै तब कह सो बाला। अरीबावरी देखत्यूंजबहीं। जानकतहुँ को देत्यूंतबहीं ॥ या विधि विकल भईं सब बाला। तरुते पूंछहिं हरिकोहाला ॥ हेतुलसीवर गूलरिनींबा। जातदेख्यो हरिधों सुख सींवा ॥ हे दाड़िम अशोक के रूखा। कहि हरिगमन मिटावहु दूखा ॥ हेकेतकि अरु जूही घरनी। तुम जानहु कछु हरिकी करनी ॥ कहा न कोउ भेउ यदुराई। भईं विकल सखियन समुदाई ॥ हरिपदरेख सखी यकदेखी। भई अनंदितहृदयविशेषी ॥

दो० आगे देखा नारिपद कहनलगीं सब कोय।
सबते राधाअधिकप्रिय गईंश्याम संगहोय ॥

चौ० पुनि आगे दर्पण यकदेखी। सवतिडाह भइ हृदयविशेषी ॥ होइहैं गुहत राधिका चूटी। दर्पण गयो याहितेछूटी ॥ पुनि आगे राधा मिलिगईं। ताहुदुखित ते देखत भईं ॥ तबउर भयो कछुक संतोषा। कह राधा

देखो सम्वाद नम्बर ५

मोहुप विधिशेषा ॥ राधाहू कहँ भा अभिमाना । तजा याहिते कृपानिधाना ॥ हरिनहिं मिले रुदन सबठानी। लगी कहन यक सखी सयानी ॥ कछु नहिंसरै रुदनते कामा । उरसेभजहुश्यामसुखधामा ॥ सबमिलि फिरहिं चबूतर पासहिं । सुमिरन करनलगी अविनाशहिं ॥

दो० जबजबगाढ़परेउप्रभु तबतबकीन्हसहाय ।
याहीजोइच्छारही क्योंगिरिदियोबचाय ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेगोपीविरहवर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः३० ॥

दो० मन्दमन्द मुसुकान जब आवत उरमें श्याम ।
तबतबदुखपाऊंमहा सपदिमिलहुसुखधाम ॥

चौ० भृकुटीमटक लटक हरिबाता । आवतहृदयहोत दुखदाता ॥ धेनुचराइ सांझ फिरि आई । देतरह्यो दरशन सुखदाई ॥ जोपदरज ब्रह्मा नहिंपावैं । जोरज सुर मुनि ध्यान लगावैं ॥ जो पग रमा मलत निशि वासर । सोइपददरशदेहु करुणाकर ॥ गोपीनाथहैतुम्हरोनामा । वृथा नामहै सो सुख धामा ॥ विरहाकुल जो निसरत प्राना । दरशदेइ का होत निदाना ॥ निहकुलहोय जो तवपदनेहू । करिकिरपा प्रभु दरशन देहू ॥

दो० तदपि न दरशनदीन्हप्रभु मूर्च्छिपरीमहिमाहिं
तजिहौं जीवनप्राणपति दरश जो पैहौंनाहिं ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृते गोपीविरहकथनोनाम एकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

दो० देखिप्रीति ब्रजनारि गण प्रकटभये भगवान ।
जिमि माया ते नट सकलनिज ह्वै अन्तर्द्धान ॥

चौ० सुधारूप देखत ब्रजनारी । भईं विगत श्रम परमसुखारी ॥ फूलीउर आनन्दित कैसे । दिनकरउदय जलज नृप जैसे ॥ कहि न सकतकोउ तिन्ह आनन्दा । भईं दरशि जिमि परमानन्दा ॥ चुंबत बदनकोउ लपटतछाती । कहनलगी राधा यहि भांती ॥ हम न तजी प्रभुतवहित लाजा । अस निठुराइ कीन्ह केहि काजा ॥ कहहरि उचित नरहि असबाता । निशिगृह तजिआईं बिकलाता ॥ बहुविधि कहि तब वचन रसाला । दीन्हो सुख गोपिनगोपाला ॥ सखियककहत सुनहुचितचोरा ॥ मनते भागि सकहु नहिं मोरा ॥

दो० राधा गल लपटागई सखी एक सुखमान ।
निजओढ़नी बिछाइकै बैठारेउ भगवान ॥
भिन्नभिन्न हरिसबन ते कियगंधर्वविहार ।
सबकेमनपूरणकिये ब्रजपति नन्दकुमार ॥

चौ० सखीएककह तुमबनवारी । कपटकरियदीन्हो दुखभारी ॥ यककह नरजग चारि प्रकारा । कह हरि सबते कौन उदारा ॥ एककरे भल भलेकिये के । अपर रखे यकप्रेम हिये के ॥ तीजे मन्दकरत करनेका । हितू करत कर मन्दहै एका ॥ सबते भल जो करत भलाई । दूसररख जो प्रीतिइकाई ॥ जोहित करतकरै तेहिहाना । ताते अधम न कोउ जगआना ॥ तीनहुंते भल सोइ जग माही । हित जग करत मन्द उरनाही ॥

दो० सखी एकहू सेनकरि चोथे नरहैं श्याम ।
कहहरि मैं निरगुणसदा नहिंचारोते काम ॥
कहीजु तुमकाहेभज्यो सखियनकोछिटकाय ।
प्रीतिपरीक्षाकरतरहुं सुनसखियनसमुदाय ॥
देखहु तुम्हरी प्रीतिभलि कीन्होवशमनबैन ।
तुम्हरो ऋणिया होइरहौं पलटा सकौंनदैन ॥

सो० अबजनिहोहुनिराश मबकहँसुखदीन्हौंअधिक ।
करिकै रास विलास कहत भये आनन्द घन ॥

इतिश्री.कृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ
कृतेगोपीकृष्णसम्बादेवर्णनोनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

दो० पुनि दो गोपिन मे प्रभु धरे एक यकरूप ।
निजकरधरिकर सखिनकहँ लीलाकरहिंअनूप ॥

चौ० देवन सब विमान चढ़िआये । हरषित हृदय सुमनवरषाये ॥ देखतछवि अप्सरा लुभाई । पगघुंघुरगा अवनि खसाई ॥ शशिहवै ठाढ़देख हरिशोभा । सुर कन्यादि देखत हरिलोभा ॥ सो निशिभईभूपषटमासी । जानन कोइ चरित्र अविनाशी ॥ प्रेमरात्रि सो निशिको नामा । भयोप्रकट जगसुनुसुखधामा ॥ लसतविन्दुश्रम भाल विशाला । निर्तत थकितहोत जब बाला ॥

छं० निरततथकितह्वै कोइबालाबैठिजातिजोअवनिमें ।
हरि कृपा ताल न भंगहोवत उठि नचत सोठवनिमें ॥
कोउ हरषि धरियदुनाथ कांधे कहत प्रभुमोहिंल्यागहू ।
कोउकहतघड़कतछातिकोउ कहउरतोकमिप्रभुभागहू ॥

सो० राजनयाविधि श्याम मुरलि बजावतरासरचि।
मोहित भईं ब्रजवाम सुननराग अनुरागिनी॥
निरतत कबहूं श्याम मुकुटमाथ ते गिरिपरत।
कबहुंसारिब्रजबाम उलटि गात शोभाअधिक॥

चौ० कोउसखी बन नन्द स्वरूपा। कोउ बन वृष-भानके रूपा॥ करत बिवाह श्याम अरु श्यामा। को महिमा कहिसक ब्रजबामा॥ अन्तमुक्तिपाई ब्रजबाला। तिनतिन कुल लगि तारे ग्वाला॥ करि विलास पुनि गिरिवरधारी। यमुनामहँ गैसँगब्रजनारी॥ करिअरु गान बिहार बिहारी। कहनलगे सुनहू ब्रजनारी॥ अब निज निज गृह जाहू सबहीं। कहनलगी ब्रजबाला तबहीं॥ तुम तजिजाऊँन कुंदरकन्हाई। उतरदीन्ह तब श्रीयदु-राई॥ मनते सुमिरन करेहु हमारी। निजनिजगृह तब सखिन सिधारी॥ चारिघडी बाकीरहि राता। माय ते हरि त्रिभुवन दाता॥ सोवतरहे गोपसबगेहू। गोपिन गमन न जानेउ केहू॥

सो० जो नर प्रीति समेत पंचाध्यायी राम हरि।
कहहिंसुनहिंनरकेत भक्तिमुक्तिपावहिंसदा॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णरामजगन्नाथ कृतेपंचाध्यायरासलीलावर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

दो० नृपतिदिवसयकनन्दजू कहासबहिहरषाय।
रही मानता भाषित जन्म समय यदुराय॥

चौ० कृष्णहोय जब द्वादश वर्षा। पुजों अम्बिका मातु स हर्षा॥ सोइ दिन आइ पहूंचो भाई। सुनि ब्रज-

वासिन सुखअधिकाई ॥ लेइसामग्री पूजनसबहीं। गवनै बल मोहन सँग तबहीं ॥ पहुचे जहां देवि के आसन। धरेरहे जो पूजनबासन ॥ विधिवतपूजि अम्बिकामाता। विप्रजेंवाये तब हरिताता ॥ पूजापरिकरमा पुनिदाना। दिवसबीति गा याहिविधाना ॥ धरिव्रत निशितहँ तब रहिगयऊ। ह्वै अचेत जब सोवत भयऊ ॥ उरग एक तेहि अवसरआवा। अर्द्धनन्द पग निजमुखनावा ॥

दो० नन्दराय जागे सबन लगे पुकारन ग्वाल।
जागिसकलदेखनलगे देखापगमुखव्याल ॥

चौ० अमित लकुटते मारनलागे। तदपि न व्याल नन्दपगत्यागे ॥ कृष्ण लाल कहँ ग्वाल जगाये। रखा पृष्ठतेहि पद यदुराये ॥ लागतचरण छांड़ि पगनन्दहिं। प्रकटभयो यक पुरुषअनंदहिं ॥ अस्तुतिकरनलगो यदु-राये। कहहरि को तुमकहँ ते आये ॥ रहा हंसपुर बास हमारा। नामसुदर्शन धन गर्वभारा ॥ चढ़िबिमान पर दिनयकजाते। मुनि अंगिरा कुब्ज तनताते ॥ हंसितिन ऊपर कियों विमाना। परछाही मुनि दीख निदाना ॥ देखिगर्व दीन्हो असशापा। दरशि चरण मिटिगा अब पापा ॥ चढ़िविमान तेइ सुरपुर गयऊ। देखिचरितसब चक्रितभयऊ ॥ जाना हरिलीन्हो अवतारा। गये प्रात गृह गोप गुवारा ॥

दो० दिवसएकप्रभु रासरचि गावतसँग ब्रजवाम।
तेहिक्षण दूत कुबेर को शंखचूड़ जेहि नाम ॥
तेहिमाथे यक मणिरही सुनहुनरेशसुखारि।

देखिमगनतेइ सबहिंकहँ भागालैकछुनारि ॥
बशीशब्दहिसुनिमखिनकीन्ही हरिहिंपुकार ।
हरि हलधरको राखितहँ कीन्हे मुष्टिप्रहार ॥
ताहिमारिमणिसाथलै कीनिसकलब्रजनारि ।
जगन्नाथहर्षितफिरे मणिदिये बलहिंमुरारि ॥

सो० आये तब गोपाल संग सखिन गृह आपने ।
करतसुखीब्रजबाल करियाविधि लीलामहिप ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृते सुदर्शनमोक्षशंखचूडवधोनामचतुस्त्रिं शोऽध्यायः ३४ ॥

दो० सुननृप जबलग कृष्णजू आये धेनुचराय ।
तबलगसबब्रजगोपिका गावेयशयदुराय ॥

चौ० कहहिं सखी सबमिलि असबानी। सुनहु शब्द बंशी जबकानी ॥ लागिजात चित जहँ चितचोरा । सुधिनरहत सखि कछु मनमोरा ॥ एक कहत बंशीअति प्यारी । सुनतशब्द रीझतसुरनारी ॥ कछु टोना जानत यदुनाथा । वशकरिलेहिं गाइगुणगाथा ॥ मोहतनारिन कछु बडबानी । पशु पक्षी मोहहि सुनिगानी ॥ राजन जबलगि हरि नहिंआवें। याविधि सखिन हृदयपछिताबें ॥ सांझ समय जब मिले मुरारी । पाइ दरश सब होहिं सुखारी ॥

दो० दिवस एक शोचत भये मुरलीधर गिरिधारि ।
बहुआरत दीन्हो सखिन क्षमा करावो सारि ॥

चौ० कहहरि सुनुराधा ममबानी । तुमते अधिक न प्रियमोहिआनी ॥कहौंतोहि सौगन्दसुनाई ।कबहुंनजाउँ

आनतियपाई॥राधाते मिसकरि यदुराई। गयेकुमुन्दा गृहहरषाई॥ तेहिक्षण आइराधिकादेखी। भयउ मान उरमाहँ बिशेषी॥तबपगगिरि राधिकहि मनाई। रंग खाय मनआश पुराई॥ सखिललिताकहँ आवत देखी। रोकामग हरि मुदित विशेषी॥ कहसखि तुमधरो झूंठो नेहा। आयोनहि कबहूं मम गेहा॥ कहहरि आज आउँ तोहिं ओरी। भई मुदित सुनतहिं सोगोरी॥ जाइबि-बिध बिधि किय शृङ्गारा। बैठे बीति गई निशि सारा॥ गयेनही तहँ यदुकुल राई। सैलाके गृह रहे लुभाई॥ प्रात समय ललिता गृह आये। कहन लगी तब सखी रिसाये॥ अवधौं कहाकाज प्रभुआये। जाहुजहाँ जहँ रैन गँवाये॥ ताहु मनायो कुंवर कन्हाई। शयन संग करि आश पुराई॥

दो॰ याबिधिगृहचन्द्रावली अरुसुखमादिकनारि।
जाइकै क्षमाकराय हरि राशिककुंजबिहारि॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास ज न्नाथ कृते गोपीगीतमानलीलावर्णनोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

दो॰ आयोफागुनमासजब सखियनसँग यदुराय।
जाविधिखेल्योफागुन्प कहोसोइ समुझाय॥

चौ॰ पहुचा फागुन जबहिं महीना। होली खेलहिं सखिनप्रवीना॥ नन्दकिशोरग्वालदल संगा। उतसखि-यनमिलिडारहिरंगा॥कोउझरोलन डारिअबीरा। गारी देहिं सखिनयदुबीरा॥ सुनितिन्हगारि कृष्णमुरकाहीं। बरसानेगै पुनि राधाहीं॥ करि शृंगार तहं राधागोरी।

खेलनलगी कृष्णसंग होरी ॥ कहन लगी सुनहू ब्रज-
नारी । पलटालेहु आज बनवारी ॥

दो० चीरहरणके समयमें दीन्हीबहुदुख मोहि ।
आजपकरिजोपाइहौनबहिं सिखदोवोहि ॥

चौ० उड़तअबीर भयो अंधियारा । घेरीसखी यशुमतिनन्द-
कुमारा ॥ लियो पिताम्बर हरिको छीनी । धरि शिरअंज-
सिंदुर शिरदीनी ॥ भाजनलगे तहांबनवारी । सखियनने
याबिधि करहि पुकारी ॥ नन्दमहरके जो तुम जाये । तो
फिरि आवहु श्रीयदुराये ॥ भाजि गये प्रभु धरन ना
पाय्यूं । पलटालेइ के नृत्य कराय्यूं ॥ जब निजदलमांय
यदुराई । नारिरूप यकसखा बनाई ॥ भेजि पिताम्बर
लीन्ह मंगाई । निजगृह गमनकीन्ह यदुराई ॥ नारिरूव-
रूप बिलोकि कन्हाई । पूंछनलगी यशोमति माई ॥ जा
बिधि रही सखिनकी करनी । कृष्णलाल सब बहुबिधि
वरनी ॥ बोलिमातु सब तब ब्रजनारी । बिबिधखिलाइ
कहा मुदभारी ॥ आजु दिवस होरीको गोरी । मांगहु
देउ सकलहौं तोरी ॥ देहु कृष्ण मोहिं मागउ सबही ।
बिहंसनलगी यशोमति तबही ॥

दो० तबनिजतनुको वस्त्रसब पहिरे श्रीगोपाल ।
गयेनहाने यमुन तट संग चले सबग्वाल ॥

चौ० मज्जनकरि जब गिरिवरधारी । फूलडोललीला
विस्तारी ॥ नभबैठ बिमानसुरवृन्दा । वरषिप्रसूनहोहिं
आनन्दा ॥ याबिधिकरि लीला बनवारी । सुखदेही स-
बही ब्रजनारी ॥ वृषभासुर निश्चर बलवाना । पठवा

कंस हनन भगवाना ॥ वृषभरूप ते आवा निशिचर । शृङ्गन उलटिदेत सो भूधर ॥ गर्जेउ वृन्दावनमहँभारी । गर्भपातभा सुनि ब्रजनारी ॥ लपटिशृङ्गते वृक्षउपारी । खोजनलाग कहां गिरिधारी ॥

दो० तेहिक्षणमहिकांपनलगी सुरनरभाउरत्रास ।
ग्वालबालसबधाइके शरणगहा सुखरास ॥

चौ० कृष्णलाल तिन्ह धीरज दीन्हा । आपु गमन निश्चर पहँ कीन्हा ॥ निकट जाइ हरि जब ललकारी । भयोमुदित अब हतो विहारी ॥ निकटजाइ महि शृङ्गगड़ाई । उठा लेनचाहा यदुराई ॥ दामोदर धरि शृङ्ग हटावा । अष्टादश पग पाछे आवा ॥ लगो हटावन पुनि यदुराये । बहुरिथका हरिताहि हटाये ॥ धरिपग शृङ्ग श्याम तेहि पटका । पुनि उठि शृङ्ग लियोहरि अटका ॥ घुर्मिश्याम पुनि गहिपग शृङ्गा । लगे मरोरन निश्चर अंगा ॥ नासा मुख ते रुधिर कि धारी । बमतभाग सो निश्चर भारी ॥

दो० सुरप्रसून वर्षनलगे अस्तुति करिबनवारि ।
राधातब हरिसेकहत सुनिये मुरलीधारि ॥

चौ० वृषभ बधे भा पाप गुसांई । मज्जन करि सब तीरथजाई ॥ सबतीरथ कहँ इतहिं मँगाऊ । कहनलगे अस यदुकुलराऊ ॥ गिरिवरनिकट कुण्डखुदवाये । तहां सकलतीरथ चलिआये ॥ निजनिज नामभाषि यदुराई । निजनिज जल सबदीन्हगिराई ॥ उभयकुंड बनवा सुख धामा । राधा कृष्ण भयो दोउ नामा ॥ मज्जनकरितहं

सबदिये बनाई ॥ मखकी याबिधि करितैयारी । कहअ-क्रूरसे कंसबिचारी ॥ ब्रजगहं दोऊबालकरहही । तिनते डर मोहिं जीवन अहही ॥ तिन्हे बधन हित करु तुम कामा । जाहु सपदि वृन्दावन धामा ॥ नन्दादिक ते कहियो जाई । लंइ अज महिप सहित दोउभाई ॥ आवैं सपदि कंस जबकहेऊ । तब अक्रूर कहत अस भयऊ ॥ जो लिखिदीन्ह बिधातारोई । सोकाहूबिधिमेटिनजाई ॥

दो० कृष्ण रामके बैर ते बचत न तेरे प्रान ।
जैहौंदियोनिदेशमोहिं लैहौंबळभगवान ॥

सो० मुनिश्रहगा हरषान कंसासुर मतिश्रंधबर ।
इत अक्रूर सुजान गये गेह महं आपने ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदास ब्रजनाथकृतेफागुनलीलावृषासुरबधकसनारदसम्बाद वर्णनोनाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

दो० राजन इतकेशी असुर धराबाजि का रूप ।
भोरहोत ब्रजमेंगया महाबली छल कूप ॥

चौ० भयआतुर सबगोपीग्वाला । गह्यो शरणप्रभु दीनदयाला ॥ तिनहिं देइ धीरजमुरलीधर । आयगये सन्मुख सो निश्चर ॥ कंसपठाव ताहिं मोहि बधनको । भयदिखरावसि कहो औरनको ॥ अग्रटाप दोउ तबहि उठाई । मारन धावा श्रीयदुराई ॥ धरि दोउ पैरताहि यदुनन्दन । फेंकिदिये जिमि अहिपति अहिगन ॥ दो शत पग गिरा महिजाई । ह्वै सचेत पुनिमुख फैलाई ॥ हरिहिं खान हित धावतभयऊ । लोह समान कृष्णकर

कियऊ ॥ नाइदीन्ह ताके मुखमाहीं । निसरन चाहत निसरिनजाहीं ॥ या विधिजब अशक्त ह्वैगयऊ ॥ मरन निशाचर को तबभयऊ ॥

दो० सुरनहर्षि अस्तुति करत वर्षत पुष्पअनन्द ।
ब्रजबासी सबमुदितभे दै अशीश नंदनन्द ॥

चौ० तेहिविधि हरिआगे भेठारे । नारद अस्तुतिकीन्हमुरारे ॥ भूत भविष्य और वर्त्तमाना । तीनहुंकाल अनेकविधाना ॥ विदाहोय अजलोकसिधारे । इतहरि मिलि सबब्रजके ग्वारे ॥ आपनृपति केहुमन्त्रीकीन्हा । यहिविधि खेलिसबहिं सुखदीन्हा ॥ कंस सुन्यो केशीको मरना । व्योमासुर पठयो संहरना ॥ ग्वालरूप तेइं हरिपहँ आवा । जानि कृष्ण तेहि सङ्ग खेलावा ॥ वृक खेलखेलन तेइंलागा । यक यकग्वाल लेइके भागा ॥ राखागिरिकन्दरहिं छिपाई । दिये शिला यकद्वारदबाई ॥

दो० कृष्ण अकेलाजानिके प्रकट कियोनिजदेह ।
तबमुरारि हनि मुष्टिकनिपठवाकालकेगेह ।

सो० लाइसखा सब ग्वाल बंशीटेरत सांझको ।
आये गृहगोपाल तेहिनिशियशुमतिस्वप्नभा ॥
वृन्दावन तजिश्याम गयेकहूं दूसरनगर ।
पुनियशुमति सुखधाम स्वप्न मृषाकरिजानेऊ ॥

इतिश्री कृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेव्योमासुरबधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥

दो० नृप कार्त्तिक बदिद्वादशी हने कृष्णदोउशूर ।
तेहि बिहानब्रजमें गये हरषितचितअक्रूर ॥

चौ० धन्य भाग्यहै आजहमारो। पैहों दरशननन्द-दुलरो॥ जे पगुरेणु सुरन नहिंपावैं। सो हरि नन्द कि धेनु चरावे॥ धन्यभाग्य सब ब्रजकी बाला। दरशकरहि संतत नंदलाला॥ नहिजानोकेहितप के कारन। पाउब दरश प्रणत भयहारन॥ नीकशकुनहोवतहैमोरा। मृग सब घुमहि दाहिनीओरा॥ जाइ चरणप्रभुनाउबमाथा। मर्मशिर करपरहि यदुनाथा॥ प्रभु पदरज निज मस्तकलाऊ। जन्म जन्म के पाप नशाऊं॥ कंस रहन गृह शकन करिहैं। मनकी जानि सकल दुखटरिहैं॥ सत्य कहब जब कसकहाला। मुकि देइ प्रभु करहि निहाला॥ चाचा कहि जब मोहि पुकरिहै। बैरीकरि तव सुरन निहरिहैं॥

सो० शोचतअसआक्रूर तीनिकोशमहँ सांझकरि। चरणरेख मुखमूर देखत बन्दतगेतहाँ॥ तेहि अवसरनंदलालसंग सखाआवतभये। देखत दीनदयाल चरणपरे अक्रूर नृप॥ भरेनयनमहँ नीर प्रेमविवशनहि उठिसकत। तबहलधर यदुवीर उठालीन्ह बड़ जानिके॥ धोइचरणअन्हवाय भोजनदीन्हेविविधविधि। पुछत कुशल नँदराय श्रीवसुदेव अरुदेवकी॥ कुशल पुछतहोकाह स्वप्नकिसुख ऐसोनगर। जहाँ कंस से नाह कह अक्रूर परेम वश॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेअक्रूरवृन्दावनगमनवर्णनोनामअष्टत्रिंशोऽध्यायः॥ ३८॥

दो० राजन नारद आगमन कैदहोन वसुदेव।
कंस उपाय हतन प्रभू यज्ञ करन को भेव॥

चौ० कंसपठायो बोलिबिहारी। कहा सकल अक्रूर सुखारी॥ रही जो आशहृदय अक्रूरा। यदुनंदनकीन्हीं सबपूरा॥ चाचा तुम ह्वै पितासमाना। करिप्रणाम दीन्हों अघनाना॥ कृष्ण कहा तब नंद से जाई। दुग्ध दही लै कंस बुलाई॥ करत धनुषमखकंससुहाई। दीन्ह ढिंढोरा नन्द पिटाई॥ प्रातलइ दधि सकल गुवाला। चलहु करत मखकंस भुवाला॥ सुनिगोपिनकहँभादुख पूरा। कहँते आयो यह अक्रूरा॥ कृष्णगमन भाषत हैं गोरी। तिनके विरह न जात सहोरी॥

दो० तनिक विमुख गोपाल ते रहा न जायेमोहि।
प्रभु जैहैं तो कौन विधिरखब प्राणनिरमोहि॥

चौ० हे विधिहो तुम परमकठोरा। प्रीतिलाय हरि पुनि लेहु कोरा॥ बलमोहन दोउ प्राणजो जैहैं। प्राण विनातनु केहिविधि रहिहैं॥ या विधि बीतिगई निशि सारी। प्रातहोत सबकिये तयारी॥ हरिहलधर रथ पर अक्रूरा। तहँगई सखी पाइदुख पूरा॥ रोदनकरन लगीं ब्रजनारी। केहि अपराध विसारुबिहारी॥ नाम तुम्हार दयाके सागर। काहेभयो निठुर गोपिन पर॥ हे अक्रूर लिये तुमप्राना। केहिविधि रहब बिनाभग-वाना॥ कोउ कह मथुरा सुन्दरि नारी। रहिहैंहरित हँ हम न विसारी॥ कोउकह रूप श्यामहै श्यामा। ऐसहि

चित्त श्यामघनश्यामा ॥ कोउ कहइ देखन मथुरा नारी । जाहिं रसिक गोबर्द्धनधारी ॥

दो० रोवतलगि जननी कहन मम बालकदोउअज्ञ ।
कपट कियोहै कस कछु येका देखहि यज्ञ ॥

चौ० कस लेइ बरु मोरे प्राना । जान न देउँ राम भगवाना ॥ भईरोहिणी व्याकुल भारी । रथते तबउतरे गिरिधारी ॥ कहनलगे सबहीं समुझाई । आउबबहुरि तजहु विकलाई ॥ सखियन हरिबहुविधि समुझाई । नन्दमहर कहही तियपाई ॥ यज्ञ दिखाइ लाउं दोऊ भाई । तब रथमाहि चढ़े यदुराई ॥ गमन कीन्ह माता शिरनाई । हांकेरथ अक्रूर सुहाई ॥ चढ़ि छकड़ापरमहर नृपाला । चले संग लै गोपगुवाला ॥ जब लग ध्वज रथकी दिखलाई । तबलग कछु सुख गोपिनपाई ॥ पुनि जबध्वजादीखनहिंजाई । सखियनसहितफिरीहरिमाई ॥

दो० हरिबिनुसुखनहि काहुब्रजरहही सकलउदास ।
इत मगमें अक्रूरउर भासंशय अरुत्रास ॥

चौ० बधेकंस जो राम गोपाला । पातक होतबमोहिं विशाला ॥ हरि अन्तर्यामीसबजाना । यहमोहिबालक करि अनुमाना ॥ यमुना तट आयेजब सबहीं । ग्वालन सहितजनक कहँतबही ॥ कहहरिचलहु सपदिमें आऊ । उतरिगये अक्रूर सो ठाऊ ॥ रथतजि तबउतरे अक्रूरा । गये नहान यमुन मुदपूरा ॥ यमुनामहँ गोता जबमारा । जलविचदेखा नन्दकुमारा ॥ शिरउठायपुनिऊपर देखा ॥ रथपर बैठे कृष्ण विशेषा ॥ पुनि गोतामारासोइदेखा ।

तीसरबारआनविधिपेखा॥ धरे चतुर्भुज रूप बिहारी।
शंखचक्रगद अम्बुजधारी॥ लक्ष्मीसहित शेषआरूढ़ा।
अस्तुतिकरहिंदेवसबगूढ़ा॥

दो० जानी महिमा कृष्णको परे चरण जलजाइ।
क्षमाकरहु अपराध प्रभुजान्यो नहिंप्रभुताइ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेअक्रूरदर्शन वर्णनोनामऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

दो० सब देवन के देवप्रभु अलख अनन्त अगाध।
तव महिमानहिजानकोउ क्षमाकरहुअपराध॥

चौ० जिमिसरिता जल सिन्धु समाई। होइ लोन तिमिजीव सदाई॥ तुमहांसहँमुनिये यदुनाथ। विनय करौं नावौं पदमाथा॥ मीनकच्छ बाराहके रूपा। नरहरि वामनआदिस्वरूपा॥ परशुराम राम औतारन केवललीन्ह भक्तहितकारन॥ अज सुर नानक जानत भेवा। मायाबश नहिंचीन्हेउदेवा॥ दीनानाथगोसतन हेतू। लिये अबतार गहगो केतू॥ जापदतें गंगाबहि-आई। तारतहै कलिखल समुदाई॥ सो पदको मैं करूं प्रणामा। कृपाकरहु लोचन अभिरामा॥

दो० तुम प्रभुदीन दयाल जगहरु मेरो अज्ञान।
देहुज्ञानजेहि चीन्हऊ कृपासिंधु भगवान॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेअक्रूरस्तुतिवर्णनानामचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

दो० याबिधि चरित देखायके भयेहरि अन्तर्द्धान।
तब अक्रूरहरिपहँगये महिमालखिभगवान॥

चौ० काहेकीन बिलम्ब कहत हरि। कह अक्रूर
[illegible] सुनि [illegible] नेउ प्रभु महिमा भारी। तब
प्रभुलीन्ह संग बैठारी ॥ रथ[illegible] मेटि सबग्वाला। बैठे
रहे यक बागबिशाला ॥ कहअक्रूरभरेहरिनेहा। पावन
करु प्रभु मेरोगेहा ॥ जो पद रहत हृदय गंगाधर। तरो
कुटुम्ब सहित शिरधरिकर ॥ कह हरिआज रहब यहि
ठामा। कालिहतो कंसमहिं बलधामा ॥ तबहम संकर्षण
त[illegible]। आउबसुनि पुलकी तेहिदेहा ॥ तब अक्रूर
कंस पहँगयऊ। सकल आगमन भाषत भयऊ ॥

दो० आजटिके हैं बागमे कलिह ऐहहिं दोउ भाइ।
कंस हृदय भा हर्ष अति का[illegible] वरणों जाइ ॥
बिदाकियो अक्रूर को इत हरिआयसु मांगि।
सखाभ्रात सँग आयके मथुरा देखन लागि ॥

चौ० अतिउतंग दुर्ग चहुंदिशि खाई। तामहं नीर
भरो अधिकाई ॥ बाग तड़ाग वापिबहुसोहहिं। देखि
जाहि सबके मन मोहहिं ॥ तहँजबगे हरिहलधरभाई।
छबि देखत सब नारि लुभाई ॥ धन्य भाग वृन्दाबन
बासी। दरशत रहे सदा अविनाशी ॥ कोउ झरोख ते
देखत श्यामहिं। धन्यभाग भा मथुरा बामहिं ॥ केशी
आदि असुरजो मारा। सोइ दोउबालक नन्दकुमारा ॥
याबिधि बोलहिं मथुरानारी। देखि मुदित छबि कुंज
बिहारी ॥ सबमिलि देहिं कंसको गारी। इतनहेतुलिये
बोलिबिहारी ॥

दो० मिला रजक यक जात मगकरिकेमदिरापान।

कंस बसन धोइजातरह ताहिकहा भगवान ॥

चौ० बसनदेहु फिरि नाउबजबही। देहौं द्रव्यअधिक धौं तबहीं ॥ सुनतवचन बोला अभिमानी। जानहु तुम यक गायचरानी ॥ जाति अहीरकामरी ओढ़ैया। याहि कंसके बसन पिन्हैया ॥ जाहुकस दोउलेत पराना। पहिरेहु बसन तबहि सुखमाना ॥ कहुजसभाव गांउमें तोही। काहे अस बोलत तू मोही ॥ जाहु अहीरगंवार अजाना। नहिंतो करब अवश्य निदाना ॥ सुनि अस वचन गर्बयुत भारी। तिरछाकर हरि ग्रीवहिं मारी ॥ लागतहीकटिगातेहिमाथा। देखिभजेसबरजकनसाथा ॥

छं० भाजेरजकतबयथा निलिसबन्दोऊपहिरेपटघना। जहँबांह तहं अग दीन्ह सजी कह्यो राज कुमरीसुना ॥ सुनिश्यामं काहे जिमिअनारउलटिउलटिपहिरतभये। प्रभु भक्त कीरह आतजोहत आइ सो पहिरा दिये ॥

सो० सूजोवा यकनाम सबहि पिन्हायो आइके।
गयोअन्त हरिधाम भक्ति दिये परिवार सह ॥
तानिकपिन्हावनकाज असप्रसन्न भयेश्यामनृप।
जो चढ़ाव व्रजराज प्रेम सहित ते धन्यजग ॥

दो० पुनिसुदाममालीमिला तेहिगृह गे अरिदाप।
देखि प्रेम दिय भक्तिवर तहं ते गमने आप ॥

इतिश्रीकृष्णसागरशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृते मथुराप्रवेशरजकबधे नामएक चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

देखो तसवीर नम्बर ६ ॥

दो० आगे यक मालिनिमिली कुबिजा जाकोनाम ।
चन्दनलायोभक्तियुत हलधर अरुघनश्याम ॥

चौ० रही कुंवरि मो नारि भुआला । चाह्यो सीधी करन गोपाला ॥ निजपद तेहि पद चपि यदुराई । कर दाढ़ी धरिदियउचकाई ॥ कूबर ज्यों सीधी ह्वै गई । परम सुन्दरी होवतभई ॥ कह ममगृहचलहू यदुराई । पूरणकरहु मनोरथ साई ॥ कहहरि कंस मारिजब आऊं । तब गृहजायके आश पुराऊं ॥ आगे चले बहुरि यदुराई । भाग सराहहिं सब कुबिजाई ॥ रंगभूमि के प्रथमदुआरा । जबपहुंच दोउनन्दकुमारा ॥ दशसहस्र बोले बलवाना । जनि आवहु नतुकरब निदाना ॥

दो० गर्ब्बदेखितहं चलिगये गर्ब प्रहारी श्याम ।
धनुषतोरि सबवीर हति फिरिआये सुखधाम ॥

चौ० कंसहृदयभा इत उरदाहू । उत लगे नन्दकहन नरनाहू ॥ यह नहिंग्राम तुम्हाराताता । बसन छीनि पहिन्यो जो आता ॥ भोजनमांगाकुंवर कन्हाई । नन्द दीन्हतब दहीमिठाई ॥ भोजन सखासहित प्रभु कीन्हेउ । हरषित सब गंवाय निशिदीन्हेउ ॥ इत जबकंस सोवन निशिगयऊ । स्वप्नएक अस देखतभयऊ ॥ खर आरूढ माथकटिगयऊ । देखतही अतिविस्मयभयऊ ॥ निद्राभई न भयवश ताई । प्रातहोत कह दूतबुलाई ॥ रंगभूमि सब देहु सवांरे । बोलिलेहु मखदेखन हारे ॥ सुनिते बोलि सबहिबैठारे । चढ़िमचान परबैठु सुरारे ॥ द्वितियमचानसकल यदुवंशी॥कंसबोलिजोधनपरसंशी ॥

दो० जोमारहु हरिहलधरहिं करिहौं तिनसन्मान।
नारि सकल देखनलगीं सुरचढ़ि देख विमान॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्बादेश्रीकृष्णदास
जगन्नाथकृतेकंसस्वप्नदर्शनवर्णनोनाम
द्विचत्त्वारिंशोऽध्यायः॥ ४२॥

दो० जाइसभा बैठे सकल तब पुनि दोनोंभाइ।
आये दूसर द्वारपर हलधर कहा सुनाइ॥

चौ० हटादेहु गज सुनुगज वाना। कंस निकट जैहैं भगवाना॥ करि अभिमाननेकु नहिंडोला। निकट लाइगज हरिसे बोला॥ याको मारि लेहु तब जाहू। याते जीति सकहिं नहिं काहू॥ शुण्ड बढ़ाइ गजगर्जत भयऊ। मुष्टिकसंकर्षण तबदयऊ॥ शुण्डसिकोरन लागेउ नागा। चिक्करत पाछेको हटिभागा॥ पुनि अंकुश मारा गजवाना। शुण्डलपटिलीन्हेसिभगवाना॥ धरि लघुरूप घुसे सुंडमाहीं। या बिधिनिज तनश्याम बचाहीं॥ ठोंका निसरि बहुरि हरिताला। सबहरषे लखि चरित गोपाला॥

दो० दोउ भ्राता मिलिपूंछखिचिकरिमुष्टिकाप्रहार।
मारे गजहिं अचेतिदश सहसद्विरदबलधारि॥

चौ० यकयक दशन लेइदोउबीरा। रंगभूमिआयेरणधीरा॥तहंहरिजोजेहि भावनि देखहि। प्रभुहिताहिविधि लखि मुख पेखहिं॥ कंसे शत्रु नन्दसुत जान्यो। ग्वालन सखानारि छबिसान्यो॥ तब चाणूर आइ यकबीरा। कहनलागु सुनियेबलबीरा॥ आजभूपमम अहैं उदासा।

मल्लयुद्धकरि करहु हुलासा ॥ तुम्हरोबिक्रम सुना बि-
शाला। कतनिश्चरमारे उ नंदलाला ॥ कहहरिहमका
मुदनृप देहौं। परमल्ल युद्ध तोहिसन करिहौं॥ पटकेहु
नहिं मोहिं बालकजाने। सोहन समरबालअरुस्याने ॥
दो० युद्धव्याह अरुशत्रुता करिये समसेजाय।
कंसायसुजोयाहि बिधितासो कहाबसाय॥
इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णद्वास जगन्ना
थकृतेकुबलया पीड़बधोनामत्रिचत्वारिंशोध्यायः ४३॥
दो० असकहि हरिचाणूरसेहलधर मुष्टिकबीर।
भोरिगये होरासरिस कीन्होप्रबल शरीर॥
चौ० शिरतेशिरछातीतेछाती। करतेकर पगपगयहि
भांती॥ युद्धकरत पचतावहि बीरा। येदोउ बालकअति
रणधीरा॥ मुष्टिकएककहरिहि तेइमारा। श्यामघूर्मितेहि
धरा पछारा॥ गिरतमात्र छूटातेहिप्राना। उतहलधर
तेहिकीन्ह निदाना॥ सलतोसल आये एकवारा। बाम
चरण हतितिन्हहरिमारा॥ कूटबीर कहं निजकरबामा।
मारिदीन्ह तुरतहिं तवरामा॥ पांचबीर जबहींगे मारे।
भाजेसब रणआश बिसारे॥ मथुराबासीअस्तुतिकरहीं।
देवन किये सुमन की झरहीं॥
दो० देखिदशा सबबीरकीकंस पठेव निजमीत।
क्षणमहं तिन्हमारेहरीहरनसकलभयभीत॥
चौ० हरिपितुमातु शोचउरभारी। कैसेबचै गोवर्द्धन
धारी॥ दुखितजानिहरिनिजपितुमाये। धरिलघुरूपकंस
पहंआये॥ कंसखडगहरिको दिखरावा। रोंकिकृष्णतेहि

लगे खेलावा ॥ बिबुध करहिं विनती यदुराई। सपदि हतहु निशिचर दुखदाई ॥ तब हरिपगते मुकुटगिराई। नाथकेश धरिदीन्ह खसाई ॥ तीनलोकको तबलेइ भारे। कूदिपरेतनअसुरमुरारे ॥ निसराप्राणरहाभयश्यामहिं। पाई मुक्तिदरशि सुखधामहि ॥ नन्दनबागकेपुष्पतुराई। देवन तेहि औसर झरिलाई ॥

दो० अष्टभाइ पुनिकंसके आये मारन श्याम।
हल मूशलतेवेगही मारदीन्ह बलराम ॥
लायेयमुनातीर प्रभु ताहि घसीटत बाट।
तबतहंकियेबिश्रामप्रभुबिदितश्रमैहरघाट॥
कंसमरनसुनिरानिसबरोवतगईं जहंश्याम।
तिनधीरज दैकाजसब करवाये सुखधाम ॥

सो० उग्रसेनते आप करादीन ताकीक्रिया।
भयनहिंताहीब्यापकंसहतनलीलासुनै ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेकंसबधबर्णनोनाम चतुःचत्वारिंशोध्यायः ४४ ॥

दो० कंसकीलोथ जलाइके गैसबनिजनिजगेह।
हरिहलधरअक्रूरही लैगयेसहितसनेह ॥

चौ० मातुपिताको लीन्हछुड़ाई। कहनलगेतिन्हही शिरनाई ॥ मोसमनहिजग आनअभागी। तुम्हनसह्यो दुखममहित लागी ॥ धन्यसो पुत्रमातु पितु सेइहि। जन्म लेनफलते सबलेइहि ॥ क्षमाकरहु अपराधहमारो। कीन्हेउकछु नहिंसेव तिहारो ॥ तब दम्पति उर ज्ञान कृ-तिज्ञाना। अस्तुति करन लगे भगवाना ॥ ह

तिन्हज्ञान बिहारी । पुत्रजानि लगुमातुदुलारी ॥ आरत सकल गये बिसराये । हरिहिगोदलैनिजगृहआये ॥
दो० श्यामसुंन्दर के जन्ममें दशसहस्त्र गोदान ॥
भाषितरहासोदानकियदम्पतिउरहरषान ॥
चौ० भोजन करिहरितुरत सिधाये । उग्रसेन रहेतहं चलिआये ॥ करिदण्डवत कहा हरषाई । राजकरहुनाना होइ राई ॥ पापिहि हत्योसबहिं दुखभाजा । अबतोतु-म्हीं होहु हरिराजा ॥ कहहरि यदुकुल मेहै श्रापू ॥ मैं नहिं होब होहु नृप आपू ॥ जो नृपबश तुम्हरेनहिंहोइ है । तिन्हअभिमान सकल हमखोइहैं ॥ सुनि हरिवचन पाइ अनुशासन । बैठे उग्रसेन सिहासन ॥ दोउ भ्राता मिलि चमरडुलाये । निजकरते हरि तिलकलगाये ॥ दे-वन तहां सुमनवरषाये । अति हरिषित दुन्दुभी बजाये ॥ भोजप्रजा सकल तहंआये । कृष्णकृपाते बहुसुखपाये ॥
दो० तव नँदराय विदाकरन आयेहरिपितुसाथ ॥
जोरि जोरि तेसब मिले हरिनाये पद माथ ॥
चौ० कहाश्यामसुनिये नंदराई । कछुदिनदैसुखपितु अरुमाई ॥ अइहौं बहुरो गोकुल ग्रामा । मुर्छिपरे महि लखिहरिबामा ॥ श्री दामातब लागु बुझाई । राजपाइ तुमगये भुलाई ॥ षोड़श सहस गोपिका जेते ॥ पञ्चस-हस्त्र सखासब तेते ॥ तुम्हरे बिरह यशोमति मैया । मरि जैहै सबही ब्रजगैया ॥ तबहलधर लगुनन्दबुझावन । हौलेआइवहरिमन भावन ॥ भेजहु तुमहिं देखिके भाई । पैहैं सुखबृज में समुदाई ॥ तबमाया असरची बिहारी ।

कछु यकग्वाल नंदतहँ धारी ॥ जानलगे तबभूषणला-
ई। कहनलगेवसुदेव जू आई ॥ बन्धुतुम्हारउऋणनहिं
अहऊं। कियजसहित तुमकेहिमुखकहऊं ॥ इहांउहांकुछ
भेदन भाई । असकहि दियो द्रव्य बहुताई ॥

छं० देइअमितभूषणद्रव्यनन्दहिंश्यामसबहिं बिदाकिये।
सुखदीजियोतुमजायजननी मोहिजनिबिसराइये ॥
सुनिनन्दतजेवमुकुंदफँसिगयफन्दमायाश्यामकी ।
मगजातशोचत संगग्वालनसुरतिहरिबलरामकी ॥
इतश्यामगे मथुरानगर पहुंचे महर बृजकी गली ।
बृजबाल जानिगोपालधाईमहरनारिभीआमिली ॥
रहग्वाल जोमथुरा नगर सोउहालआयसुनायऊ ।
सुनिमातुयशुमतिबिकलउरअतिसखिनबहुदुखपायऊ ॥
नंदरानि कहसुन मूढ़ नंद गंवाय पारस बस्रलै ।
तुमआयेयदिमैंजाततिवनहिंअतिविनुलियलाड़िलै॥
भै धन्य जगमें भूप दशरथ पुत्रहित जीवन तजे ।
असहृदय निठुरतुम्हारआये मनहरन मथुराछजे ॥
नहिआवनन्दहिवचनमुखतेसखिनंअसबोलतमगे ।
अबश्यामलोभेजाइकुबजासखिनपरनहिंचितजगे॥
कह सखी कोउनइ नारिपाई राज तहँ पायेसही ।
अबकौनआवत राजसुखतजिखातब्रजमाखनमही ॥
कोउआवअभ्यागततहांतेहिकहतबिपतिसुनाइकै ।
कहुकृष्णसेदुखगोपिका प्रियराधिका अरुमाइकै ॥
याबिधिदशाभइगोकुला दुखकहतदुखउपजतनये ।
जनजगन्नाथसमासयहिलगिविरहगोपिनगाइये ॥

दो० इत मथुरा बसुदेव जू लिये प्रोहतहिंबोलि।
गायत्री सिख दीन्ह मुनिदै उपवीतअमोलि॥

चौ० जनेउपिन्हावत भेदोउभाई। गायत्री मुनि दीन्ह सिखाई॥ जाको भेद वेद नहिं पावैं। तिन्ह गायत्री गर्गसिखावैं॥ मंत्र ग्रहण कराइ दोउभाई। रथ चढ़ाइकै दीन्ह पठाई॥ सांदीपन बुधरह उज्जैना। तहँदोउभाइ गयेसुखऐना॥ बिप्रसुदाम मिला मगमाहीं। जातरहा सोऊ बुधपाहीं॥ ताहूरथ चढ़ाय हरिलीन्हा। जाइ निकट बुधदंडवत कीन्हा॥ विद्यादीजैमोहिं पढ़ाई। लगे पढ़ावनगुरुदोउभाई॥ दिवसएकगुरुपत्नी श्यामहिं। विप्र सहितभेज्योबन कामहिं॥

दो० दिये कलेवा दोउके राखतभयो सुदाम।
बाटबारिबरषनलग्योक्षुधितभयेतहँश्याम॥

चौ० तबलगि विप्र कलेवा दोऊ। खाइ गयो ताते नृप सोऊ॥ भयो दरिद्र सुदामा नामा। द्विज प्रसिद्ध जग सुनु सुख धामा॥ विद्या सबदिन षष्टित चारा। पढ़ेबन्धु दोउ नंदकुमारा॥ तबगुरुसेलगु कहनमुरारी। कहु दक्षिणासो देउँ बिचारी॥ मृतकपुत्र हमरोहैएका। लाइ देहु प्रभु सोइ अनेका॥ मज्जन जलधिं डूबि सो गयऊ। अंगीकार करत प्रभु भयऊ॥ अस सुनि रथ चढ़िदूनौं भाई। सिंधु निकट तबगये रिसाई॥ ममगुरु बालक रहेउनहाई। डूबिगयो सो देहु बताई॥ धरितेइ मनुजरूप अतिकूरी। राखीभेद हृदयभय भूरी॥

दो० सिंधुजोरिकरकहतभो नाथनममअपराध ।
शंखरूपपँचजनअसुर सोलैगयो असाध ॥

चौ० जलमहँ धसिकैनदकुमारा । तुरतहि शखासुर को मारा ॥ यद्यपि मिला न सोऊ बालक । मुक्ति दीन्ह ताही जन पालक ॥ ताहि बजाइ गये यम द्वारा । कत पापिनको तहां उधारा ॥ धर्मराज परि पूरित नेहा । ले गये हरिहि आपने गेहा ॥ अस्तुति करन लगो बनवारी । गुरुसुत लाइदीन मुदभारी ॥ तब दोउहोइके अन्तर्द्धाना । गुरुपहँ सुतलैगय भगवाना ॥ आशिष पाइ गये गृह अपने । संतपाव जेहिध्यान न सपने ॥ सो प्रभुपढ़ि गुरुसेवा कीन्हा । धन्यसो जो गुरुपद चितदीन्हा ॥

दो० सुनुनृपजगमेंतीनिविधि अहैंगुरूपरमान ।
मंत्रुपदेशीज्ञानधर्म तीनोंप्रभुहि समान ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेशंखासुरबधोनामपचचत्वारिशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

दो० जबआयेनिजगेह प्रभु मनमें कीन विचार ।
होइहैंबिरहाकुलसखिन पठइयबुझवनहार ॥

चौ० उद्धव रहे मित्र भगवाना । तिनहिं ज्ञानकर अति अभिमाना ॥ पातीदई सखिन समुझावन । भजन करें सब त्रिभुवन पावन ॥ पुत्रभाव नहिं जान यशोदा । गोपिन ब्रह्मजान भजु मोदा ॥ अस लिखिपाती दयपठ ठेरा । रथचढ़ाइभेजातिन्हनेरा ॥मातासेकहियोअसजाई । मिलबसपदि हम दोनोंभाई ॥ लेइसंग तुमरोहिणिमाता। पत्रसुनाइ सबहिंसुखदाता ॥ ऐहहु तुरतकहाभगवाना ।

कह बसुदेवजबहिं लगजाना ॥ कहेहु नन्दसे तुम अस जाई । आवैंदेखन श्री यदुराई ॥

दो० बिकलाई तजिदेहु सब आइ दरशि यदुबीर ॥
नयन जुड़ावेंसबसखिनदियअसकहिपटचीर ॥

चौ० रथ हांकतभय ऊधोजबहीं । शकुन सखिन कहुँभाशुभ तबहीं ॥ फरकनलगो नेत्र जबबामा । कहहिं दूत आवतघनश्यामा ॥ इतसखियन असबोलतमाना । आइगये ऊधो हरषाना ॥ शोभाब्रजकी कही नजाई । फूलेसुमनफिरहिं बहुगाई ॥ धायेलोगजानिअबिनाशी । हरि कहँ देखि न भये उदासी ॥ नन्द यशोदा कहहिं सुनाई । अइहैं कबहु कि दोनों भाई ॥ गये आशदै हमन बिसारी । जुड़त नयनकी श्याम निहारी ॥ करत स्मरण कबहुंकी ताता । हरि हलधर धौं निजपितुमाता ॥ अतिब्याकुलदम्पति कहँदेखी । बांचनलागेपत्रविशेषी ॥ अइहहिं सपदि कहेउ दोउवीरा । दै दीन्हेउ असकहि पटचीरा ॥ पद प्रखारि भोजन करवाई । रहेगेह तिन्ह ऊधोराई ॥ धन्य धन्य तुम धन्य बनाई । जेहि उरबसत सदा यदुराई ॥ तुम्हरी सुरति न सकत बिसारी । शोचति रहहिं सदा बनवारी ॥

सो० लगेसिखावनज्ञान जाविधिहरिभाषितरह्यो ।
निशिको भयो निदान ऊधव को बतरातही॥
गयेयमुनअस्नानदेखा गृह गृह हरि भजन ।
तब ऊधो हरषान यमुनाजलमज्जन लगे ॥
गृहकोकाजसँभारिजलल्लावनहरिगुणकथत ।

गईं सकल बृजनारि कहँआवा अक्रूर पुनि॥
तब तो लै भगवान गयारहा मथुरा नगर।
अबका आयो ठान कोउकह पठयो दूतहरि॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेउद्धववृन्दाबनगमनोनामषटचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४६॥

दो० नृपकरि मज्जन जानलग उद्धव नंदके गेह।
राधादिक सबगोपियन घेरी सहित सनेह॥

चौ० मातु पिताके धीरज कारन। पठै दीन्ह तोहिं असुर सँहारन॥ हम बिरहिनको का सुधिलै हैं। राज छांड़ि किमि गाय चरै हैं॥ भँवर उडत पुष्पन रसलेई। वहुरि न चित तेहुलक्षन देई॥ जिमिबालक कछु पाइके ज्ञाना। बहुरि न जातगुरू के थाना॥ जिमिकर प्रीति द्रव्यलगि नारी। तिमि हरिगोपिन चितहि बिसारी॥ कोउकह कुब्जा निशिचर दासी। किये रानि तेहिहरि अविनाशी॥ देखि मधुप आवततहंआली। कहनलगी बाते यकग्वाली॥ हे मधुकर तू हरि समकाला। कछु कहु मित्र श्यामकोहाला॥ कोउकह वरण जितेहैं कारे। ते सब कपटी जिमि असुरारे॥ कह उद्धव कब अइहैं कान्हर। सुनतपत्र तिन्ह कीन्हो बाहर॥

दो० कहा श्याममबसखिनसेसुनुपत्रीकोहाल।
निर्गुणकरितिन्हमानहूजनिपतिजानुगोपाल॥

चौ० योगकथासमुझावनलागे। निर्गुणब्रह्म रहहुअनुरागे॥ जिमि योगी गण भजभगवाना। सबमें व्यापक लखिगुण खाना॥ सोइभाव भजहू यदुबीरा॥ बसिहैं

सदा हृदय मति धीरा ॥ सुनत वचन राधादिकगोपी। कहन लगीं उद्धवसे कोपी॥ हरिनहिंकहीयोगकीबानी। हमअबलाका साधन जानी॥ लीन्ही नहिं गुरुमंत्रहि कोई। योग ज्ञान कौनी बिधिहोई॥ यह सबहै कुब्जा की करनी। पातीमें जो उद्धव बरनी॥ दासी को कीन्हीं हरिरानी। भजिहै ताहि न कोई ज्ञानी॥ राधा कृष्ण नाम जग होई। कुब्जा कृष्णकहत नहिं कोई॥ हमन नारि वृन्दाबन बासी। सगुणरूप गोपाल उपासी॥

दो० देखि भक्ति ब्रजनारिकी उद्धव गयेलजाय।
ज्ञानऽभिमानबिसरिगयोरहेमौनशिरनाय॥

सो० कहारहा सुखरास आवनसपदिबुझाइकै।
बीति गयोषट मास उद्धवकोतहँ प्रेम बश॥

चौ० तब सखियन निज गृह लैजाई। चरण धोइ भोजन करवाई॥ कहा कृष्ण से कहियो जाई। योग सिखावैं आपुहि आई॥ बिदाहोइ उद्धव तब गमने। आयेबहुरि यशोमति भवने॥ तबनंदरानी दहीमिठाई। मुरली दई दीजियोजाई॥ नन्दरायकहं कहेहुपिताहरि। बारेकआवनदेहिंकृपाकरि॥भूषण बसन दियो बहुताई। दीजेहुये बसुदेवहिंभाई॥ देख्योदशा सकलब्रजबासी। कहियोआवैं बलअविनाशी॥ कहारहाआवन यदुराई। सोइआशउररहत सदाई॥ बिदाहोइलइ रोहिणिनारी। उद्धवआये जहँ बनवारी॥ सादरमिलि आसनबैठाई। मुरली लै हरि उरहिं लगाई॥ कहहुसकल अब उद्धव राई। कैसे हैं ब्रंजमें समुदाई॥ कहा कहूं गोपिन की

प्रीती। पावहिँनहिं तस मुनि गो जीती॥ केवल अवधि आश पर रहही। कब अइहैं मोहन असकहहीं॥ भूलिगयो मेरोतहँ ज्ञाना। और कहाधौंकरों बखाना॥ बोलिपठायोपितुअरुमाई। तुमबिनुराधाअतिबिकलाई॥ अहोमहातुमनिठुरकन्हाई। छाड़िदियोगोपिनपितुमाई॥

दो० सुनत वचन शोचनलगे शोच विमोचन श्याम।
रोहिणि देवकि सोमिली हरिकीन्हों परणाम॥

सो० ऊधो देइ संदेश गये गेह महँ आपनो।
इतबलकृष्णनरेश खायेकछु तिन्हघरपठेव॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेऊधोगोपीसम्बोधनोनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४७॥

सो० नृप हरिकिये बिचार कुब्जा के गृह जाइये।
कहेउ कंसको मारि आवेंगे तेरो सदन॥

चौ० अस बिचारि उद्धव संग लीन्हे। तब यदुराज गमन तहँ कीन्हे॥ कुब्जा श्यामहिं आवत देखी। भई प्रफुलित हृदयविशेषी॥ आगेहि ते पावड़े बिछाई। गई लेइ श्रीपति यदुराई॥ गये कृष्ण जबताकेगेहा। चरण धोइ परि पूरित नेहा॥ सादर सिंहासन बैठाई। उद्धव कहं आसन दियलाई॥ पुष्प सुगन्धित साजिबनाई। सेज सुहावन दीन्ह बिछाई॥ चौगुन करि चौवेद सिंगारा। कृष्ण निकट हर्षित बैठारा॥ जानी हरि उर अंतरबाता। पूरणकिये आस सुरत्राता॥

दो० पूर्णमनोरथ तासुकरि उद्धव भक्ति दिखाइ।
भवनआइ अक्रूरगृह गये पुनिबल यदुराइ॥

चौ० चरणधोइ तिन्ह दोनोंभाई । सादर आसनपर बैठाई ॥ भोजन विविधभांति करवाई । अस्तुति करन लगो हरषाई ॥ बोलिउठे तब कुंवर कन्हाई । चाचातुम हस्तिनपुर जाई ॥ समाचार सबभाषोमोही । दुर्योधन सम भ्रात द्रोही ॥ देत युधिष्ठिरको दुखभारी । तातेसब तहंअहैंदुखारी ॥ सुनिअक्रूर तहांपगुधारे । हरि हलधर निजभवन सिधारे ॥ तनिक प्रेमयुत चन्दनलाई । कुब्जा गृह गमनेयदुराई । जेनरप्रेम सहित हरिपूजहिं । तिन्ह सम हरि प्रियनहि कोउ दूजहिं ॥

दो० कूबरतन सीधोकियो असकृपाल यदुवीर ।
सदाभक्तवशरहहिंप्रभु जगन्नाथमतिधीर ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेकुब्जाकेलिअक्रूरगृहगमनोनामअष्ट चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

दो० आयेजबअक्रूरतहँ शोभा नगर अपार ।
रहन्नृपपांडू के बनै मन्दिरबापि बहार ॥

चौ० देखत हर्षित गे अक्रूरा । दुर्योधन की सभा हजूरा ॥ बैठरहे जहँ भीष्म पितामह । करनबिदुर अरु अश्वत्थामह ॥ धृतराष्ट्र द्रोणादिक जेते । बैठारे अक्रूरहिं तेते ॥ दुर्योधन आवा अभिमानी । कुशलपूछिहरि देदैतानी ॥ तब निज उर अक्रूरबिचारा । सहिनसकत दुर्बचन गवारा ॥ लीन्हों भक्त बिदुर सँग सेऊ । आये भवन युधिष्ठिर तेऊ ॥ देखाकुंती कहँ दुख भारी । पूछन

लगी कुशल असुरारी ॥ दुर्योधन मोहिं अधिकसताये। कहुकब अइहैं श्री यदुराये ॥

दो० एकबारतेइभीमकोदीन्हेसिगरलखिलाय।
अपरलाहुकेकोटरखिपावकदियोलगाय॥

चौ० कहिदीजोतुमबिनतीमोरी।सुनिहरिमोहिंनछाड़े भोरी ॥ आइसुतनकेसहित उबारे। हमदीननकेसबदुख टारे ॥ कहअक्रूरसुनहुतुममाता । अइहैंसपदिश्यामम्रदु गाता ॥ मोहिंसंतोषदेनहिततोरा। दीन्हो है पठाइ चित चोरा ॥ करहु न शोचहृदयकछुअपने।हरिसहायतेहिदुख नहिंसपने ॥ असकहिबहुरिगयेसोतहवां।धृतराष्ट्रकबैठा रहजहवां ॥ कहनलगेअसताहिबुझाई।दुर्योधनकीमतिमें आई॥काहेदेहुभतीजनदूखग।कर्मकरहुजसनरककेभूखा॥

दो० अंधभयेनहिंसूझकछु तबधृतराष्ट्रविचार।
लागकहनअक्रूरसुनु का अपराधहमार ॥
मैंरहूहरिकेभजनमे करहिंसकलमनभाव।
मायाप्रबलजगतपतिअन्तकरिहुपछिताव॥
असकहि कुंतिहि धीरदे हरिपहँगैअक्रूर।
समाचारसबकहिदियेगयेबहुरिनिजपूर ॥

सो० तबहरिकीन्हविचारयुद्धमहाभारतकरिय।
टरिहौंमहिकोभार देहौंसुखसब पांडवन॥
कहेउँकथापूर्बार्द्धलीलाब्रजमथुरान्रपति।
अबकहिहौंउत्रार्द्धश्रीद्वारावतिपतिकृपा ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतपूर्बार्द्धकथासमाप्तोनामउनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथउत्तरार्द्धकथाप्रारम्भः ॥

दो० उग्रसेनकेराज्यमें भै सब प्रजा सुखारि ।
कंसतियनपतिबिनुदुखीगईंपितागृहसुआरि ॥

चौ० मगध देश कोनृप बलवाना । कंस नृपतिको श्वशुर बखाना ॥ कंस तियन जब पितहिं सुनाई । हते कंस को श्री यदुराई ॥ सुनत कहा यदुकुल को जाये । माराकंस देखिहौंजाये ॥ असकहि बोलि भूपबहुलयऊ । सेन अक्षौहिणि तेइस भयऊ ॥ सहस इकीस अष्ट शत सत्तर । येते रथ पुनि अयुत नाग बर ॥ एक लक्ष नव सहस कराला । अर्ध अधिक त्रय शत बल शाला ॥ इत पदचर छासठि सहस्र पुनि । रहहिं सवार प्रमाण अक्षोहिनि ॥ संगअक्षौहिधिर तेइसया विधि । लैइमथुरा परगा चाढ़ि बलनिधि ॥

दो० भा देवनउरत्रासअतिधरणीकंपनलागि ।
मथुरावासीबिकलह्वैशरणगहाहरिभागि ॥

चौ० तबहरिजायनिकटउग्रसैना । मांगायुद्धकरनको बैना ॥ जान कहा नृप तबहिं मुरारी । गये समरकछु सेन हँकारी ॥ तहँदो रथभये प्रकट भुआला । एक हल-धर ळगि एक गोपाला ॥ हरिरथमहँ नन्दक किरपाना ।

शारंगादि भरे तहँ नाना ॥ दारुक रहा सारथीश्यामा। हलमूसल रथमें बलरामा॥ दोनों रथहि चढ़े दोउभाई। पहुंचे जरासन्ध कटकाई ॥ तब कह जरासन्ध अभिमानी। बालकते नहिं युद्ध बखानी ॥ हलधर ते हौं करिहौं जूझा। तबकह हरिसुनु अधम अबूझा ॥

दो० निजबलकहहि न कोइशूरअकटबलु युद्धमें।
सुनिक्रोधातुरहोइछांडेसि तेइशायकनिकर॥
मथुराबासी बिकलभै तिन्हैं देखि बलबीर।
मिलिदोउभ्रातायुद्धकरिहातिर्दीन्हेसबबीर।

चौ० सरिता रुधिर बहनलगि ताई। खांनलगे सब गृध्रन आई ॥ तहँरथबहतनावअनुमानहु। भुजाकटेसोइ मीनहिजानहु ॥ योगिनिराहित आयत्रिपुरारी। रुधिर पिवहिं सबभूतन भारी ॥ मारुत लासन संग्रहकरेऊ। पावक सबै मृतक कहँ जरेऊ ॥ जरासन्ध एक तहँरह ठारा। हलधर गहा गलेहलडारा ॥ हननचहातेहि जब बलदेवा। कहनलगेतब श्रीजगदेवा ॥ लावत औरअधमिनटेरी। सबहिमारि यहिहतिहौं फेरी ॥ छांड़ि दीन्ह तेइंगानिजभवने। इतदोउभाइनमथुरागमने ॥ याविधि असुर सप्त दशबारा। आवापर न जीतसकहारा ॥ तब कै दुखी जीतिवेलागी। तपकरबेगौ विपिन अभागी ॥ एकहुबार भागि दोउ जाही। होइ विजय सम मुदशक नाहीं ॥ तहां देवऋषि आइबखाना। कालयमन मलेच्छ बलवाना ॥ सो जोकरे सहाई तेरी। श्यामहुँ जीतिलेइ

नहिं देरी ॥ काबुल ताकर बास स्थानी। सुनत बचन हरषा अभिमानी ॥

दो० सुनिसोअस मुनिकेबचनकहा तुमहिंतहँजाय।
ताहिसहायक भेजिदेहु सुनतहि गै मुनिराय॥
तीनि करोड मलेछ लै भेजि दीन्ह मुनिराय।
जरासन्ध के कटक मिलि दोनों घेरे आय॥

चौ० तबमुनि विधिके लोक सिधाये। इतहलधर तें कह यदुराये॥ दोउदल सैन पहूंची भाई। लड़ो एकतें एकबिहाई॥ तब एकनगर पैठ उत्पाता। करि दुखदेत सुनहुतुमताता॥ अबहिपुरीद्वारकाबसाई। मथुराबासी रखिहौंभाई॥ असकहि सिंधुहि लीन्ह बुलाई। द्वादश योजनथल निसराई॥ विशकर्माको आयसुकीन्हा। सो तहँजाइ पुरी रचि दीन्हा॥ सोरहसहस एकशत अष्टा। कृष्णभवन सबसुन्दरठट्टा॥ रत्नजटित सबमंदिरशोभा। वरणि सकै कवि अस जगकोभा॥ अपर गेह सुन्दर अस्थाना। मथुरा बासी हित सुखदाना॥ सरबागादि रुचिरतहँसोहैं। देखतजेहि सुरनरमनमोहैं॥ अश्वखान रथ गाडीखाना। असरचिखबरिदियोभगवाना॥ माया आयसुतें अविनाशी। सोवतही सब मथुराबासी॥ धरि आई नहिं जानेउ कोई। सिंधु शब्दसुनि निद्राखोई॥

दो० सुना जलधिको शब्द जबजाना नगरहैआन।
रचना देखत चकित भे धन्य धन्य भगवान॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेजरासन्धपराजयेनामपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५०॥

दो० राजन मथुरावासियन राखिद्वारकामाहिं।
हलधरको मथुराधरे गये म्लेच्छके पाहि॥

चौ० राखि चतुर्भुज रूप सोहावन। अँग पीताम्बर मुनि मनभावन॥ यमन देखि आवा बढ़ि आगे। तब त्रिभुवनपति तहँते भागे॥ हरि इच्छातारण मुचकुन्दा। यहि कारण भागे सुखकन्दा॥ लगा कहन तब यमन पुकारी। भागत किमि तू पीठि देखारी॥ तदपि फिरे नहिं त्रिभुवनसांई। यमनहुं गा पाछेते धाई॥ गँधमादन गिरिवर की कन्दर। पैठ गये जबहीं मुरलीधर॥ सोवत रह्यो तहां मुचकुन्दा। पीताम्बर दिय उढ़ा अमन्दा॥ आपु गये तहँ छिपि भगवाना। यमनहु पहुंचि गयो रिसिआना॥

दो० देखि पीताम्बर जानिहरि मारी तेइ यकलात।
क्रोधातुर सो दीख जब भयो भस्म तेहिगात॥

चौ० रहा सो श्यामसुंदर छबिहेरी। मुक्तिभई याते तेहिकेरी॥ कह नृप कौन रहेउ मुचकुन्दा। कहन लगे तब मुनि सानन्दा॥ रहा सो भूप महाबलवाना। करत सहाय सुरन विधि नाना॥ असुरन छीनि लियो सुर राजा। युगभर युद्ध कीन्हतेहि काजा॥ स्वामिकार्त्तिक आये तबहीं। करन सहाय लगे तिन्ह सबहीं॥ निद्रावश तिन्ह किय विश्रामा। सो गिरि पर सुनहू सुख धामा॥ देवन दीन्ह ताहिबरदाना। जो जगावतइहोइ निदाना॥ याने तुरत बिलोकत ही तन। भस्म भयो

सुन राज मुदित मन ॥ सुन नरेश पुनि यदुकुल राई। दरश दीन्ह मुचकुन्दहि आई ॥

दो० दरशनदेइ कृतार्थकरि कहामांगु बरदान।
तब मुचकुन्द मुदितमन मांगभक्तिभगवान ॥

चौ० भक्तिपायकदरते आई। देखालघु नरनारिन पाई ॥ जाना कलिको लक्षण जबहीं। तपलगुकरनप्रेम युततबहीं ॥ याबिधि पद्मपुराणबखाने। सोइभयेजय-देवसयाने ॥ जिन गितगोविंद दिये बनाई। मनहुंसुधा रसते लपटाई ॥ तनछूटे भे हरिमेंलीना। सुनिबोलेराजा परबीना ॥ कालयमन रहुकौनगुसाईं। कहतभयेमुनि-वरहरषाई ॥ तालजघ काबुलकोराजा। गर्गनिकटआ-वासुतकाजा ॥ फल यकताहि मुनीतबदीन्हा। याबिधि ताहिजताबनकीन्हा ॥ मज्जनकरवाईनिजनारी। भक्षण करिहहु हृदयविचारी ॥ ताकी नारिन मज्जन कीन्हा। खाइगईं फल नहिंकछुचीन्हा ॥

दो० तबमुनिकहा भुवालसन होतपुत्रजोतोर।
करतसोकर्म मलेच्छके संशयमिटाबहोर ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेमुचकुन्दतारणवर्णनोनामएकपचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

दो० भूपति मथुरा आइहरि सगलेइ बलराम।
सेन मलेछनकीहती क्षणमें सुन्दर श्याम ॥

चौ० जरासन्धसेनारणगाजे। ताहिदेखि दोउभ्राता भाजे ॥ जरासन्ध उत्साह के कारण। भागि गये जब असुर सँहारन ॥ पर वर्षणगिरिपर चढ़िगयऊ। पावक

शठ लगाइतेइ दयऊ॥ अग्नि चहूंदिशि लहरनलागी। दोउजरे असजानि अभागी॥ सैनफेरि आवारजधानी। मथुरा नगर उजारि निदानी॥ हुकुम फेरि सब भवन ढहावा। तहँ आपन मन्दिर रचवावा॥ मगधदेश तब गा हरषाई। सुनहु चरित अब दोनोंभाई॥ इत हरि चरणन दाबि पहारा। नाइरसातलबूझिअंगारा॥ कूदि गये अपने असथाना। गिरि तेहिविधिभा अचल निदाना॥ आइ द्वारका मुदित बिहारी। कछुदिन बीतिगये सुखभारी॥ रेवत नृपविधि आयसुपाई। सुतारेवतीको तबलाई॥ संकर्षण ते दियो बिवाही। मुदितभये पुर वर्णिनजाही॥

दो॰ तबहरि कुण्डिनपुर गये हलधरको लयसाथ।
भिष्मककन्या रुक्मिणी तेहि हरिलायेनाथ॥

चौ॰ कहनृप केहिबिधि हरो गुसांई। सो सबकथा कहहु सुखदाई॥ कहनलगे मुनि सुनहु भुवाला। नृप भिष्मकरह परम दयाला॥ ताकीसुता रुक्मिणीनामा अति सुन्दरी सकल गुणधामा॥ दिवस एक नारदतहँ आये। कृष्ण चरित बालिकहिं सुनाये॥ याचकहू ते चरित गोपाला। गावतसुनि मोहित भइबाला॥ पुनि नारद हरि निकट सिधाये॥ सुन्दरता तेहि बहुविधि गाये॥ भये श्याम मोहित तेहि रूपा। ब्याहन इच्छा भइ इतभूपा॥

दो॰ रुकमाग्रज नृप पुत्रबड़ कहा पिताते आय।
चन्देली शिशुपालनृप ताहि बिवाहो जाय॥

चौ० रुक्मकेश लघु बालभुआला। कहायाहि ब्याहहु गोपाला॥ सुनतहिंबचन हरष नृपमानी। धन्यपुत्र तुमहहु बड़ज्ञानी॥ पुनि रुक्माग्रजकहा रिसाई। ताकी जातिजानिनहिंजाई॥ कोउकहतवसुदेवकेबालक॥ कोउ कहैंनन्देपशुपालक॥ असकहि बिप्रतिलकदेभेजा। रह शिशुपाल जहांतहँलेजा॥ तिलकलेइलीन्हा शिशुपाला बिप्रजनायो आइकैहाला॥ करोतयारी आव नृपाला। गृहगृह मंगल भयो विशाला॥ भयो रुक्मिणीउर दुख भारी। केहि विधिमिलैं गोबरधनधारी॥

दो० बिप्र एकतबबोलिकै लिखी रुक्मिणीपाति।
भेजा नगरी द्वारका जहँ रह कोमलगात॥

चौ० बिप्रजुलावहु कृष्ण बुलाई। तुम्हरिकृपा पति होंयकन्हाई॥ जन्मप्रयतमानुं गुणतोरा। सुनतबिप्रगा जहँचितचोरा॥ सिंधुबीचबस पुरी सोहावनि। बोलहिं बिहँगबोलि मनभावनि॥ घरघरहोतभजनयदुराई। पुर शोभा कछु बरणिनजाई॥ देखतगयो धाम भगवाना। द्विजहिजानिदियसबतेहिजाना॥ बैठे रहेकृष्णसिंहासन उठिपगधोइ देइपुनिआसन॥ पूंछनलगे कुशलहरषाये। कहहुबिप्र कहवांतेआये॥ तबसो बिप्रकही कुशलाता। पत्रसुनायो त्रिभुवनदाता॥ हेप्रभुमुरलीधरअविनासी। मनबचकर्म चरणकीदासी॥ चाहतहौं पतिहोहुगुसाईं। करुणाकरिआवहुयहिठाईं॥ तुमप्रभुभक्तनकेहितकारी। बिनादरशतनछुटतमुरारी॥ रथचढ़िआवहुद्विजकेसाथा। हरिलैजाहु मोहिं यदुनाथा॥

दो॰ दिन यकप्रथम विवाहते शिवा पूजिहौंजाय।
तबहरिलै मोहिंजाहुतुम जेहिशिशुपालनपाय॥

सो॰ सुनि अस पातीश्याम गमनकरनकुंडिननगर।
कियाबेचार सुखधाम जगन्नाथप्रभुभक्तिलखि॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ
कृतेकृष्णपतिरुक्मिणीसंदेशोनामद्विपंचाशत्तमो
ऽध्यायः॥ ५२॥

सो॰ पातीसुनि तबश्यामकहा बिप्रसों काल्हिमें।
जैहौं कुण्डिनधाम लाऊंरुक्मिणिशत्रुहनि॥

चौं॰ हरिआयसुतेहोतबिहाना। रथलावादारुकरथवाना॥ तबचढ़ि हरि अरु द्विजहरषाई। कीन्हपयानसुनहुं अबराई॥ शकुननीक होवतमगजाते। मृगनफिरहिं तहँदाहिनताते॥ उग्रसेनआयसुलैतबही। द्वैअक्षौहिणि सेनातबहीं॥ गयेलेइसंकर्षणतहँवां। मिलेजाइत्रिभुवन पतिजहँवां॥ देखाजाइ नगर अतिसोहै। नरअरुनारि मुदितमनमोहै॥ चोवाचन्दनछिड़कहिंद्वारा। आवबरात मुनिय सुखभारा॥ जाइबागमें डेरालीन्हा। बिप्रगमन रुक्मिणिपहँ कीन्हा॥ ताहि समय आवतिभइ भ्राता। मंगलचार होत मुददाता॥ उत रुक्मिणि उर शोचति भारी। जानि कुरूप न आयविहारी॥ किम्बा भूलिगयो द्विजराहा। काहेन आये त्रिभुवन नाहा॥

दो॰ भूप अगोनी जाइके वसन सबहिं पहिराय।
लायउभ्रातिन हरषहिय जन्वासादियआय॥

चौ० रुक्मिणि शोचति रहिंउर जबहीं। सखी एक बोली तहं तबहीं॥ क्योंतू शोच करति है बारी। पितु आयसु विनकिमि बनवारी॥ आवें इहां शोचजो अहई। सखी एकपुनि याबिधि कहई॥ सखी श्याम हैं अन्तर-यामी। आइ अवशि हरिहैं दुखधामी॥ फरकेउ तब रु-क्मिणि दृगबामा। जानाअब अइहैं सुखधामा॥ भीष्म-क सुता शोचतिरहजबहीं। आइगयेसो द्विजतहंतबहीं॥ समाचार द्विज भाषत भयऊ। आइबाग जिमिडेरा यऊ॥ सुनिरुक्मिणि हरषित भइकैसे। तपीपाव फलतप कोजैसे॥ हेद्विज होहुं उऋण नहिंतोहीं। जीवन दान दियोतुममोहीं॥ कृपानयनदेखी मृगनयनी। रमाबास भा ताके अयनी॥

दो० तब द्विजहरि आवन कथा कहभीष्मकतेजा।
हर्षितलघु पुत्रन सहित आवा नृप हरषाइ॥

चौ० मणि गण भेंटभूरि धरिआगे। कहनलागहरि से अनुरागे॥ धन्यप्रभू मोहिं दरशन भयऊ। भलेथान तबडेरा दयऊ॥ जाइगेह भोजन जतअहई। हरिपहँ भेजि परम सुखलहई॥ नरनारी हरि देखनधाये। हैं रुक्मिणीयोग्य यदुराये॥ नृपहुजाइ गृहशोचतभारी। ह्वैकिमि ब्याहकृष्णसेंबारी॥ नगर देखन पुनिगेदोउ भाई। नगर लोगतहं मनहरषाई॥ बरषहिं पुण्जन्म फल पावहिं। दरश करहिं जेहि शिव अज ध्यावहिं॥

दो० हरिहलधर पुनिदेखि तहंआये बासामाहि।
रुक्माग्रज .रि चानसुनि पितु पूछेउजाहि॥

चौ० आये कहां कृष्णबलदेवा। कहनृपमैंनहिंजाने-उँभेवा॥ जरासंधअरु रहशिशुपाला। जाइकहा तिनते सबहाला॥ जरासंध जानतहरिहाला। विस्मित भयो सहित शिशुपाला॥ रुक्माग्रज धीरज जब दयऊ। मैं तिन्ह बधब कहत असभयऊ॥ भरि निशिते रह शोचत भारी। प्रातहोत जबरुक्मिणि नारी॥ पूजनगई शिवा हरषाई। तबशिशुपालशोच अधिकाई॥ हरिहरिलेहिन रुक्मिणिनारी। सहस पचास वीरबल भारी॥ दियेपठाइ रुक्मिणी संगा। अस्त्रशस्त्र लैगे बहुरंगा॥ तिन विचसोहरुक्मिणी कैसे।नभ उडुगणबिचशशितनजैसे॥ पूजत भईउमाको जाई। कृपाकरहु जेहिमिलै कन्हाई॥

दो० असकहि बहुबिधिपूजिके फिरी रुक्मिणीनारि।
उतरथ चढ़िआयेहरी मुसकत छबिबलिहारि॥
सखी एक तेहि कहतभई आये नन्दकिशोर।
रुक्मिणि हरषित देखऊमुसुकतमुखचितचोर॥

चौ० देखतही वीरन मुसुकाना। मोहितगिरे अवनि पछिताना॥ तबबामें करधरियदुराई। हाथबढ़ातेहिलीन्ह चढ़ाई॥ शंखबजाइहांकिरथ दीन्हा। सखियनडरत गमन गृहकीन्हा॥ द्वादश कोशगये हरिजबहीं। भयेसचेत वीरसब तबहीं॥ धाये सकल पाछियदुराई। इत हलधर निजलैकटकाई॥ चलेतुरंत द्वारकारामा। पछिताये भूपन बलधामा॥

दो० भयआतुरमृगनयनिलखिदियेहरिमालपेन्हाय।

अबजनि शोचहु रुक्मिणी बरौं द्वारका जाय॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेरुक्मिणीहरनोनामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः॥५३॥

दो० भूपति याबिधि कृष्णजू जबहरिलैगेनारि।
सुनिहृवैक्रोधातुरतबहिंसेनलेइसँगभारि॥

चौ० आयेदंतबक्रशिशुपाला। जरासंध रुक्मादिनृपाला॥ लगे कहन दोउभ्रात पुकारी। भजेजात क्यों पीठ पसारी॥ क्षत्रीधर्म न या बिधिभाई। आनहिंजोर न पीठ दिखाई॥ सुनिहलधर सेनालेइ आवे। युद्ध करन लागे हरषाये॥ सरिता रुधिर बहनलगराई। भीष्मकसुता त्रास अधिकाई॥ तबहरिविकलताइ निज जाना। देखत जूझहिं हलधरस्याना॥ क्षणमहँदीन्हीं कटक सँहारी। ब्याकुलकिये असुर दलभारी॥

दो० जरासंध आदिक नृपति देखत कटक विहाल।
भयआतुरगे भाजिके जहां रहा शिशुपाल॥

चौ० शोचन लगा तबहिं शिशुपाला। सन्मुख नारि गयोले ग्वाला॥ याभलमरौंजाइ रणमाहीं। रुक्मिमुख काहि दिखावौं जाहीं॥ जरासंधतबकहतबुझाई। जनि शोचहु उरकछु तुमराई॥ हौं युधकियो सप्तदश बारा। तदपि न छांड़ेउँ युद्धकरारा॥ अष्टादशमें भाजे दोऊ। तबआनंद हृदय कछुहोऊ॥ याबिधिपुरतमनोरथआपू। तजहु शोक उरतेसंतापू॥ भा धीरज कछुतब लेसैना। भूपन गये आपने अयना॥ तब गृह लूट समर अधिकाई। वस्तुपठायदिये दोउ भाई॥ सभाबैठ रुक्म-

शोचा । लैगो बहिन हमारीपोचा ॥ अबयापग्णकरतहौं आजू । जोनहि जीतौं कृष्ण समाजू ॥ बहुरिन कुंडिन-पुरमे आऊं । लज्जा बश केहिबदन देखाऊं ॥ असकहि सैनलेइसँग टेरा । आइअनी यदुपतिकोघेरा ॥

दो० लागुपुकारन कृष्णको क्योंधौं भागेजात ।
जीतिसमरमोहिं सकहुनहिं आजकरौंमैंघात ॥

चौ० असकहिबाण विपुल संधाना । सबहिं काटि दिय कृपानिधाना ॥ पुनिप्रभु शायक चारि चलावा । बाजीरथ दिये तुरत नशावा ॥ यक शरतें सारथि कहँ मारा । यकशर धनुष एक ध्वजडारा ॥ रुक्म चलायउ गदा अपारा । तिनहु शरन हरि काटि निवारा ॥ जब कोइ अस्त्र लगानहिं श्यामैं । तब लेइखड्ग रुक्म बल धामैं ॥ रथतेउतरि लगायुधकरना । खड्गहु काटिदिये मन हरना ॥ तब हरिकोपि खड्गलैहाथा । मारन चहा रुक्मके माथा ॥

दो० भ्राताको देखत हतनबिलपति रुक्मिणिनारि ।
बोली दीनन बन्धुप्रभु देहु अपराध बिसारि ॥

चौ० तबप्रभु छांड़िदीन तेहि भ्राता । सूतहि सयन किये जनत्राता ॥ जानिसारथी हरिकी बानी । गहि लीन्हेसि रुक्मक अभिमानी ॥ मुण्डमोछ दाढ़ी मुंड़िदीन्हीं । चोटीसप्त मस्तकहिं कीन्ही ॥ निजरथबांधिबहुरि तेहि दीन्हा । हलधर उतसेना हतकीन्हा ॥ हर्षितआये जहँ यदुनाथा । देखाबँधे रुक्म मुंडमाथा ॥ लगे कहन भ्रातहिंसमुझाई । यहनहिं भलकीन्हों यदुराई ॥ जोयह

आवा युद्धकी इच्छा । काह विदाकिय नहिंकरिशिक्षा ॥
दो० नारी भ्रातहि छांड़ेउ तबहीं नन्दकिशोर ।
तब रुक्मिणीतेकहनलगसंकर्षणकरजोर ॥
चौ० यह जो गतिभइ तुम्हरे भ्राता । असतेहिकर्महिं लिखी बिधाता ॥ जीवरहत संतत अविनाशी । तनदुख दिये न कछु तेहिनाशी ॥ सुनिधीरजभारुक्मिणिनारी । तबहिं रुक्मप्रभु पदशिरडारी ॥ कहनलगा नहिंजानेउँ भेवा । कियउँ ढिठाई तातेदेवा ॥ अजशिव आदि अन्त नहिं पावें । सो मोते केहिबिधि लखिजावें ॥ रुक्मविनय करि या बिधिराई । कृष्णनिकटते गा शिरनाई ॥ प्रथम प्रणै आपनि चितलाई । गयोबहुरिनहिं कुण्डिनठांई ॥ जानि पिताकोआपनबैरी । भुजकटनगर नामरखिनेरी ॥ निज तियपुत्रनलियोमँगाई । बासकरनलागाहरषाई ॥
दो० उत रुक्मिणि हरिसैनकिय हांकोरथ यदुराय ।
पहुंचे रामरु कृष्ण तब पुरी द्वारका आय ॥
चौ० पुरबासी सब मिलि नरनारी । आरति करन लगे बनवारी ॥ भयो देवकीउरआनन्दा ॥ देखिरुक्मि-णी अरु सुखकन्दा ॥ सादर लेगइ मन्दिर माहीं । भये मुदित पुर वरणि न जाही ॥ गर्गबुलाइलियेबसुदेवा । पूछालग्न विवाहनदेवा ॥ कहालग्न शुभ प्रोहित जब-हीं । नेवत नृपनगृह पठवा तबही ॥ होवन लगी व्याह तैयारी । जब पहुँचे सब नेवतनहारी ॥ तबभीष्मक प-ठवाद्विजएका । दासदासि घनदेइअनेका ॥ आवाविप्र तहां तेहि अवसर । शोभाकौनसकै वरणनकर ॥ करन

लगे सामा आरम्भा। गाड़ेउ तब कदली के खम्भा॥

छं० तबगाड़िकदलीखम्भचँदवारत्नजटितसजावहीं।
नवरत्न बन्दनवार बाँधे मोति चौक पुरावहीं॥
श्रीरुक्मिणीअरुकृष्णकोउग्रसेनवसनपेन्हावहीं।
लेजाइ मँड़वा माहँ चौक जड़ाउ पर बैठावहीं॥
यदुवंशि अरु भूपाल नातेदार आइ के पेखहीं।
तहँअजशिवादिक देवताधरिरूपकौतुकदेखहीं॥
तबवेदबिधिमुनिगर्गदोउकहठ्याहआइकरादिये।
संगफिरहिंभाँवरिश्यामरुक्मिणिशुभगदोउजोरीभये॥
तहँअप्सरागंधर्बनाचहिं गाइगुण हरषितहिये।
सब याचकनकहँ दान दै दै उग्रसेन बिदाकिये॥
याविधिविवाहभयोगुणाकरसकलभेहरषितहिये।
तबभूपसबअरुविप्रकुंडिनपुरहिंनृपतिबिदाकिये॥

सो० रुक्मिणिमंगलगान करहिंसुनहिं सप्रेमजे।
जगन्नाथ स्नान सब तीरथ फल पावहीं॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास
जगन्नाथकृतेरुक्मिणीमंगलवर्णनोनाम
चतुर्पंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५४॥

दो० नृपतिदिवसएकगौरिपति रहेध्यानकैलाश।
तहांकाम सतवनगया नेत्रखुला सुखराश॥

चौ० तृतियनेत्रते देखाजबहीं। भयोभस्म अवलोकत तबहीं॥ तब तेहि नारि शोच रति भारी। बिकल मीन जैसे बिनु बारी॥ दशा देखि तेहि कह त्रिपुरारी। अब

जनि शोच करै तू बारी॥ जब यदुवंश लिहे अवतारी। रुक्मिणि होइहि कृष्णकी नारी॥ तिन्हकर सुत ह्वैहै पति तोरा। शम्बासुर गृह जात बहोरा॥ तेहिगृहरहतू दासीहोई। तव पतिमिलततोहि सुनिसोई॥ सुनिअस वृद्धरूप तेइँ धरेऊ। पाककरन ताकेगृह रहेऊ॥ मायावतीनाम तहँ धारी। भईशिरोमणि सबगृहनारी॥ कछु दिनगत जन्मातहँकामा। रुक्मिणिउदरतेज़छबिधामा॥

दो० तबहिं ज्योतिषिन बोलिके पूछनलगेवसुदेव।
जन्म लग्नयाके कहहुकहा सकलसुनिलेव॥

चौ० यह बालक श्री कृष्ण समाना। जलमहँ दिवस कछुक रहिनाना॥ बहुरिपु मारिमिलत पितु आई। सुनहुभूप याकी प्रभुताई॥ नाम प्रद्युम्न राखि तब दीन्हा। दक्षिणापाइ गमनगृह कीन्हा॥ तबनारद शम्बर गृहगयऊ। जाइताहि अस भाषतभयऊ॥ तव रिपुजन्मकृष्ण गृहलीन्हा। सुनतहि असुर गमन तहँ कीन्हा॥ राखारूप पवन भूपाला। उड़ालेइके कृष्ण केलाला॥ दिवस अष्टदशके रहेकामा। दियोनाइ जल महँदुखधामा॥ यहांभेदनहिं जानेउ कोई। सत न पाइ रुक्मिणि अतिरोई॥

दो० मत्सएक निगालातहां यदुनन्दनके लाल।
किधेसोइ प्रतिपालतहँ कृष्णलाल असाल॥

चौ० केवटगहा मत्ससोइ जाई। भेंटदियो शम्बासुरआई॥ असुरभेजदीन्हा जहँनारी। जबकढ़ै ताके उदर

बिदारी ॥ श्यामरूप बालककहँ देखा। भई आनन्दित हृदयविशेषा ॥ तेहि अवसर नारदतहँ आये। समाचार सबरतिहि सुनाये। यह तवपति यदुबर गृहजाये ॥ शम्भु कृपायाको तुमपाये ॥ जबयहबालकहोयसयाना। शम्बरासुरको करतनिदाना ॥ तोहि लइजात द्वारका धामा। जहां रहत लोचन अभिरामा ॥ असकहि मुनि विधिलोक सिधाये। सोलगि पालनचित हरषाये ॥ जैसे बाढ़त पतिरति केरो। वैसे उपजतमोदघनेरो ॥

दो० पंचवर्षके भयोजब तब दिय वसनपिन्हाय।
रतिजानत पतिभावसे सो टेरत करिमाय ॥

चौ० भये प्रद्युम्न वर्षदश जबही। उपजाज्ञान कछुक उर तबही ॥कहनलगे रतिसे असटेरी। तुमपति जानत मातामेरी ॥ तबरति कहिदीन्हीं सबबाता। जिमिसोतिय जिमि रुक्मिणि माता ॥ याविधि लायो शम्बर जाई। सकलकथा तेइंदीन्ह सुनाई ॥ शत्रुतबहिं शम्बरको जाना। युद्धकरनहित मनअनुगाना ॥ युधविद्या रतिदीन्ह सिखाई। द्वादशवर्ष गयानियराई ॥ तबप्रद्युम्नकोअति बलवाढ़ा। सभाजाइ युधअकुरकाढ़ा ॥तब शम्बरासुरसेना लाई। युद्धकरन लागा रिसिआई ॥ प्रथमगदातेकीन्हो युद्ध। हरिसुतगिरा दीन्हकरि क्रुद्ध ॥ अग्निबाण छांड़ेसि पुनिकोपी। बुझादीन्हजलबाणते सोपी ॥

दो० अमितशस्त्र दियकाटिजब तबहिभिरेउदोउबीर।
तदपि न हारैकृष्णसुत तबकोपा रणधीर ॥

चौ० मायाते पषाण बरसावा। निजगुण हरिसुतताहु

नशावा॥ तबतेइ लेइउड़ा असमाना। माराहरिसुत कठिन कृपाना॥ काटिदीन्ह जबताकोमाथा। क्षणमहँ हती सेनसबसाथा॥ सुरनलगे तहं सुमनगिराना। नर सब कह धनिसुत भगवाना॥ हरि बिलोकते असबल जबही। करत दानलोक त्रियतबही॥ तबप्रद्युम्न रती सँगआई। उड़नखटोल चढ़ेहरषाई॥ रतिअरुपति तहं सोहहिं कैसे। श्यामघटा महंदामिनि जैसे॥ गयेद्वारका हरिगृह दोऊ। चीह्नि सकी नहिरुक्मिणिसोऊ॥ कुच ते पयजब निसरन लागा। जान्यो आयगयो सुतत्या-गा॥ हरिइच्छाते नारद आयो। समाचार सुतदीन्ह सुनायो॥ तबरुक्मिणि सुतलीन्हदुलारी। देखिपतोह भयोसुख भारी॥ तबदोनोकहँ कीन्हविवाहा। श्रीवसु-देवरु मथुरानाहा॥

दो० मंगलबाणी उच्चरहिं घरघर नर अरु नारि।
जगन्नाथ सुत खोयहूं पाये गिरिवरधारि॥

इतिश्री कृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतप्रद्युम्नजन्मशम्बरबधवर्णनोनामपंचपंचाशतमोऽध्यायः ५५॥

दो० जिमि सत्राजित यादव मणिकीचोरिलगाय।
लज्जितह्वै पुनिकृष्णको दियोसुताहिविवाहि॥

चौ० सोइकथा अबकरौं बखाना। सुनु भुवाल अब दे तुमकाना॥ रविकर तप कीन्हेसि तेइँ भारी। भे प्र-सन्न तबहींदिनकारी॥ मणियक सेमन्तक तेहिनामा। दिये ताहि दिनकर सुखधामा॥ कहन लगे हर्षितपुनि ताही। यहमणि रहत नगरमहँ जाही॥ तहां न रोग

दुकालहु व्यापै। पूजतनहिं पावहु परितापै ॥ असकहि
भेप्रभु अन्तर्द्धाना। सोनिजगलेपहिर गृहआना ॥ मणि
प्रभाव रहअसनरकेता। श्रुतिविधि पूजतप्रीतिसमेता ॥
हाटकदेइताहि मनबीशा। लगासो पूजनआइ महीशा ॥

दो० सोइ मणिके परतापते होइ गयो धनवान।
दिवसएकअभिमान युत गयोजहां भगवान ॥

चौ० यदुवंशी ताकहँ जबदेखा। कहाकृष्णसों रवि
धरिवेषा ॥ आयेदर्शनहेतुगोसांई।कहहरियह सत्राजित
भाई ॥ रवितप ते पाई मणिऐसी। तिन्हसम ज्योति
देखतहौजेसी ॥ विहँसिकहा तेहिगिरिवरधारी। यामणि
केहैं नृपअधिकारी ॥ तातेउग्रसेन कहँदेहू। दोउ लोक
महँ जेहियशलेहू ॥ लोभविवश उत्तरनहिदीन्हा। करि
परणाम गमनगृहकीन्हा ॥ तहां अनुज परसेनहिं पाई।
कहीकथा मांगन यदुराई ॥ हैं प्रभुसब देवनपति आपू।
तिन्हप्रताप मणि घटाप्रतापू ॥

दो० सुनिभ्राताकरि कोपतेहिं बांधिगलेमणिसोइ।
गाअहेरलगि बाजिचढ़ि तहंमृग देखाकोइ ॥

चौ० भाजामृग तेहिपाछे धावा। प्रविशागर्त्त व्याघ्र
जहँछावा ॥ अश्वचरण सुनिशब्दनिदाना। व्याघ्रलियो
तीनोकेप्राना ॥ सोइ कन्दर रघुकुलमणि दासा। आवा
जाम्बवन्त सुखरासा ॥ व्याघ्रमारि मणिकहँ लेलीन्ही।
रही सुता तहि खेलन दीन्ही ॥
भारी। रहत प्रकाशित गतअँधियारा ॥ सत्राजीतसुना

तेहिमरना । सुनतशोच लागा मनकरना ॥ जानाकृष्ण मांगरह सोई । बनमें जाइ हतेजनिहोई ॥

दो० रहा शोचमे जबहिं सो नारी पूछसिआई ।
समाचारसबकहिदियोजनिभाषेसिकेहुजाइ ॥

चौ० नारिन उर नहिरहु कोइ बानी । सखियन ते सब बात बखानी ॥ कहिदियकेउ हरिके गृहमाही । कृ-ष्ण प्रसेन हते शकनाही ॥ लगा कलंक मृषा यदुराई । जायकहा वसुदेवहिं पाई ॥ पुनिलै कछु यदुबंशीसाथा । गये कलंक मिटावन नाथा ॥ अश्वरेख पद देखतआये । कदर निकट श्री यदुपति आये ॥ यदुबंशी जब देखा तेही । जानाव्याघ्र सहारेउयेही ॥ देखा बहुरि ताहुकर लासा । पाईनहिमणि जबसुखरासा ॥ भीतरजानचहा यदुराई । वर्जेउ यदुबंशी समुदाई ॥ छुटा कलंक जाहु जनिनाथा । हम न कइबतेहि बधकी गाथा ॥ कहाकृष्ण रहहूसब ठारा । द्वादश दिवस अवधि निरधारा । जो नहिं फिरौं बहुरि चलि जाहू । अस कहिप्रविश गये जगनाहू ॥

दो० देखा सुन्दर थानतहं जाम्बवन्त को बास ।
पलनेमहं खेलति सुता तंहिकरमणिसुखरास ॥
जाम्बवान रह सैन में तहं तेहि दासी वेश ।
हरिमणिलेनचही जबहिं दीन्हेसिउठाऋक्षेश ॥

चौ० मल्लयुद्ध हरितासोंठाना । रहा सप्तविश दिवस प्रमाना ॥ क्षुधित होय शोचत जमवाना । असकोलड़त बिना भगवाना ॥ रामचन्द्र लीन्हों अवतारा । श्याम

रूपधरि असुर सँहारा ॥ जानि उपासक श्रीवनवारी ॥ दरशदिये शर धनुकर धारी ॥ तब अस्तुतिलगकरजम-वाना। नारद वचन सुनारह काना ॥ यदुकुल हरि लेइहैं अवतारा। त्रेताते रह आश निहारा ॥ तुम्हरी महिमा जान न कोऊ। आदि अन्त घटघट रह जोऊ॥

छं० प्रभु अवधपुरीअवतारलिये। पुनि जनकसुताते ब्याहकिये ॥ पितु आयसु बनहिं सिधारे जबै। सिय संगचली रघुनाथ तबै ॥ तहँरावण हरि जब सीयलई। वनमें कपिराज ते भेटभई ॥ प्रभुफांदि जलधि हनुमान गये। पुर लंकजरायके खबरिदिये ॥ सियकोसुधिलाइ दईजबहीं। प्रभुलंकपयानकियेतबही ॥ तहँरावणमारि सियातेमिले। सँगलेइबहुरिनिजपुरहिचले ॥ तहँसहस यकादशवर्षप्रभू। करिराज दिये सुख गोद्विज भू ॥ तब रह्योतिरेता युग आसा। दर्शन की राखतरह दासा ॥

सो० अवधोकहु केहिकाम भयाआगमन कन्दरहिं।
कहिदीन्हे सुखधाम मणिहित हौं आयेइहा ॥

चौ० ह्वैसंतुष्ट तबहिं जमवन्ता। कहनलागु सुनिये भगवन्ता ॥जाम्बवतीममपुत्रीअहई। तेहिसमेत दीन्हेउ प्रभुकहई ॥ अंगीकारकियेयदुराई। तब कन्याते ब्याह कराई ॥ सोमणिदियोदहेजहिराई। फिरेताहिलैत्रिभुवन सांई ॥ चतुर्विंशदिनसबनरसंगा। तहंरहफिरेशोचिबहु-रंगा॥ गयेद्वारकापुरीमझाई। सत्राजित तेरारिमचाई ॥ रुक्मिणादितेहिं गारीदेही ।संकर्षणवर्जहिंसबकेही॥हरि सन्मुख शककालन आई। अइहैंअवशितजहुविकलाई ॥

दो० हलधर के समझान ते भयो न धीरजकाह ।
रुक्मिणादिनारीसकल खोजनगइँजगनाह ॥

चौ० देवस्थानजहां कहुंपावें । हरिकेमलिनमनी गावें ॥ याविधि क्रोशमात्र जब आये । मणि तिय सं हरि तबहि दिखाये ॥ हरषित सकलगान बहु गावत । आई हरिसँग बहु सुखपावत ॥ तब पितु हरिकर दा दिलाये । भयेसंतुष्ठ कहा नहिजाये ॥ यादव एककह हंसि यदुवर । मणिनव्याह हितगैताकेघर ॥ सत्राजि तहि बुलाइ बहोरी । देनलगे मणि हरिबरजोरी ॥ ज बिधि मरण प्रसेन नृपाला । सो कहि तेहि सब दीन कृपाला ॥ लेइमणि तेहि क्षण लज्जित भयऊ । व्याहि सत्यभामा हरिदयऊ ॥ रही जोमणि सेमन्तक नामा । दियो दहेजहि सोइ सुखधामा ॥

दो० कहाश्याम जनिशोचउर जेहिकछुखोयोजाइ
करतसो शंकासबहिपर मणिनलिये यदुराइ ।
तब सतभामहिं संगलै गे गृह गिरिवरधारि ।
सो मणिलियो लजाइकै क्षमाकीन्हबनवारि ॥
भादों शुक्ला चौथि को देखा चन्द्र कृपाल ।
तातेमृषाकलंक भा सुनहु मुदित भूपाल ॥
भादौं शुक्लाचौथि को अवलोकै शशि कोय ।
श्रवणकरैयहचरितनर तोकलंकनहिंहोय ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथतेजाम्बवतीसत्यभामाविवाहवर्णनोनामषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

दो० राजनदिनयक कोउकहा श्यामसुंदरतेजाय।
दुर्योधनपँच पडवन गिरिकन्दर मह नाय॥

चौ० पावकदिहेसि लगाइ गुसांई। सुनतहि श्रीहल-यदुराई॥ गयेहस्तिनापुर प्रभुजबही। विदुरभक्त हँ हरिते तबही॥ कहासत्य प्रभुतव परतापा। भया नहिं नहि कछुसंतापा॥ तब हरिबागमें डेरादयऊ। तहरिपुर इक अचरज भयऊ॥ सतधन्वा यादव रह कोऊ। सतभामारहि भाषितसोऊ॥ सत्राजीत कहारह ताही। सतभामा तोहि देव बिवाही॥ तेहि न देइ सो हरिकहँ दीन्हा। तहँअक्रूर गमन नृप कीन्हा॥ कृत-वर्मा यादव लै संगा। कहनलगे दोउ मिलि बहुरंगा॥ पुन सतधन्वा कहौंबुझाई। सत्राजितहरि चोरिलगाई॥

दो० पुनतेहि मृषाबिवाहकी कहिहरिसे करिदीन्ह।
ताते मारो वेग खल सुनत गमनतेइँ कीन्ह॥

चौ० सत्राजीत शयन कर जहँवां। सतधन्वा भा आवततहँवां॥ काटिदीन्ह शठताकीग्रीवां। लैसोइमणि हाटककीसीवां॥ आपनभवन गमन तेइ कीन्हा। जब तेहि नारिआइ पतिचीन्हा॥ बिलपनलगी शोच अधि-काई। तबलग सतभामा तहँ आई॥ शोचित मातुहि धैर्य्यधराई। पितालोथदिय तेलहिंनाई॥ रथचढ़िगई जहांहरिदाता। कहिदीन्ही सबही कुशलाता॥ सुनतहिं तेहि समेत यदुनाथा। आवतभये द्वारकासाथा॥ तब सतधन्वा चढ़ि यकघोरा। भाजानगर जनकपुरओरा॥

दो० सतभामा को भेजिगृह हरि हलधर दोउभाइ ।
रथ चढ़ितेहि पाछेगये जो मगजात पराइ ॥

चौ० कालविवश मरिगातेहिंचोरा । भाजत तेहि देखा चितचोरा ॥ संगछाड़िअग्रज बढ़िगयऊ । चक्रहिं हरि तब आयसु दयऊ ॥ चक्र सुदर्शन काटेउमाथा । मणि खोजनलागे यदुनाथा ॥ मिलान तब हलधरपहँ आये । मिलीनमणि अस जासु सुनाये ॥ असतिन्हउर ना शक भगवाना । तियहिदेन हितकरतबहाना ॥ अस उर आनिकहा सुनुभाई । नगर बिलोकि जनकपुरजाई॥ तब अइहौं तव निकट बहोरी । कृष्ण फिरे बलगे पुर ओरी ॥ भूपजनक पुर आवन जानी भवनलाइ राखा सनमानी ॥

दो० दुर्योधनसुनि आगमन आइ तिन्हहिंलैजाइ ।
युधविद्यासीखन चहतकहा बलहिशिरनाइ ॥

चौ० देखि प्रेम संकर्षण तेही । युद्धकरन विद्यातेहिं-देही ॥ इत हरिआये जब गृहमाहीं । कहतियमणि सो मिली कि नाहीं ॥ कहहरि मिली न मणितेहि मारा । सुनशकभा सत्य भा महिभारा ॥ हरि हलधरहि देनके कारन । करत बहाना असुर संघारन ॥ कृतवर्मा अक्रूरहु तबहीं । भाजिगये भयआतुर सबहीं ॥ सतधन्वा भाजा रह जबहीं । मणिदिये रह अक्रूरहि तबहीं ॥ कृतवर्मा गादक्षिणआशी । बसअक्रूरजायकेकाशी ॥ मणिलेद्रव्य मिलतअक्रूरहि । करत कर्मशुभरुचिपरिपूरहि॥ तातेरोग नव्यापैताहीं।कृषीहोयसुखसततजाहीं ॥

दो० मणिलीनो अक्रूरही जानत दीनदयाल।
जगन्नाथ तद्यपि नही कहाकाहुतेहाल॥

चौ० गदायुद्ध कछु दिवस सिखाई। आये बहुरि कृष्ण के भाई॥ लोथ निसारितबहिं अविनाशी। निज करकिये क्रिया सुखराशी॥ जब अक्रूर बुलावनचाहा। रुक्मिणि पति सब जगके नाहा॥ परादुकाल द्वारका माही। आये शरण सकल हरिपाही॥ अस्तुति करन लगे शिरनाई। तुमबिनकोरख प्राण गुसाई॥ कहहरि संतत जेहि जेहि गेहू। सो थलहोत अवशबिनुमेहू॥ गे अक्रूर द्वारकाछांड़ी। ताते अस दुकालगाबाढ़ी॥ अबधों जाइ तिनहिं लैआवहु। तबनर नारि सकलसुखपावहु॥ सुनियदुवंशीकतक सिधारे। कहाजाय यदुनाथहँकारे॥ सुनिअक्रूरतहां चलिआये। छुटादुकालसकलसुखपाये॥

दो० हरिआयसु ते मणि बहुरि सभादिखाईजाय।
तबसतभामा हलधरहिमिटा भरमदुखदाय॥

तब हलधर औरहु अक्रूरा। चरणपरे श्रीपतिसुखनूरा॥ करि अपराधक्षमा बनवारी। कहनलगे सबही सुखभारी॥ जाकरवस्तु रहे तेहि दीजै। सो न रहै तब पुत्रहिं लीजै॥ पुत्र रहेनहि तब तेहिनारी। नारि न तब कन्या सुत सारी॥ सोउ न रहै तब ताकेभ्राता। भ्रात न होय तो कुलकेहु पाता॥ जेहिकुल कोउ रहेनहिं वाके। तब दीजिये गुरू कहँ ताके॥ गुरु न होय तो गुरुसुत लेई। सो न होय तो विप्रहिदेई॥ आनकवस्तु न चाहियलेना। ताते सुत सत्राजित देना॥

दो० सत्राजितके सुतनहीं सतभामा कहँ देहु ।
असकहिमणि तेहि देदई संशय छूटातेहु ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ
कृतेशतधन्वाबधोनामसप्तपचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

दो० नरपति सत्राजीतके मरणसुनत चितचोर ।
फिरे हस्तिनापुर ते गये द्वारका ओर ॥

चौ० भयोस्मरण तबै यदुराई । हैं दुख मे पांडव बहु
भाई ॥ चले हस्तिनापूर बहोरी । अबसुनहाल पांडवन
कोरी ॥ सुनासकल आवनप्रभु जबहीं । पांचौंभाइ मिले
तहँ तबहीं ॥ सादरलेगयेमन्दिरमाहीं । नारि न सबतहँ
देखनपाही ॥ सिंहासनबैठे यदुराई । चरणधोइ भोजन
करवाई ॥ कुन्ती कह प्रभु कहु कुशलाई । नीके हलधर
अरु पितु माई ॥ किरपा करि आये दुखहरणा । जानि
पांचभ्रातन निजमरणा ॥ करहु दया प्रभु दीनदयाला ।
पाईआरत सकल विशाला ॥

दो० कहतयुधिष्ठिर सुनहुप्रभु वरषाभरिचौमास ।
रहिदासन सुखदीजिये तबरहिगेसुखरास ॥

चौ० नयेनये सुखदेहिँ बिहारी । कुन्तीफूफुहिं भ्रातन
भारी ॥ करनअहेर दिवसएक नाथा । अर्जुन संग चले
बनसाथा ॥ बनमहँ अर्जुन किये शिकारा । सामर मृग
आदिक बहुमारा ॥ ब्याघ्र भालुआदिक बहुमारा ॥ गृह
पठये आमिष आहारा ॥ प्यासलगी तब दोनों भाई ।
पानकिये यमुनाजलजाई ॥ अर्जुनशयनकिये तरुकेतर ।
उठि पुनि फिरनलगे उरमुदभर ॥ देखा यमुनाजलएक

मन्दिर। तहँ तपकरत नारि एक सुन्दर॥ केहि कन्या केहिलगि तपठानी। पूछाअर्जुन कहत सयानी॥

सो० कालिन्दीममनाम भानुसुता तिनकोभवन।
करोंध्यानसुखधाम जेहिपतिहोवैंनन्दसुत॥

चौ० सको न जाय द्वारकाधामा। हरिसेवहिं तहं बहुसुठिधामा॥ दीनदयाल दयाकरिआवैं। पुरेमनोरथ दरशदिखावैं॥ सुनिअस अर्ज्जुन प्रभुपहँगयऊ। समाचार सब भाषत भयऊ॥ सुनत गये हरिताके गेहा। उठीप्रफुल्लित सहितसनेहा॥ हौंप्रभुमनक्रमते तवदासी। चहउं जान संगहि अविनासी॥ सुनि हरिरथपर लीन्ह चढ़ाई। आय हस्तिनापुरहि सुहाई॥ विशकर्माप्रथमहि प्रभुधामा। रचारहा यक अधिक ललामा॥ तहांरखा कालिन्दिहि जाई। धरिइकरूप रहे यदुराई॥

दो० आनरूप अर्ज्जुन सहित गये कुन्ति के धाम।
अग्निदेवतहँ आयकै विनयकीन्ह घनश्याम॥

चौ० क्षुधितअहौं प्रभु चाहौंखाना। नन्दनवन तरु विस्मयनाना॥ देवराज के सोवन आछे। खान कहा तब हरि तिन्ह पाछे॥ लैधनु अर्ज्जुन रक्षन नृपाला। गये लगे बन जलन बिशाला॥ तबधौं कोपित देवन राजा। मेघराजपठवा सँग साजा॥ आइ लगा तेहि जलवरषाना। पवनबाण अर्जुनसंधाना॥ तुरतबिगत भा मेघमहीपा। अग्निगये मय गेह समीपा॥ रहासो निशिचर हृदयडेराई। आवा अर्जुनकी शरणाई॥ ताते अग्निभवन तजिदीन्हा। मयके उर आनन्दितकीन्हा॥

दो० एकसभा सुन्दरपरम रहन युधिष्ठिर आय।
रचिदीन्हेसिअवलोकिजेहिउर तेहिलेतचुराय॥

चौ० वारिसहित जे कुंडसुहावा। सोबिनुबारिदिखन महँ आवा॥ जो बिनुबारि सो बारि सहेता। परत लखाइ सुनहु नरकेता॥ एकदिवस दुर्योधनआवा। बारि देखि जब बसनउठावा॥ भीमसेन बिहँसे तेहि देखी। बढ़ीशत्रुता हृदयविशेषी॥ लज्जितह्वै निजधामपधारा। इतपावक लखि रक्षक भारा॥ अर्ज्जुन कहँ दीन्हे रथ एका। भाथ एकयुतबाण अनेका॥ घटे न बाण सिन्धु अनहारी। बाजी चारचर्म तरवारी॥ गांडिव एकधनुष अतिसोहर। अर्जुन लेइगये जहं यदुबर॥

दो० हरि तहँ चातुर्मासरहि कहा द्वारका जान।
सुनिपांडवतियद्रौपदी कुन्तिआदि सकुचानि॥

चौ० तब धीरज तिन्ह दै घनश्यामा। कालिन्दी लै गय निजधामा॥ हरिहिदेखि सबपुर की नारी। पुरुष सहित भईं परमसुखारी। उग्रसेन ते कह हरि जाई। देहुबिवाह सुता रविकाई॥ तब शुभ लग्न माहँ हरि नाना। दियं बिवाह कृष्णहरषाना॥ भूप सुनहु अब कथारसाला। मित वृन्दाजिमिवरे गोपाला॥ हरि फूफू राजाधी नामा। तेहिकन्या अतिरूप ललामा॥ भई बिवाहनयोग सो जबहीं। मित्रसेन तेहि भ्राता तबहीं॥ रचे स्वयम्बर तहं सब भूपा। आये हरिहु गये सुखरूपा॥ हरिछबिदेखिमोहितभइ बाला। डारिदियो प्रभुगल जयमाला॥ दुर्य्योधन भाषा तेहि भाई। अस

अनुचित देखेउ नहि काई ॥ कृष्णहोइसुत तुम्हरोमामा। कर बिवाह सत बहिन ललामा ॥

दो० सुनिअर्ज्जुनप्रभुश्रवणलगि कहासुनहुकाबात।
जसविचारसोइकरहुअब सुनिहरिकोमलगात॥
धरिकरसो कन्यात्वरित अर्ज्जुनसंग चढ़ियान।
चले द्वारका ओरको रिपुगण चले निदान ॥

चौ० अस्त्र शस्त्रलै भूपन धाये। शरनि मारि प्रभु सभहि भगाये ॥ आयद्वारका कीन्ह बिवाहा। अबसुनु चरित अपर नरनाहा ॥ अवधपुरी महँ एक भुवाला। नग्नजीत तेहि नाम नृपाला ॥ सत्यानाम सुतातेहि स्यानी। व्याह योगभइ तव नृप जानी ॥ रचा स्वयम्बर या विधि राई। सप्त वृषभ एक बारहि आई ॥ जोनाथे सो होवे नाथा। अस सुनि गये तहां सुर नाथा ॥ अमित भूपतहँ आये भारी। सका न नाथ कोइ सब हारी ॥ तब हरि सप्तरूपधरि सुन्दर। नाथदिखायेनाथ नृपति वर ॥

छं० भयधरिइकरूपा पुनिसुरभूपा रजुधरिठाढे हाथा।
देखाजबनरपतिभामुदउरअति सुताबिवाहीसाथा ॥
दियोयौतुकगाई अयुतसहाईमुदित सहसत्रयदासी।
नवलक्ष तुरंगा क्रोड मतंगा रथनवलक्ष हुलासी ॥
जव चले मुरारे भूपन सारे युद्ध किये बल भारे।
गांडिवधनुधारे अर्ज्जुनमारे बाणहिंलगत सिधारे ॥
आये तबधामू तियसंग श्यामू नगरभये आनन्दा।
सुनिकेहरिआनागावहिंगानाघरघरनारिन वृन्दा॥

दो० देखिदहेजप्रसंशही सकल नगरके लोग।
हरिहलधरसबदेदियेअर्ज्जुनकोकरुभोग॥

चौ० ताहिदेइ जगमें यशलीन्हा। कथा सुनहु नृप अरु जस कीन्हा॥ रीति सुकृतगये नगरके राई। भद्रा ताहि सुता छबि छाई॥ भई जबहि सो व्याहन योगू। रचा स्वयम्बर गये नृप लोगू॥ तहँ हरि अर्ज्जुन संग सिधाये। हरिहि सुता दिय माल पिन्हाये॥ तब नृप व्याहिदीन्ह यदुराई। तेहिलै गृह आये सुख दाई॥ मंगलचार करहिं सब ताहां। सुननृप अपर कथा जगनाहां॥ रहा नगर भद्रा नृप कोऊ। व्याहन योग सुता तेहि होऊ॥ रचा स्वयम्बर सब नृप आये। तहँ हरि अर्ज्जुन सहित सिधाये॥ हरिकहं जयमाला तेहि बाला। पिन्हादिये उर हर्ष विशाला॥

दो० तबनृप दीन्हबिबाहहरि जानलगे गोपाल।
भूपन आये युध करन शरभयभजे कराल॥
आये हरि पुरद्वारका नग्र भये सुखखानि।
रहनलगेप्रभु हरषयुत सँग आठौपटरानि॥

सो० रहालक्ष्मणानाम अन्तजोब्याही जगतपति।
सबसेवहिं सुखधाम जगन्नाथ आनँद मगन॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास
जगन्नाथकृते श्रीकृष्णपंचविवाहकरणोनाम
अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः५८॥

दो० राजनदिनएकदेवऋषि सुरतरुपुष्पसुहाय।
दियेलायकरकृष्णको हरिदियेरुक्मिणिजाय॥

चौ० तब सतभामागृह मुनिआये। दीन्हीं याविधि रारलगाये॥ रुक्मिणि हरिकहं अधिकै प्यारी। पुष्प सुगध ताहिदिय डारी॥ सतभामाके उर रिसिभयऊ। याबिधि हरि तेहि धीरजदयऊ॥ सुरतरु तवगृह रोपब लाई। सुनतवचन तेहिक्रोधपराई॥ धरणिकिये एकदिन तपभारी। दरशनदिये विष्णु दुखहारी॥ कहादेहु अस बर भगवाना। पावौं पुत्र महाबलवाना॥ जो काहू से मरे न मारे। तब अस वर दीन्हा असुरारे॥ होत पुत्र भौमासुर नामा। जीत न सकत कोउ संग्रामा॥

दो० सबभूपनको जीतके देवन जीतत सोइ।
सोरहसहसअरुएकशतधरतसुतान्पगोइ॥

चौ० जब हरिलेहिं कृष्ण अवतारा। तबअवश्य तेहि करैं संहारा॥ असकहि ते भय अन्तर्द्धाना। धरणी तब निज उर अनुमाना॥ कहिहौं सुत किमि लेनो प्राना। जब अवतरिहैं हरि गुणखाना॥ अस जियजानि तजा तपसोऊ। कछु दिनमें इकसुत तेहि होऊ॥ अति बल-वन्तभया सोनिशिचर। जीति नृपतिकन्यालै निजघर॥ सोलह सहस एकशत राखी। औरहु लावन को अभि-लाखी॥ नृपनसुता उर बिलखत भारी। तहां देवऋषि जाय उचारी॥ जनिशोचहु ऐहैं गिरिधारी। लेजैहैं स-बहो मुदभारी॥

दो० सुनिसब हरिसुमिरणलगीं भौमासुरबलवान।
गया इन्द्रते युद्धकोभय सुर दुखित निदान॥

चौ० कुण्डल तबहिं अदितिकेछीना। छत्र देवराजाको

लीन्हा ॥ निजपुर जाय साधुदुख देता। इन्द्र गये तब जहं सुरकेता ॥ करि अस्तुति दुखदिये सुनाई। भौमासुर प्रभु अधिक सताई ॥ सुनिहरि इन्द्रहिं धीरज दीन्हा। तब निज लोक गमन सो कीन्हा ॥ हरिचढ़ि सतभामा संगजाना। क्षणमह गये असुर अस्थाना ॥ निरमित कुधर दुर्ग अतिभारा। अन्तररचे शस्त्रको सारा ॥ तृतिय दुर्ग महं नीर भराई। चौथेमांह अग्नि लहराई ॥ पंचम दुर्गवायुभरिरहेऊ। षष्ठमरजुजालहिनिरमयऊ ॥ सप्तम अष्टधातु निरमावा। तहांबास भौमासुर छावा ॥

दो० तब हरिआयसु पाइके चक्रसुदर्शन आय।
गरुड़साथ गढ़तोडिके दीन्हों मार्गबनाय ॥

चौ० सप्तम द्वार निकट जब गे हरि। लक्षपौर आये तहं रिसकरि ॥ क्षणमहं खगपति सबहिं संहारी। तब हरिकीन्ह शखध्वनिभारी ॥ सुनतशब्द तह जागुमुरारी। शोचनलाग हृदयनिज भारी ॥ कौनबीर असदेखोजाई। ताहि समय मंत्रीकह आई ॥ याबिधि शोच करहु क्यों राई। मैं देखिहौं जाइ तेहिपाई ॥ मंत्री मूर त्रिशूलहि लीन्हे। आयो अरुण नयन तहं कीन्हे ॥ आय त्रिशूल चलावाजबही। काटिदियेहरिचक्रते तबही ॥ पांच माथ कोरहा सोनिशिचर। ग्रसनहेतु धावा हरिऊपर ॥

दो० भयआतुर तियदेखिके काटिदीन्ह संग्राम।
जगन्नाथ प्रभु याहिते भयो मुरारी नाम ॥

चौ० सुवनसात सुनिपितासंहारा। आबेदललेइअति बिकराला ॥ चक्रसुदर्शन ते हरि काटा। सुनि भौमासुर

तबलेइ ठाटा ॥ आवायुद्धकरन हरिपाहीं । गदाचलावत काटत जाही ॥ शस्त्र भुशुण्डि आदि बहुछंडे । लीलहि कृष्ण सभीकहँखंडे ॥ तबकरिकोप खड्गयकमारा । से'उ-न लगा तेहिभा दुखभारा ॥ जाइ त्रिशूललाइ गृहभारी । मारणचाहा हरिहि सुरारी ॥ महि अवतार तबहि सत-भामा । हतनकहा तेहि श्रीघनश्यामा ॥ तब हरि काटि दीन्ह तेहिमाथा । बरषहिंसुरन सुमन नरनाथा ॥

दो० तबधरणी ह्वै बिकलउर लेइपोतारु पतोह ।
कुण्डल छत्रहु लाइकै भेट देइ रिपु मोह ॥

चौ० अस्तुति करनलगी हरषाई । तुम्हरी महिमा जानि न जाई ॥ रहाप्रभू मोहिं असवरदाना । ममआ-यसुबिनु सुत न नशाना ॥ काहे हने प्रभू मम बालक । तब करिसैन कहा रिपुघालक ॥ सतभामा महिकीअव-तारा । सुनतहि लज्जितभई अपारा ॥ क्षमा करहु प्रभु सुत अपराधा । करहुअभय तेहिं सुतलखिसाधा ॥ तब तेहि सुतपर कर हरिफेरे । धीरजदिये ओर निजहेरे ॥ धरा पतोह महासुनसांई । पावनकरहु गेह मम जाई ॥ जायमनोरथपूरणकीन्हा । राजतिलक भौमासुरदीन्हा ॥

दो० भौमासुतभगदततबहिं सबहीबसनपेन्हाइ ।
दीन्हेसिराजकुमारिकनि शिविकामाँहचढ़ाइ ॥

चौ० नारिनहूं छबिधाम बिलोकी । चहा करन पति स्वामि त्रिलोकी ॥ हरि तिन्ह प्रीति जानि ततकाला । पठईगेह अनन्द विशाला ॥ हस्तीसाठ श्वेत नृप दीन्हा । सोउ नारिन संग पठवन कीन्हा ॥ सतभामा संग तब

यदुराई । कुण्डलछत्रलेइ हरषाई ॥ गे अमरावति पुरी सुहाई । सुरपति सिंहासनबैठाई ॥ अस्तुति करनलगा हर्षाये । सुनतहिं देवऋषीतहंआये ॥ कुण्डलछत्र तबहि हरि दयऊ । सुरमाता आनन्दितभयऊ ॥ कहहरि मुनि तुम इन्द्रते जाई । कहु सुरतरु मांगत भौजाई ॥ नारद कहा सो तियपहं गयऊ । समाचार सब भाषतभयऊ ॥

दो० नारिकहा तेहि देहुजनि यहीहरी तवटेक ।
याहीगिरिपुजवायऊकीन्हेसिबिपतिअनेक ॥

चौ० तब मतिअध कहा मुनि पाई । नंदन तरु सक कतहुं न जाई ॥ जो लैजाय कृष्ण बरजोरा । करबयुद्ध तब मैं अतिघोरा ॥ कहामुनो सुनि गर्ब प्रहारी । वृक्ष उखारि गरुड़परधारी ॥ गये सतीयद्वारकाधामा । किय विवाह सबतेघनश्यामा ॥ इन्द्रहिपुनिनारदसमझावा ॥ युद्धकरन ताते नहिं आवा ॥ रचारहा विशश्कर्मागेहा । तहांरहे सब सहित सनेहा ॥ सब गृह मे हरिधरि यक रूपा । बासकरनलागे सुरभूपा ॥ सतभामागृह सुरतरु जाई । देवकिनन्दन दिये लगाई ॥

दो० सोरहसहसरुएकशत नारिनसहितगोपाल ।
जगन्नाथ हरषित रहत तेसेवहिं सबबाल ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेभौमासुरबधोनामऊनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥ ॥

दो० राजन यकदिन कृष्णजू रहे रुक्मिणी गेह ।
सोहबिछावन मखमली बैठे सहित सनेह ॥

चौ० तहां रुक्मिणी चमर डोलावै । निकट बैठि छबि

धामहिध्यावैं ॥ हरि मायाते भा तेहि गर्वा। मैं प्रिय अधिक तियन ते सर्वा ॥ हरि अंतर्य्यामी सब जाना। प्रेम परीक्षाहित भगवाना॥कहा सुनहु नृप कन्यास्या-नी। छांड़ि सकल राजागुणखानी ॥ हमते किये विवाह अबूझा। मैं तिनते न सको करि जूझा ॥ औरहु जो मम भक्तन अहहीं। धनविहीन सतत दुख लहहीं ॥ जात अहीरचरावतगाई। निजकुलमहकलकतुमजाई ॥ अबधौं अस विचार कहुं जाई। करोऽव्याह नृप धनी बनाई ॥

दो० सुनि रुक्मिणी कठोरता रोवन लगी बेहाल।
तवधौं हरि धीरज दिये हांसीकीन्हेउं बाल ॥
राखि चतुर्भुज रूपदोउ करते लीन्ह उठाय।
यककरते मारुत करत यक ते अलक बनाय ॥

चौ० तव हरि देखि कहत सो वाला। अस कठोर किमि कहेउ गोपाला॥ हौंमनक्रमते तुम्हरी दासी। तुम ते बड़ नृपको अविनासी ॥ तीन लोक के तुम ही देवा। ब्रह्मा रुद्र न जानहि भेवा ॥ तुम्हरे भक्त रहहि धन हीना। भजन न होय धनीते कीन्हा ॥ कह हरि कियउ परीक्षा प्रीती। सो पाई सब भक्ति कि रीती ॥ अब जनि शोच करहुतुम वाला। रहहु प्रसन्न हृदय सब काला ॥ प्रेम देखि ताहिं लायउं गेहा। छाडिदेहु मन के संदेहा। सुनिहर्षितभइरुक्मिणिनारी। सेवनलगीगोवर्द्धनधारी॥

सो० कहहि सुनहिं जे लोग प्रीतिकथा यदुबीरकी।
प्रीति तिनहुं हियहोइ जगन्नाथ दम्पति विषे ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेश्रीरुक्मिणीमानलीलावर्णनोनामषष्टितमोऽध्यायः॥६०॥

दो० सोरहसहस अधीक शत आठ नारि में श्याम।
धर्म गृहस्थी राखहीं पति ब्रत राखत बाम॥

चौ० दशदश पुत्र सभीकह जाये। श्यामरूप शोभा अधिकाये॥ यकयक कन्या सुन्दरभारी। कोकहिसकत हरष महतारी॥ यक लख यकसठ सहस महीशा। भये सुवन श्रीपति जगदीशा॥ सोरह सहस एकशतआठा। ग्तेभये सुताके ठाठा॥ तिनते पुत्र भये जग जेते। सके न कवि कोउभाषन तेते॥ भये प्रद्युम्नआदिरुक्मिनी। भानआदि सतभामहिं धनी॥ शाम्बआदि जाम्बवतीसुहाई। सुरतिआदि कालिंदिहिराई॥ श्रीमानादिक सत्याजाना। वरघोखादि लक्ष्मनामानो॥ बरकआदिमिक वृन्दाकेरे। युद्धजीत भद्राहिघनेरे॥ ताम्रकेत दूजे दत माना। ये दोउभ्राता हलधर स्थाना॥ रहे रोहिणी के दोउजाये। और कहौं नृप सुनुचितलाये॥

दो० प्रद्युम्नज अनिरुद्ध भा तिनके सुतबल नाभ।
हरिपुत्रनकर शिशुचरितमातनको सुखलाभ॥

चौ० हरिसुत होन सुनाजब काना। रुक्मजायअस तियहि बखाना॥ कन्या व्याहकरन के हेतू। रचबस्वयम्बर असउर चेतू॥ रुक्मिणि बहिनि मोर सुतसंगा। बोलि पठावहु हृदय उमंगा॥ सुनिसो बिप्र पठावालेना। सुनि रुक्मिणीकहा सुखऐना॥ आयसुपाइ पुत्रसंगलीन्हीं। नगरभोज कटयात्राकीन्हीं॥ देखिहृदय दम्पति सुखपाये। रुक्मनारि तब कह हरषाये॥ करो विवाह सुता ते मेरी। अरु निज सुतते मोद घनेरी॥ सुनि

रुक्मिणिकहकरुजनिव्याहा।भ्राताचरितनजानतकाहा॥ करै कदापि युद्ध बिकराला। सुनत रुक्म आनन्द बिशाला॥ लगा कहन करिहौं नहिं रारी। करों विवाह नात नव भारी॥

दो० असकहि संग प्रद्युम्न ले गया सभा के बीच।
रहे जहां बरभूप सब नृप परमति के नीच॥

चौ० रुक्मावती फिरी चहुं ओरा। माल पेन्हायो सुत वितचोरा॥ तब रुक्माग्रज सुता विवाही। यौतुक दइ विविध विधि ताही॥ बिदाकियोसंगसुता सयानी। रुक्मिणिलेइ चली हरषानी। मगमहँ भूपन घेरोआये। शरते सुतहरि सबहिं भगाये॥ गईं द्वारका रुक्मिणि राई। घरघर होवनलगी बधाई॥ लेगइ दुल्लहदुलहिन गेहा।बिते दिवसकछु बिनु संदेहा॥ तब भापुत्रप्रद्युम्न-हिं राई। नामभयाअनिरुद्ध सुहाई॥ दियेहरिदानद्विजन सन्माना। भयोज्योतिषिन कह सुखनाना॥

दो० पौत्रहोन सुनि रुक्म अस लिखापुत्रसुनुनाथ।
ममपौत्रीते ब्याहकर आपन पौत्रकेसाथ॥

चौ० सुनि हरिलेइ रजायसु तबही। हलधर सहित गयेतहं सबहीं॥भाविवाहअनिरुद्धहि राई। यौतुक रुक्म दिये बहुताई॥ तब कलिंग देशीय नृपाला। कहारुक्म से सुनहु भुआला॥ पांसा खेलबहलधरसाथा। बोललेहु तुम रेवतिनाथा॥ जीतसको नहिं आन उपाई। सुनि तेइँ बोलिलियो हरिभाई॥ खेलत प्रथम हारिगे हल-धर। बोलतभे रुक्महि प्रभु रिसिकर॥ दश करोड़ को

बाजीलाई। अबकी अवशि जीति हों राई॥ याबाजी जीतौहरिमीता।भूपन कह्यो रुक्मगो जीता॥ तब तेहि छांड़ि बाजि पुनिलाई। अर्ब दर्ब जीते हरिभाई॥

छं० तबछांड़िहलधरबहुरिबाजी जीतिलीन्हीअर्बकी।
सबभूप बोलेबहुरि जीतो रुक्मनृप सब दर्ब्बकी॥
सुनिखीसकरिहलधरबहोरीछांड़िपुनिजीततभये।
सबभूपरुक्म समेतबोले रुक्मसबधन जितगये॥

छन्द॥

तबभानभवाणीजितगुणखानीप्रीतमआनीभूपनमन।
हलधररिसमानीमूसलआनीकियेनिदानीरुक्मातन॥
तबकलिगकेराजाकहसुखसाजाओरसमाजाभूपनके।
केहुतोड़ानासाप्रभुसुखरासाचरणतरासाओरनके॥

सो० काहुभजे निजधाम या बिधि हरिनिजपुत्रको।
गये द्वारकाराम करि विवाह मंगल सहित॥
घरघर मंगलचार होनलगे भूपाल सुनु।
उग्रसेन सुखभार कहाकृष्ण नेरुक्मबध॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेअनिरुद्ध बिवाहरुक्मबधोनामएक षष्ठितमोऽध्यायः॥६१॥

दो० नरपति नृपबलके रहे सबसुत अति बलवान।
प्रथमहि बाणासुर भया नृपशोणित पुरजान॥

चौ० सो तप कियो उमापति भारी। दरश दियो तबहीत्रिपुरारी॥ दीजे मोहिंप्रभु असबरदाना। सुरनर करे न कोउ निदाना॥ सुनितेहि वचनकहा त्रिपुरारी।

सहसभुजा तोहिं होवत भारी॥ जीति न सकत भुवन दशचारी। सुनिबर भया मुदित तेइ भारी॥ प्रभु प्रताप उतनहिं भुजपावा। सुरनर जीतके निजबश लावा॥ मिला न कोइ करन युधजबही। सकर्षण अस भाषा तबहीं॥ बिनु युधकिये भुजालग भारी। बतादेहु प्रभु बलीबिचारी॥ जानू तुमसम जगनहिं आना। तातैं तुमहि लरहुं हरषाना॥

दो० कहशिव कछुदिनगतभये लिये कृष्णअवतार।
तबकरिहै युधतोहिंसनसुनि पुनिबानिउचार॥

चौ० प्रभुजानब किमि हरि अवतारा। ध्वजा एक शकर दयडारा॥ या ध्वजरख निज मन्दिर ऊपर। टूटत तब जानेहु भय यदुबर॥ सुनिअसध्वजा लाइरखि दीन्हीं। शत्रुजनै कबआशाकीन्ही॥ नारिबड़ी बानावति तेहीं। पुत्री जनी एक सुठिदेही॥ ऊषा नाम भई सो कन्या। अतिलावन्य रूपतेइ धन्या॥ सात वर्ष जबताके भयऊ। शंकरपहं गुण सीखन गयऊ॥ कछु दिन महं सीखी सब गाना। गाइ देत प्रभु कहं सुख नाना॥ यक दिन शकर शिवा समेतू। करन लगे बिहार वृष॰ केतू॥ कन्यादेखि हृदय पछिताई। यदि हमहूं कहुंजात बिवाही॥ या बिधि करतिहुं हमहुं बिहारा। उमाजानि गइ ताहि बिचारा॥

दो० कहामिलतपतिस्वप्नमेसुनिसोभइसुखधामि॥
निजगृहजाइकेसर्वदाकरत चिन्तना स्वामि॥

देखो तसवीर नम्बर ६॥

चौ० पिता जानि ताकी तरुणाई । राखि महल तेहिं परमसुहाई ॥ दियेबैठाइपाहरूभारा । जेहिंकोउसकै न ताहि निहारा ॥ सोवतस्वप्न तहांतेइं देखी । भइआनन्दितहृदय विशेषी ॥ श्याम सुंदर छबिजाविधि आही । ताविधि नारिन रेख्योताही ॥ देखिजबहिं गलमीलन चाही । निद्राभग भई नृप ताही ॥ तबनहिं देखनमहं कछुआई । रोदन करनलगी पछिताई ॥ दिवस चढ़ेसो उठी न जबहीं । चित्ररेखयकआलीतबहीं ॥ कहा जाइ क्यों अहहु दुखारी । कहो पुरावबआशतिहारी ॥ विधि केवरजाऊं सबठामा । कहुकन्याकिमिअहदुख धामा ॥

दो० सुनिऊषासबकहदिये तबसोचित्रबनाइ ।
दरशाबाकिन्नरसुरन कहुपति यामेंआइ ॥
कहानहींतब कृष्णाके रूपदिखायो श्याम ।
देखिभईलज्जितमहादेखिससुर जिमिबाम ॥

चौ० तब अनिरुद्ध रूप दरशावा । जानि स्वामि ताकेमनभावा ॥ चीलहरूपकै गइ सोनारी । पुरीद्वारका मिलन विचारी ॥ चक्रसुदर्शन कर रखवारी । पाईजान न जबसों नारी ॥ हरि इच्छा नारद तहं आये । दीन्हीं मंत्र बताय सुहाये ॥ साधुरूपधरिजाहु जोताहा । जान पावतबहीं मनचाहा ॥ मुनिअसकहि कीन्हाप्रस्थाना सो धरि रूपगई सो थाना । जहं अनिरुद्ध करतरह शयना ॥ सेजउठाय धरी तेहिअयना । ऊषा देखिपरी तेहि चरना । धन्य सखी तुम दुखके हरना ॥ परहित समनहिं अपरभलाई । असकहि सोनिजगेह सिधाई ॥

दो० तब ऊषा निजबीनको बजवा शब्द रसाल ।
सुनिप्रद्युम्नसुत चौंकिकै उठतभयेततकाल ॥

चौ० पितुसमान मोहिंभइ गतिआजू। आये यहां कौनहीकाजू॥ तब नारिहि पूंछो कुशलाई। आवनकथा दीन्हसबगाई ॥ तबकरि दोउगंधर्वविवाहा । करनलगे विलास नरनाहा ॥ भोजनलगी खिलावन सोई । भेदन जान कोइ अस गोई ॥ गई दिवस यक देखन माता। पुरुष संग तकि फिरी लजाता ॥ चारमास लगि रखा छिपाई । तबभाप्रकट भेदसमुदाई ॥ मनविचार ऊपागइ बाहर। संशय कोइ करै जनि मोपर ॥ चहुं दिशि हेरि गईपतिपासा । लगे विहारकरनसुखरासा ॥ रखवारन मनमहँ अनुमानी। तुरतविलोकिगई क्योंरानी॥ कारण तासु न उर कछु पावा। अकस्मात वाणासुर आवा॥

दो० ध्वजान दीखी पूछसब कहा सुनहु नरनाथ।
टूटिगईदिन अमितभा सुनिहरषा यहगाथ ॥
एक पाहरू कहत तब प्रभु यकनरके बयन ।
सुनेउँ सुताके गेहतब मधुरनारि सुखदयन ॥

चौ० नहिंजानों सो केहि विधि आवा। वाणासुर तब देखनधावा ॥ देखा शयनकिये नरसुन्दर। जानाहै यह योग सुतावर ॥ तदपि लजितह्वै फिरि तहँ आई। कहासुनहु सुभटन समुदाई ॥ सोवत हतन चाहियेना-हीं। जगेतबहिं कहिहहुहनपाही । असकहि अरुसुभटन बहुतेरे ॥ रखाकरन रखवार घनेरे। गयासभा महँइत दोउजागे ॥ चौपर खेलन लगे अनुरागे । चौपर शब्द

सुनत भटधाये ॥ समाचार तेहि दीन्ह सुनाये । तब बाणासुर कोपिअपारा । निरखि जायद्वारे ललकारा ॥

दो० ऊषाको भय देखि के पढ़ामंत्र अनिरुद्ध ।
उपलएकशत पाठगज मिलाकरनलगयुद्ध ॥
सोइशिलते सबबीरको वध कीन्हाअनिरुद्ध ।
तबहिंअसुरअहिफांसते बांधाकरिउरक्रुद्ध ॥

चौ० सभा मांझलै जाइ बैठारा । जब ऊषा अस पतिहिनिहारा ॥ विगतलाजबैठीढिगआई । तबबाणासुर उर रिसिछाई ॥ कहापुत्र स्कन्दसे जाहू । बहिनि बझाय भवन धरिआहू ॥ सुनितेहि गृह धरि राखाजाई । [illegible] अनिरुद्धहि कैदकराई ॥ शोचतनारि पुरुषके छोहू । उत अनिरुद्ध तोगकेमोहू ॥ तब नारद अस आइ सुनाई । जनिशोचहु अनिरुद्ध चिताई ॥ ऐहैं दललै श्रीयदुराजू । हरिहैं राज निश्चरन समाजू ॥ तदतो [illegible] असुर सन भाषा । कैद करनकी तज अभिलाषा ॥

दो० ऐहैं श्रीयदुवंशमणि सुनितेहिभा नहिं त्राश ।
मुनिअसकहि तहंतेगये उरअनिरुद्ध हुलास ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेऊषास्वप्नअनिरुद्धग्रहणोनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

दो० भूपतिजय अनिरुद्धके बीतिगये बहुमास ।
प्रकटभयानहिं भेदजब भेयदुवंशि उदास ॥

चौ० तहां देवऋषि आइजनावा । जीतेहैं अनिरुद्ध दुरावा ॥ कैद कियेउ बाणासुर ताही । अहै नगर शोणित पुरमाही ॥ सुनिप्रद्युम्न र ग यदुराये । चढ़िखगेश

पर तहां सिधाये ॥ अक्षौहिणि द्वादश लै साथा। गये बहुरि श्रीरेवति नाथा ॥ मगकहु नगर उजारत जाहीं। पहुंचे जब शोणित पुर माहीं ॥ दूतन बाणासुरहिं ज-नावा। आये हरि संग फ़ौज बनावा ॥ सुनि बाणासुर मंत्रिहि टेरी। महायुद्ध करु लावन बेरी ॥ सुनि द्वादश अक्षौहिणि सेना। लैइगयो जहँ हरिबलु सेना ॥

दो० आपलाग शिवतपकरन हर्षित मनि पुरारि।
तब बाणासुर युद्ध लगिगयो सैन्यलै भारि ॥

चौ० जानि भक्त दुखनिज सेनालय। युद्ध हेतु गे जहँ करुणामय ॥ भूत बेताल प्रेतगण जेते। आये युद्ध करन सब तेते ॥ देखि उमापति करहिं सहाई। निश्चर उरहर्षबनाई ॥ कहा शंभुते तब करजोरे। तुम बिन कौन सहायी मोरे ॥ जनादियो तबहरि दलमाहीं। जोरि जोरि सब भीरत जाहीं ॥ भोलानाथ संग यदु-नाथा। बाणासुर अरु सात्यकि साथा ॥ स्वामिकार्त्तिक अरु हरिताता। हलधर अरु कुभांडँगराता ॥ चारुदेष्ण यकसुतयदुनाथा। अरुरुकन्दलड़हि दोउसाथा। कुम्भ-कर्ण मंत्रीबाणाकर ॥ औरशाम्ब यकसुत श्रीगिरिधर। होनलगायाविधितहँयुद्धा॥ जोरीजोरलड़हिं करिक्रुद्धा।

छं० बजनारू बाजा सुरन समाजा कौतुक देखहिं मुदितहिये। दोउप्रभुरण भ्राजा बलगुणसाजा शायक घोरचलातभये। जब ब्रह्माबाणा शिवसंधाना हरिनिज शरते काटिदिये। किय प्रकट समीरा शिवरणधीरा निजबलतेहरि दूरिकिये ॥

छं० तब शिवपावक बान । चाला तबभगवान ॥
प्रकटे जलकेबान । करिशिवबाण निदान ॥
शीतकम्पितकंपाल । शिवगणभये बिहाल ॥
प्रद्युम्ने जलबाण । राखे गणनके प्राण ॥
पुनि नारायणबान । छाँड़नचहा रिसान ॥
उरकछुशोचविचारि । राखिदियोत्रिपुरारि ॥
तबहरिआलसबान । तजिकाटहिहरषान ॥
शिव छांडे शर तीन । काटे हरि परवीन ॥
तबकोपिकेश्रीभगवान । माराऐसोबान ॥
गिरे शंभु महिआइ । छिनछिनलैजमुहाइ ॥

दो० कार्त्तिकऔप्रद्युम्नदोउयुद्धकरहिंरिसिआय ।

तीन बाण प्रद्युम्न तब मारा मोरहि धाय ॥

चौ० उड़िके ठोसलो करत जुझारा । तब प्रद्युम्न असहरिहिं उचारा ॥ न रते कार्तिक करत जुझारा । देहु निदेशकरौंसंहारा ॥कहाश्याम तबशरहतिनाना । गिरा दीन्ह मुर्च्छितअकुलाना ॥ हलधरशाम्बमत्रिदोउ मारे । तब टाणासुरभयाढुखारे ॥ दो दो शर एकहि धनुधारी । लागे करनयुद्ध संग मुरारी ॥ तब हरि निज शर मारि गोसाईं । काटि दिये तेहि तिलकी नाईं ॥ अश्व सारथी सकलनिपाता । बाणासुर भागा दुख पाता ॥ पांचजन्य हरिशंखबजावा । ताकेपाछे यान हँकावा ॥ नाम कोटरा वापिताता । आईनग्न जहां सुख दाता ॥ नयन मूंदि लीन्हा गरुराई । कारणपापहोय बहुताई ॥

दो० तबलगि बाणासुरतुरतचक्रक्षौहिणि सैन।
लेइआवा रण भूमि मे जहां रहे बल ऐन॥
भवनगई तबकोटरा भया युद्ध अति भारि।
क्षणमहँहरिसबकोहते गयाशरणत्रिपुरारि॥

चौ० भक्त दुखितलखि भोलानाथा। विषमज्वरजाके त्रयमाथा॥ त्रयपद त्रयचक्षु अरु षटहाथा। पठवा आइ सो दल यदुनाथा॥ कीन्हा ज्वरते विकलभुवाला। तबते शरणगहा जन पाला॥ शीतज्वर परकटकिये यदुबर। हारगया तबहीं शिवकोज्वर॥ कहाबचावहु शम्भु पराना। शीतज्वर दीन्हो दुखनाना॥ कहा शम्भु जाहू हरि पाहीं। तिन्हबिनु रक्षसकत कोइनाहीं॥ सुनतहि गया कृष्ण के शरणा। क्षमा किये भक्तन भय हरणा॥ मम भक्तनजनि सतवहु काऊ। जाहु निकटशिवतुमसतिभाऊ॥

दो० यहचरित्र जो नरसुनहि ज्वर नहिंव्यापततहि।
यद्यपिहवै छुटजाय तो सुनतगया शिवपाहि॥

चौ० भे यदुवंशी सकल सुखारी। बाणासुरले शस्त्र न भारी॥ करसहस्र महँ आवाधाई। चक्रसुदर्शनते यदुराई॥ चारि भुजा तजि सब दिने काटी। निलिगा गर्व ताहि नृपमाटी॥ तब शिवले तेहि आपनसाथा। क्षमा करावन गेजहँ नाथा॥ अस्तुति करहि प्रचारिप्रचारी। जय उत्पति पालन लयकारी॥ निजजन हेतु सगुणतनु धरहू। दुष्टनहतिमहिकेदुखटरहू॥ जन्मपाइ नरतुमहिं न भजहीं। ते बिषलेइ अमियकह तजहीं॥ जापर कृपा करौ जगनाथा। सो जानहि कछुतुम्ह नाथा॥

दो॰ तुम्हरीकृपातेहमहु अज दैहिंकाहुबरदान।
सो सबसत्यतुमहिकरहु धन्यजोरतभगवान॥

चौ॰ बाणासुरहवै बश अज्ञाना। जानत रहा मोहिं भगवाना॥ ताहिक्षमहु अपराध गोसांई। करहु अभय संतन सुखदाई॥ सुनि प्रभु कहा सुनहु गौरीशा। हम तुममे नहिंभेद जरीसा॥ हमतुममे जो भेदबखाना। सो नर जानहु नरक निशाना॥ याको अभय रहाबरआगे। सुनितुम संशय करहु त्यागे॥ अससुनि शंभु गये निज धामा। बाणासुर कहकरि परणामा॥ पावनकरहु गेह ममजाही। निजसुत बारुकलेहुबिवाही॥ सुनिहरि गये ताहि के गेहा। चरण धोइ तब सहित सनेहा॥ सादर भोजन दीन्ह कराई। दिये अनिरुद्धहि बंदि छोड़ाई॥ ऊपाबोलि विवाहे दोऊ। यौतुक बहुधन दीन्हा सोऊ॥ सिंहासनहरित्यहि बैठाई। सबबिधिधीरज दियेबनाई॥

दो॰ याविधि पौत्र विवाहके गये द्वारका धाम।
होहि नगरमंगलमहां मुदितकृष्णकीवाम॥

इतिश्रीकृष्णना[illegible]शुकदेवपरी[illegible]बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथकृतेऊपापरित्रवर्णनानामत्रिष[illegible]ष्टितमोऽध्यायः ।' ६३ ॥

दा॰ भूप नाग के बशमे अति धर्मी नृग राज।
पाई गिरगिटदेहसो तनिक दोषकेकाज॥

चौ॰ तिनकर कथा सुनहुचितलाई। कहोंनृपतिसोइ सकल बुझाई॥ रहा नियम अस राजाराई। दिन प्रति करत दान बहुताई। सहसगाय बि[illegible]कीन्हे दाना। करत न भोजन भूपसुजाना॥ किया रहादिन एक गोदाना।

गईभागि सोधेनु निदाना ॥ सोइअपर द्विजको दैदीन्ही । प्रथमविप्र निज गोकहँ चीन्ही ॥ लगतगये दोउ जहँरह राई । कहाभूप तब तिनहि बुझाई ॥ विप्र एक लप मुद्रा लेहू । गाय [illegible] कहँ देहू ॥ सुनत वचन काहूनहिं माना । गये कोपकरि गेह अदाना ॥

दो० इतशोचा नृप [illegible] तिनहु भयोक्षोप अनजान ।
कछुदिनमे भ [illegible] मृत्यु तेहि कहयमराजवखान॥

चौ० धर्मधुरन्धर होतुमराधा । परयक अघपुनि बीच समाधा ॥ सो अघतुम कीन्हा अनजानी । प्रथमहिभोग करहु का ज्ञानी ॥ कह नृप प्रथम भोगि अघ जाला । पाछे धर्म कर्म सुखमाला ॥ गिरगिट होइ कूप तव आ-या । ताहि निकटगे सुत यदुराया ॥ लगे निसारन जब नहिं पाये । समाचार तब हरिहि सुनाये ॥ तहँ अन्त-यामी भगवाना । चरणछुवाये जाइ सुजाना ॥ धरि तेइँ रूप भूप सम राऊ । अस्तुति करन लगा सति भाऊ ॥

दो० मांगा बर हरिभक्ति तब दीन्हा श्रीयदुबीर ।
चढ़िबिमान सुरलोकको गयोभूपमतिधीर ॥
इतहरि निजबालक सहित गयेप्रबोधतगेह ।
मानहु सबविप्रन कथन सेवहु सहित सनेह ॥
कहा सकल उग्रसेनते क्रोध प्रबल महिदेव ।
जगन्नाथ तिनसुनतही करनलगे द्विज सेव ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसंवादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेराजानृगमोक्षनोनाचतुःषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

दो० राजन हलधर एकदिन कहाहरिहि समुझाइ।
ब्रजबासिन सुधिनहि लियेतिन्हधीरज दैजाय॥

चौ० आयसु देहु जाउँतहँ भाई। जान कहा तबयदु-कुलराई॥ हल मूशलले रथ असवारा। चले रेवतीरमण सुखारा॥ मगमें भूपमिलहि सबजेते। आदर करहि सकल मिलि तेते॥ सांदीपन गुरुके गृहआये। दश दिन तहँरहि बहुरि सिधाये॥ आयगये वृन्दावन माही। तहँ सब दुखित निहारत जाही॥ गायन चरहिन पथनिहारत। ग्वाल बाल प्रभु विरद उचारत॥ सुना आगमन प्रभु तहँ धाये। गोपीग्वाल मातु नँदराये॥ कीन्ह दंडवत हरि पितुमाता। भये सकल तहँ पुलकित गाता॥

दो० नँदरानी हर्षित महा लेइ गई निज गेह।
कुशलप्रश्न सबद्वारका पूंछा सहित सनेह॥

चौ० नीके उग्रसेन यदुराई। जिनठानी ऐसीनिठुराई॥ जिनबिन निमिष रही नहिजाई। राज्यपाइ सो रहे लुभाई॥ अतिहै दूर द्वारका रामा। करत्यूं नत दरशन सुखधामा॥ कबहूंधो सुधिलेहिं बिहारी। असकहिरोवति हरि महतारी॥ तिन्ह धीरज हलधर बहु दीन्हा। संध्या समय गमन बनकीन्हा॥ राधादिक गोपिय तहँ आई। पूछन लगी कुशल यदुराई॥ कबहुंक सुधिप्रभु लेहिं हमारी। जबतेग सब सखिन बिसारी॥ तबतेयोग कथा समुझावन। उद्धव कहँभेजा मनभावन॥ कोउकह वाम बहुत हरि ब्याहे।अबका सखिन मिलनचितचाहे॥

दो० राधाते प्रीतम नही ताहु बिसारी नाथ।

श्यामबर्णसमश्याममन सदाकपटरहसाथ ॥

चौ० हलधर गौर बर्ण छलहीना। इनतेराखहु प्रीति नबीना॥ सुनिहरि भ्राताकहत बुझाई। रहिदुइमासहि रास बनाई॥ पूर्णमनोरथ सबके करिहौं। अतिसुख देइ सकल दुखहरिहौं॥चांदनिराति पूर्णिमामाहीं। सब सखियां सजि आई ताहीं॥ कहा करहु प्रभु रासबनाई। अंगीकार कियेहरि भाई॥ तबसबरासकरनको साजा। आपहिबने आइगे बाजा॥ शीतल मंदसुगंध बयारा। बहन लगीतहंयमुनकिनारा॥ तहंनिरतत सखियनसंग हलधर। बरुणछाइदियबारुणिमुदभर॥ सखियनसंग गान करिराई। कहायमुनते हरिके भाई॥

दो० बिहरनहितमोहिलाउ जलकरवहु मोहिंस्नान।
सुनियमुनानहिं लायऊ तबप्रभु कोपिनिदान॥
खींचिलीन्हजल यमुनकर हलते हलधरबीर।
तियस्वरूपधरिकहनलगिचीन्ह्योंनहिंमतिधीर॥
क्षमाकीन्ह अपराधतब कीन्हो जलहिबिहार।
याविधिकरि दुइमासप्रभुरासदिये सुखभार॥
दिनकोसुखदेनंदमहरिनिशिसखियनसंगरास।
पुरी द्वारका जानको तब बोले सुखरास॥

सो० मातुतबहिं यदुबीर हितदीन्हो बहुबस्तुलै।
सखियनको दै धीर कालिन्दी भेद न चले॥
कहाहालसब जाय तादिनते यमुना नहां।

बांके बहुत सुहाय जगन्नाथ हरिभ्रातक्रुध ॥

इति श्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृते बलदाऊ वृन्दावन गमनो नाम पचषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

दो० भूपतिकोउकाशीनृपति पौंडरीकजेहिनाम ।
बरुतेगर्बित होयके रखारूप घनश्याम ॥

चौ० दारुभुजा दुइलियेबनाई । कृष्णायुध सब रख सजाई ॥ कहासबहिं ते पूजहु मोही । मृषाकृष्ण सब जानहु वोही ॥ हमहि रूप धरिविविध प्रकारा । रावणादि असुरन को मारा ॥ मूढ़ सकल पूजन लगताही । ज्ञानी स्वपनेहु सुमिरत नाही ॥ मानत जे पूजहिं निरलाजा । देवतिनाहि दारुण दुखराजा ॥ भातहि उरतब गर्बबिशाला । पठवाबिप्र जहां गोपाला ॥ कहेहु बिप्र छांड़ैमम बेषा । नत करिहौं मैं युद्ध बिशेषा ॥ सुनिसो बिप्रगयाहरि पासा । आदर कीन्ह बहुत सुखरासा ॥

दो० समाचार सबकहिदिये सुनि बोले यदुनाथ ।
जाहुविप्र कहुराजते आय लड़व तेहिसाथ ॥

चौ० असकहिलै यदुबशिन साथा । कछुदिनमेंपहुंचे यदुनाथा ॥ जाइतहां हरि शंख बजावा । तब नृप संग सेनले आवा ॥ दुइ अक्षौहिणि रहा प्रमाना । अपरबंधु तेहि संग बखाना ॥ यार संगरह भूप प्रयागा । तीनि अक्षौहिणि तेहिसग लागा ॥ आये जहंबसुदेवकुमारा । मारु मारु धरु करहिं पुकारा ॥ मारुआदि बाजातहंबाजहिं । कादर डरैं प्राण लै भाजहिं । चक्रसुदर्शनकहबल

अयना। कीन्ह निदेश हतहु सबसयना ॥ आप उतारे मुकुट सो राजा। कौनमृषा अबकहु निरलाजा ॥

दो० भालज्जित सो भूपतब उतसबसेनामारि।
कहाचक्रहरिआइके तबकहगिरिवरधारि ॥

चौ० हतहु सपदि अब दोनों राई। सुनत चक्र दोउ भुजा गिराई ॥ भाजा पौंडरीकतेहिकाला। काटिदीन्ह तब चक्र बिशाला ॥ तासुमित्र कह बहुरि सहारा। नृप करशीश गिराघर द्वारा ॥ हरि परसाद मुक्तिसो पाई। सतीभई तेहि तिय समुदाई ॥ नृपसुत नाम सुदक्षिण राऊ। लगा करन तपशिव सत भाऊ ॥ इतहरि सब यदुबंशि समेता। गये द्वारका कृपा निकेता ॥ भयेप्रकट शिव तब बर मांगा। बैरिहतो यहि याचन लागा ॥ कहशिवबेदमन्त्रकरिउलटा। जापियज्ञकरुतबलेहुपलटा॥ प्रकटहोत यकनिश्चरिआई। सोइलड़नतवअरितेजाई॥

दो० असकहि अंतर हितभये कियायज्ञ तेहिकाल।
कृत्या नामक राक्षसी प्रकट भई बिकराल॥
कहन लगी है शत्रुकहँ अहै द्वारका धाम।
सुनितेहिनगर उजारते गई जहां रह श्याम ॥
तबहरि चक्र निदेश किय ताहि खदेरा जाय।
उलटे बिप्रन भूपसुत दीन्हेसि सबहि जराय ॥

सो० तबकाशीकोजारि आयचक्र हरिसे कहा।
काशिपुरीकीनारि गारिदेहिपौंड्रोक सुत ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेपौंड्रकबधो नामषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

सो० कहनृपसुनमुनिराय अपरचरित बलरामके।
कहिये मोहिं सुनाय कहहि मुनी सुनु कर्णदै॥

चौ० मित्रएक भौमासुर बन्दर। द्विबिदनाम सुग्रीव सखावर॥ दश सहस्रगजबलतेहि रहऊ। भौमासुरमरन जब सुनेऊ॥ करि अतिकोप द्वारका आवा। नगर जरायो सबदुख पावा॥ शिशुगण लेइ कंदरानावै। रुधिरोपलबहुविधि बरषावै॥ याबिधिबहुउत्पातमचाई। गयाजहांश्रीकृष्णके भाई॥ रेवतपरबत निकट तलावा। तहँ समूह गंधर्वनिछावा॥ करते रहे बिहार तहँ बन्दर। गया बैठ यक तरुके ऊपर॥ विष्ठाकरन तहां सो लागा। नारिन चीर क्रिन्हेसिमऊपागा॥ तोड़ि दियो बारुणि घटजाई। हलधर निसर तहांते आई॥

दो० मारा कंकरि एकतब दिन्हेसि फारि सबचीर।
तबतेहिहलधर गहिलियेकरिलघुभजाशरीर॥

चौ० धारि भूधराकार शरीरा। आवासन्मुख हलधर बीरा॥ गिरि पादपनहिलिये उखारी। मारनलागद्विविदबलभारी॥ हललेइधाये हलधरतेहिपर। तरुउपारिधावा तब बन्दर॥ तब हलधर मूशलतें मारा। फटाशीशबह श्रोणितधारा॥ पुनि यकतरुलै मारनधावा। मूशलते प्रभुतोरि गिरावा॥ तबमलयुद्ध करन लगदोऊ। देखि अचर्यमान सबकोऊ॥ नारिन भयलखि तब श्री हलधर। प्राणअतकिय दाबिग्रीववर॥ देवन आइ सुमन बरखाये। आनन्दित निजलोक सिधाये॥

दो० मारितहि उद्धार करि गये द्वारका धाम।

नगरबासिप्रफुल्लितभयेसकलपुरुषअरुबाम ॥

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेवपरीक्षितसंबादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेद्विबिदकपिबधानामसप्तषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

दो० राजन दुर्य्योधन सुता नाम लक्ष्मणाजाहि।
भईबिबाहन योगजब भया स्वयम्बरताहि ॥

चौ० तहँबहु भूपन भये उपस्थित। शाम्बगये तहँ सुतहरिहर्षित। मोहितभये देखिसो कन्या। जयमाला लिये सोहित धन्या ॥ धरि बरजोर चढ़ारथ ऊपर। चले शाम्ब सब गुण बलके घर ॥ दुर्य्योधन आदिक लै सैना। कीन्हो पाछ जहा बल ऐना ॥ देखि सबहि रथ कीन्हाठाढ़ा। दुहुंदिशिक्रोध तहां पर बाढ़ा ॥ कह हरि सुतआवो यकबारा। अथवायकयक समरन हारा। सुनि सन्मुख गा कर्ण रिसाई। मै जानों ताहिबलअधिकाई॥ सजगहोहुअबमारोबाना। असकहिबाणबिपुलसधाना॥

छ० तबशाम्बनिदाना रिसकरि बानाहति रथवाना रथघोरे। पुनिदशदश शरदुर्योधन ऊपर अरुसेना बर दिय छोरे ॥ तबतिन्हतेहिकाटीहैं यकढाटी बाणउलाटी मारलिये। तब हरि सुतध्याना करि भगवाना शायक नाना काटदिये ॥

छं० रथ अरुअश्व निपाति।सबहैंतब यक पांति।
करही अधरम युद्ध। हते बाजि करि क्रुद्ध ॥
सारथि दीन्हेमारि। काटि ध्वजा धनुसारि।
कूदिपरे तब शम्ब। कीन्हो युधन बिलम्ब ॥
तबकर्णशाम्बहिधारि। रथचढ़ाइमुदभारि ॥

भजा हस्तिनापूर । कह दुर्य्योधन क्रूर ॥
पुरुषारथ कहतोरि । भजासुतालै मोरि ॥
कीन्हेसिक्रैद सुरारि । नारद आय बिचारि ॥
कहा न क्रैद करेहु । तनुक नहीं दुखदेहु ॥
ऐहै हरिके भाइ । करिहै अधिक लराइ ॥
तदपि न छाड़ाक्रूर । मुनिगे जहं सुख मूर ॥
कही सकलदुखबात । हरिनानारिसियात ॥

सो० कहाजाहु लैसैन दुर्य्योधन जहंयुधकरै ।
सुनि कहहलधरबैन मैंलाउब श्रीकृष्णसुत ॥

चौ० युद्धकरनको नहि कछुकामा । मैंलावबहरिसुत बलधामा ॥ असकहि उद्धवआदिबुलाई । संग अक्रूर चले हरिभाई ॥ जाइबाग महंडेरा दयऊ । तब अक्रूर सभा में गयऊ ॥ समाचार सबदियेसुनाये । दुर्य्योधन जाना गुरुआये ॥ सादर मिलन गया प्रभुभ्राता । पूछन लगा सकल कुशलाता ॥ कुरुवन हेतबाल गोपाला । पठवा उग्रसेन महिपाला ॥ नहिंयहउचित काहतुम कीन्हा । शिशुकहं सकल क्रैदकरलीन्हा ॥ सुनिशठकियउग्रसेन हिनिंदा । देखिदशागे कोपि फणिंदा ॥

दो० हलगड़ाइ महिपूरिको लीन्हो कोन उपारि ।
यमुनामहंडुबवनचहा तबमिलिकौरवझारि ॥

चौ० अस्तुति करनलगे सकर्षन । नहिं जान्यों प्रभु तुमअनंततन॥ याविधिस्तुतिसुनिहरिभ्राता । कोपशांत कीन्हाजन त्राता ॥ तबदुर्य्योधन सुताबिवाही । यौतुक बहुबिधि दीन्हेसिताही ॥ द्वादश सहस गजन के यूथा ।

दशसहस्त्र पुनि अश्वबरूथा॥ षटसहस्त्ररथ सहस अनु-
चरी। ये सब देइ बिदातेइ करी॥ आयेहलधरशाम्ब
सतियलय। पुरीद्वारका जहं करुणामय॥ कौरवादिकिय
गर्बविहीना। कहासकल हरिभ्रात प्रबीना॥

दो० भयेमुदितपुरबासिसब तादिनतेभूपाल।
हस्तिनपुरदक्षिणदिशाऊंचोअहैबिशाल॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसंवादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ
कृतेशाम्बविवाह कथनोनाम अष्टषष्ठितमोऽध्यायः॥ ६८॥

दो० नरपतिदिनयकदेवऋषि गेअमरावतिपूर।
सुरपतिकीदोउतियनको लरतलखासुखमूर॥

चौ० तबमनमें कीन्होअसिसंशय। हैअनेक तियश्री
करुणा मय॥ सबगृहकरहिश्याम किमिगमनू। देखन
गयेजहां दुखदमनू॥ तहांबिलोका सोहत बागा। फूले
सुमन तरुन फल लागा॥ बोलहिडार खगनहरषाई।
गुंजहिं मधुकर सुमनमझाई॥ बापितड़ाग अमित तहं
रहई। दुर्गबिशालसिंधुचहु अहई॥ मालीगावहिं गीत
सुहाये। नारिन भरहिं नीरतहं आये॥ महलन रत्न
जड़िततहं देखो। प्रथमगये रुक्मिणि गृहपेखो॥

दो० मोरमूर्त्ति तहअसबनो मोहहि जंगलमोर।
आवहि उड़िउड़िदेखिकेनाचहिंतहंचहुओर॥

चौ० तहंहरि पहिरिगले बनमाला। पीत पितम्बर
ओढ़ बिशाला॥ केसरतिलक भाल असीना। रुक्मिणि
नारि डुलावत बीना॥ देखिमुनी कहं उठेमुरारे। धोइ
चरण सादरबैठारे॥किरपाकरिमुनि दर्शन दीन्हा। सब

विधिमोहिंकृतारथकीन्हा॥माधुचरणमुनिआवतजहँवां॥ सुखसम्पतिछावत सब तहँवां ॥ तबबोलेमुनि हे भग-वाना। धरि अवतार चरित करुनाना॥तुम्हरी महिमा जाननकोई। करहु कृपाजानत कछुसोई ॥ तुम्हरीकृपा आइ मैंनाथा। दर्शनपायो भयउँ सनाथा ॥ असकहि मुनितहँवांते गवने। आइगये सत्यभामा भवने ॥

दो० चापरखेलततहलखाउद्धवसगमुरारि।
तावििधतहँआदरकिये जिमिगृहरुक्मिणिनारि॥

चौ० दयआशीशगये मुनिताहां। हरितियजाम्बवती रहिजाहां॥ तहांफुलेल लगावत देखी। फिरेमुनी अस जानि बिशेखी॥ निगममाहँकीन्ह्यो है बरजन। करिय प्रणाम न आशिषतेहिखन॥ कालिन्दीगृह गये बहोरी। शयन करतपायेसगगोरी॥ चरणदाबिमुनिदेखिसयानी। दियेउठाय कृष्ण गुणखानी ॥ कीन्हप्रणाम तबहिं जग देवा। बहुरिदेवऋषिआशिषदेवा॥ तबमित्रवृन्दाकेगृह आवत। देखाहरि बिप्रन को जेमावत॥ मुनिकहं देखि कहायदुराई। आपहुभोजन कीजे आई। कहमुनिपाछे करबअहारा। सत्याकेगृहबहुरिसिधारा॥ करत बिहार तहांमुनिदेखी। उलटे पगफिरिगयेविशेषी ॥

दो० भद्राकेगृहतबगये अशनकरततहँपेखि।
गयेलक्ष्मणागेहपुनिमज्जनतहांविशेषि॥
सोरहसहसरुएकशत याविधिसबगृहमाहिं।
नारदमुनिदेखतभये हरिबिनुकोउगृहनाहिं॥
तबउरमहँशोचनलगे कीन्हेउँ अति अपराध।

कृष्ण आइधीरजदिये होमुनिवर तुमसाथ॥
मायामम अतिशयप्रबल फँसेजगत जेहिमाह।
क्षमाकीन्ह अपराध प्रभु मुनिभक्तो पद चाह॥
सो० भक्तिदिये यदुवीर मुनि कहँ बर परसन्न ह्वै।
शंकरहित मतिधीर जगन्नाथ अजलोक गय॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेनारदमायादर्शनोनामऊनसततितमोऽध्यायः॥ ६६॥

सो० राजन श्री भगवान जौन समय जो कर्मकरु।
सो सब कहौं विधान नरउपदेश कहेत अब॥

चौ० दण्डदूइ बाकीरहेराता। सबगेहन ते उठिजन त्राता॥ नित्यकर्मकरि पुनिगृहइजाई। लगवत तेलनारि समुदाई॥ मज्जनकरि पूजा अनुसरैं। चौदहसहसदान गो करैं॥ विप्र अरपि भोजन करि आपू। बैठत सभा हरत जनतापू॥ सुनेपुराण कबहुं हरषाई। कबहूं नट नृतदेखेंराई॥ रहा सुधर्मानाम सभाकर। दिनचकरह बैठे तहँ यदुवर॥ तेहि क्षण एक विप्र तहआना। हरि अनुचर सबहरिहिं सुनावा॥

दो० तत्क्षण विप्रहि बोलिके सादर आसन दीन्ह।
केहिकारणआवनभयो कहियेद्विज परवीन॥

चौ० कहिद्विज जरासध अभिमानी। जीतिगर्वयुत बहु नृपआनी॥ विंशसहस्र अष्टशत राजा। कैदकिये सब भूपसमाजा॥ ते सबमोहिं पठवायदुराई। तुमबिनु जानि न कोइसहाई॥ जिमि गज अरु प्रह्लादबचाये। तिमिप्रभु मेरोकरहुसहाये॥ द्विजकहि दिय हरिधिरज

करायेे। ताहिसमय नारदऋषिआये॥ कहानाथपांडव मखकरहीं। तुम्हरे मिलन आशमन धरहीं॥ तेहिक्षण दूत पांडवनआवा। समाचार सोइ तेहु सुनावा॥

दो० तबऊधो ते हरि कहा तुम मोहिं प्राणसमान।
प्रथमकहांजानो उचित कहुनिज उर अनुमान॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसंबादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृते नृपयुधिष्ठिरसंदेशोनामसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७०॥

दो० तब ऊधोबोले प्रभू प्रथम पाण्डुपुर जाइ।
ता पाछे सब भूप की दीजे बन्दि छुटाइ॥

चौ० तब हरिकहा विप्र समुझाई। सपदि आइ मैं करब सहाई॥ मुनि कहं कहा धीर्य तिन्हदेहू। आवहु प्रथम तिन्हहिंकेगेहू॥ असकहि मुनि द्विज विदाकराये। ते सबजाइ धीर धरवाये॥ इतहरि उग्रसेन कहंभाषी। हलधरको पुर रक्षकराखी॥ संग सुन्दरि आठौपटरानी। रथपरचढ़ि सतन सुखदानी॥ सेनालेयगये तिन्हपूरा। सुने जबहिंआवन सुखमूरा॥ तबहिं युधिष्ठिर संगसब भाई। वस्तुभेद लै आतुर ताई॥ आये निकट शिरीयदु- राई। मिलेहरषि उर वरणि न जाई॥ प्रेमसहित हरि को गृहलेगय। हरषित भये दरशि करुणामय॥

दो० कुन्तिआदि के चरणपर गिरेहरषि यदुराय।
जोरी जोरी ते मिले आशिष छोटन पाय॥
सब भाइन ते राखते अर्ज्जुन अधिक सनेह।
जगन्नाथतहं बासकिय मुदितकृष्णतिनगेह॥

इतिश्रीकृष्णसागरशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेश्रीकृष्णहस्तिनापुरगमनोनामएकसप्ततितमोऽध्यायः७१॥

दो० भूपति दिन यक कृष्णजू रहे सभा आसीन।
तहां युधिष्ठिर जायके विनयकीन्ह अतिदीन॥

चौ० राजसूय यकयज्ञ कृपाला। करनचहूं प्रभुदीन दयाला॥ बिनुतव कृपा सकत होइ नाहीं। सुनिबोले हरि भूपति पाहीं॥ तुम निजप्रेम बिवश मोहि कीन्हे। अबधौं कहा सकुच उरदीन्हे॥ देहुभेज नृप चारोंभाई। चहुंदिशि भूपन जीतेजाई॥ जीतिसकललय दर्बतेआवें। करुतब यज्ञभागसुरपावें॥ सुनतहि भ्रातनदीन्हपठाये। दक्षिणदिक् सहदेव सिधाये॥ पूरब भीमसेन पगधारे। उत्तरगे अर्ज्जुन सुखभारे॥ पश्चिम नकुलगये भूपाला। जीतनृपन लै द्रव्यविशाला॥

दो० आये गृह तबहरिसखा ऊधोकहा सुनाय॥
बिनुजीते जरासन्धके होत न यज्ञसहाय॥

चौ० काहूविधि तेहि सकहुनजीती। मोरेमन अस भइ परतीती॥ जरासन्ध है नृप अति दानी। देनदान जो चाहहि ज्ञानी॥ ताते हरि धरि विप्रकेवेषा। युद्धदान याचही विशेषा॥ अंगीकार करत जबराजा। तब तेहि जितिहैं हरि शुभसाजा॥ सुनि असभये उदासनृपाला। तब बोले प्रभु दीन दयाला॥ अर्ज्जुन भीम कहहु संग जाना। धरहुधीर तजुशोच सुजाना॥ सुनि अस कहा जान तिन्हराई। तब तिन्हसहित चले बलभाई॥ धरे वेषद्विज सोहहिंकैसे। सतरज तमगुण तनधरि जैसे॥ भोजनसमय गये तेहिदेशा। बैठारे तिन्ह मगधनरेशा।

दो० बहुविधिआदरकरिकहा चलहुसकलअन्नखान।

कहहरिअन्नहिं न खाउँमैं मुनिये कृपानिधान॥
एकदान जोमांगऊं सोमोहिंदीजेआज।
कतनृपदानीनरगये दान देनके काज॥

चौ० हरिश्चन्द्र बलि आदिनृपाला। दानहिंतेपाये जन पाला॥ सुनि बोला महीप ततकाला। नाम यथा- रथ कहहुरसाला॥ तबमैं दानदेवसुनि काना। बोलेहंसि श्रीपति भगवाना॥ हम श्रीकृष्ण भ्रात ये अहहीं। अ- र्ज्जुनभीम इन्हें जग कहहीं॥ युद्धदान मांगनहमआये। सुनिसो तीनों निज गृह लाये॥ भोजन विविध कराइ बखाना। करत युद्ध मोहिं लाज निदाना॥ तुमभागेहो समरते आगी। अर्ज्जुन छोट भीम युधभागी॥ यात् करब युद्ध असभाषी। एकगदा तेहिदी यक राखी॥

दो० दोऊअखारे जायके करहिंयुद्ध हरषाइ।
यकमारेयकरोकले याविधिदिवसबिताइ॥

चौ० सांझ समय करि भोजन राई। सोवैं एक संग हरषाई॥ प्रात समय हरि करिवहिं युद्धा। चूर चूर भइ गदा कुरुद्धा॥ मल्लयुद्ध तब लगे दोउ करना। बाँहबाँह ते पदते चरना॥ छब्बिसवें दिन करि रिस भारी। मु- ठिका जरासंध यक मारी॥ लगी सो भीमसेन की छा- ती। भया बियाकुल सो सब भांती॥ तब तहंकर फेरा यदुवीरा। गईब्यथा भाकुलिश शरीरा॥ लरतसताइस दिनभा राई। तब हरि या विधि सैन बताई॥ चीरि दियेतृणएककृपाला। भीमसमुझिधरिचरण विशाला॥ भूमिपटकितेहिपदयकधारी। चीरिदियेमरिगयोमुरारी॥

दो० देवनसब बरषणलगे सुमनहृदय हरषाय।
नारिताहिबिलखतमहा कहाकृष्णसेश्राय॥
जोतुमको सम्बसदयो असताते कियेनेह।
सुनिहरिधीरजदेइकै बिदाकिये तेहिगेह॥

सो० ताकेसुतसहदेव शरणगयो तेहिराजदिय।
पूजहुसुत महिदेव बोलतभे करुणायतन॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ
कृतेजरासंध बधोनाम द्विसप्ततितमोऽध्याय॥ ७२॥

दो० राजनमगध नरेशसुत संगलेइ यदुबीर।
गये जहांसबभूपगण ब्याकुलरहेशरीर॥

चौ० देखा जाय तहां यक कन्दर। तेहि महँ भूपन शिलाद्वार पर॥ नख बढ़िगे बाढ़िगे अतिकेशा। ऐसीदशा विलोकि नरेशा॥ आयसुदिय सहदेवनिसारे। करनलगे सब बिनय मुरारे॥ तुमबिनु नहिं सहाय जग आना। छूटिगयो दुख दरशन नाना॥ क्षौरकर्म सहदेवकराये। भूषण बसन अमित पहिराये॥ तब हरि धारि चतुर्भुज रूपा। दर्शनदिये सकल तहं भूपा॥ कहनलगे तबसकल सुनाई। अब बन जाइ भजब यदुराई॥

सो० बनतेनहिं कछुकाम सुमिरहुमोहिं चितलाइके।
करौराज सुखधाम याविधि बनते गृहभलो॥
जबलगिहमनहिजाउंतबलगिसबपुरिहस्तिना।
आवहुमुदितसोठाउं करहिंयुधिष्ठिरयज्ञ तहं॥

दो० तिन्हअसभाषिबिदाकियेहस्तिनपुरगयेश्याम।

संगी युग साथे गये कहा सकल शुभ काम॥
इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेवपरोक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेराजनबन्दिमोचनोनाम त्रिसप्ततिमोऽध्यायः॥ ७३॥

दो० भूपतिकैदी राजगण औरसकल महिपाल।
दिनकर हिमकरबंशके आयेनेवत विशाल॥

चौ० दुर्य्योधन कौरव नरपाला। नकुल बुलाये मुदित विशाला॥ बन्दीगण राजासब जेते। यज्ञकर्म करहीं सब तेते॥ भागलेनहित देवनआये। मुनिवर निकर कहा नहिं जाये॥ नृप सबकहं सादर बैठारी। यज्ञ हेत बैठे संगनारी॥ अग्निकुण्ड विप्रन रचिलीन्हा। तहां युधिष्ठिर आहुति कीन्हा॥ हाथपसारि भागसुरलीन्हा। भूपतिदान मुनिन कहंदीन्हा॥ याविधि मख पूरण भा जबही। सुरन सुमन वरषायेतबही॥ तब पूछानृप सुनु सहदेवा। प्रथम पुजो केहिकोबरदेवा॥

दो० कहसहदेवसुनुहुनृपति हरिसबदेवनदेव।
प्रथमपूजिये कृष्णको इनसेवा सबसेव॥

चौ० सुनि नृप संग आठो पटरानी। पूजनकिये कृष्ण गुणखानी॥ धूपदीपनैवेद्यसुहाये। पीतपिताम्बर हरिहि चढ़ाये॥ भये मुदित सुर मुनि तेहि काला। देखि जरा बहु जड़ शिशुपाला॥ कहन लगा अस सबहिं सुनाई। सभा माहँ सब बुद्धि गँवाई॥ तजि इन्द्रादिक देवनभारी। पूजन किये कृष्ण रुचि सारी॥ जेहि पितु मातु ठिकानो नाहीं। बन महँ जाय के धेनु चराही॥ याविधि शठबहुनिन्दाकीन्हा। गिनेजाहिं हरि

दयमहिचीन्हा॥ सुनिनिन्दा बहुमारणधाये। बर्जनकिये तिन्है यदुराये॥

दो० राजन जबतेहि जन्मभा रहा यहीबरदान।
शतअपराधसोकरतजबतबहतिहैंभगवान॥
याही ते चीन्हा दिये पूरेव शत अपराध।
हत्योतबहि हरिचक्रतेपाईगति जिमिसाध॥

सो० भापूरण इमियज्ञ नृपहरषित सबकिय बिदा।
तव यदुपति सर्वज्ञ सतिय सेन गे द्वारका॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेशिशुपालमोक्षोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७४॥

दो० केवल दुर्योधन गयो असंतुष्ट तेहिकाल।
कहन्रपसोकिमिभामलिनकहमुनिगिरारसाल॥

चौ० सुनि नृपरहे युधिष्ठिर ज्ञानी। मखक्रम करण योग सबजानी॥ या विधि बांटिदिये सबकाजा। करन लगे हर्षित सबराजा॥ भीमकरावत भोजन सबही। अर्जुनसेवन हटे न कबही॥ पूजालगि सहदेवहिराखा। चरणधोवे हरिद्विज अभिलाषा॥ लावत न कुलदर्बबहुतेरे। बांटत दुर्योधन सबकेरे॥जानिहोत उपहासनरेशू। घटतदर्वभूपतिकेदेशू॥ जहांदेन यकतहं दशदेता। सुकृत पाय बाढ़त धनतेता॥ रहाचक्र यकताके हाथा। याहूते बाढ़त नरनाथा॥

दो० सोनहिं जानतरह नृपति तातेभया दुखारि।
यज्ञहोत नृपनारिसँग मज्जनकिये सुखारि॥
मयकृत सभा मे जायके बैठत भये भुवाल।

गंधर्व हलगु गानतहँ शोभाजिमि सुरपाल ॥
दुर्योधनगातेहिसभा बिनुजलथलजलजानि ।
बस्त्रउठावन लागुजब हंससभा सुखमानि ॥
सो० लज्जितकिरिगाधाम जोनहि पलटालेउहम ।
महिं दुर्योधन नाम होत हमारो जगत महँ ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ
कृतेदुर्योधनमानमर्दनोनामपचसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

दो० महाराजजेहिदिवसमहँ हस्तिनपुरघनश्याम ।
रहे भारताकेसहित शाल्व नृपति बलधाम ।

चौ० रुक्मिणिब्याहजोहरितेहारा । सोइ अबपलटा लेन बिचारा ॥ लगाकरण तप श्रीगौरीशा । भये प्रसन्न ताहिपर ईशा ॥ मांगादेहु मोहिं यकयाना । चलत जो उड़िमगते असमाना ॥ तब शिब मयनिश्चर कहँटेरी । कहा बनावहु लावन बेरी ॥ सुनि मयरचा जबहिं तेहिं याना । तबचढ़िसंग सेनलयनाना ॥ आवापुरी द्वारका माहीं । डारततोड़ि वृक्ष जहँताहीं ॥ ब्याकुलभये नगर समुदाई । भाषा उग्रसेनते जाई ॥ शाम्ब प्रद्युम्न कृष्ण सुतटेरी । कहाकरहु युध लाव न बेरी ॥

दो० तब दोउ भ्राता सैनलै सन्मुख गे ततकाल ।
तिनहिंदेखिशाल्वकतजाभयातिमिरविकराल ॥

चौ० तब प्रद्युम्न निजशस्त्रचलाई । क्षणमहँतम सब दीन्ह नशाई ॥ यकशरतेरथ ध्वजागिराई । यकते सूतहिं दीन्हनशाई ॥ तीजेरथ के बाजिनिपाता । सकल सेन कीन्हीबिकलाता ॥तबतेइँ अस प्रद्युम्न बलदेखी । माना

भय उरमाहिं बिशेषी॥ धरिलघुरूप कबहुं तहँ आता। कबहु उपल नभते बरसाता॥ देवमान तेहिमंत्री आये। लगा करनयुध सँगहरिजाये॥ शायक एक चला तेहि ऊपर। भयाबिकल पुनिउठा सँभलकर॥ गदाएकहरि सुत शिरमारी। मुरछिपरे स्यन्दनहि मंझारी॥

दो० सूत तबहि रणभूमिते। लाया बिलगभुवाल।
मूर्छातजि बोलतभये तबहिं कृष्णके लाल॥
कछुनहिं कीन्हबिचार उर लायो रणते मोहिं।
होत जगत उपहासमम क्षत्रीकहँरणसोहिं॥

सो० कहतसूत सुनुहाल मूर्छाजानके लायऊ।
बदनधोइततकालरथचढ़िगेरणशाल्वजहँ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथकृतेप्रद्युम्नमूर्च्छानामषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

दो० जातहि ललकारतभये तिष्ठतिष्ठ सुरघाति।
भागिकहामारतसबहिकरिहोआजनिपाति॥

चौ० लागाशठ छांडन बहुबाना। भय क्रोधित तब सुत भगवाना॥ चारिबाणते बाजिहिमारा। एकबाणते सूतसँहारा॥ एकतेध्वज इकछत्रगिराये। इकधनु पुनि शर तीनचलाये। ताते हतिदीन्हादेवमाना। शाम्बकिये सब सेन निदाना॥ कादर भजे समरलै प्राणा। लड़ा सताइसदिन परमाणा॥ तबहरि तहँ अस सपनादेखा। करतयुद्ध कोइनगरबिशेखा॥ तहँतेहोइ बिदादोउभाई। रथ चढ़िआये आतुरताई॥ आप निकट गे युद्धके हेतू। पठवागृह भ्रातहि जगकेतू॥

दो० हलधर पुर रक्षणगये इतनृप हरिकहँपेखि।
माराइकशरसूनकहँहरिदिये काटि बिशेखि॥

चौ० षोड़शशर मारे रथ ताका। धुर्मन लगान्नृपति तेहिचाका॥ तेइहरिपर माराइकभाला। काटिदिये शूरन महिपाला॥ अमितबाणहरि चालिबहोरी। ब्याकुल कियेशाल्व नृपकोरी॥ सजगहोइ पुनि शाल्वनृपाला। माराशरकर बामकृपाला॥ खसाधनुष महिभाजगत्रासा। कहाशाल्व तबहृदय हुलासा॥ छिछ्नरहो तोमारों तोही। पलटालेउं मित्रके द्रोही॥ कहाकृष्ण शूरन जग जेते। निजपरशंसा करहिंन तेते॥ भईदशाजो नृपशिशुपाला। करिहौंक्षण महंतोहिंसोहाला॥

छं० करिहौंनिमिषमहंसोइदशाअसकहिगदामारतभये।
लगिमाथरुधिरअपारनिसरे असुरतब मायाकिये॥
बरषान लगपावकतबहिं इक श्यामशरमारेरिसा।
भइविगत मायारथसहितनृपशाल्वगाधरणीखसा॥

सो० बंहुरि संभरिसोमारि गदाएक श्रीकृष्णको।
हरितेहि तुरतसंहारि गदामारि मूर्छितकिये॥

चौ० भैसचेतधरि दूतसरूपा। मंत्रकेबल गा जहँ सुरभूपा॥ कहादेवकी कहेउसंदेशा। शाल्वदेत तवपितहि कलेशा॥ पुनिसोधरा आपनो बेषा। रचाकृष्णके पिताबिशेषा॥ हरिसन्मुख माया वसुदेवा। काटिदिये भैमूर्छितदेवा॥ पुनिकरिध्यान लखीतेहिकरणी। भयेमुदितकछु जातनबरणी॥ गदाएकअसकीन्ह प्रहारा। गिरासहित रथसिन्धुमँझारा॥ रथतेकूदि गदाइकमारी।

हरिदीन्ही तेहितुरत संहारी॥ विपुल गदाहरिताकोमा-री। बिपुल गदा तेइदिये संहारी॥

दो० हरिआयसु तेचक्रतब काटिदिये तेहिनाथ।
देवनसब दुन्दुभिहने जगन्नाथ यदुनाथ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादे श्रीकृष्णकृत शाल्वबधोनाम सप्तसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७७॥

दो० राजनशाल्व बधनसुनि द्वैभ्राता शिशुपाल।
दंत बक्र अरु विन्दुरथ आये कोपि कराल॥

चौ० कहनलगे शठ हरिहि पुकारी। हमते सकहुन जीतिमुरारी॥ मित्रशाल्वबध पलटालैहौं। तुम्हैमारियम परहिपठैहौं॥ प्रथमचलावहु अस्त्रअपाना। हतिहहुवद-धिनशोचपराना॥ असजल्पत इकगदा प्रहारी। सपदि दीन्हतेहिश्यामनिवारी॥ सजगहोहु तुमदन्त बक्र अब। हनीगदा असकहि छातीतब॥ रुधिर बमत मरगया सुरारी। ज्योतिसमाई बदन मुरारी॥ बिदुरथ ताकेभाइ निहारी। खड्ग चर्म लेइकरन मँझारी॥ आवायुद्ध करन जहँनाथा। चक्रतेकाटिदिये तेहिमाथा॥

दो० भात्रिलोकमें हर्षअति देवनमुदित बिशाल।
अस्तुति करनलगेतहँ धनि वसुदेवके लाल॥

चौ० तुम्हरीमहिमा जान न कोऊ। निरगुणतेसर-गुणतुमहोऊ॥ जयअरु विजयदूतयदुराई। पाइशापमुनि गणबहुताई॥ हिरण्याक्षहिरण कशिपुदोऊ। निशिचरभये जान सबकोऊ॥ नरहरिरूपधारि तबनाथा। तारिदियो

तिनको सुरमाथा॥ पुनिदोउभये असुरबलवाना। रावण कुम्भकर्ण जगजाना॥ रामअवतारलेइ प्रभुतारे। लखत भेदप्रभु कौनतुम्हारे॥ अबभैदन्तबक्र शिशुपाला। तारेउकृष्ण रूपते लाला॥ येसबभजा शत्रु जियजानी। तिनहिं मुक्तिदियकोअसदानी। असकहि सुरनिज लोक सिधाये। इतससेन श्रीपति यदुराये॥ आये पुरीद्वारका माही। बोलेहरितबहलधरपाही॥

दो० कौरव पांडव मध्य मेंहोत युद्ध है तात।
अबचलनोतहँचाहियेसुनिबोलेहरिभ्रात॥

चौ० करितीरथ मैं आवबपाछे। सुनिहरिचले पूर जहआछे॥ पुरीहस्तिनागै यदुराई। हलधरइतगंगादि नहाई॥ नैमिशारि तीरथमहं आवत। लखासूतमुनिकथा सुनावत॥ शौनकादि मुनिआदरकीन्हा। सूत न उठे रहे आसीना॥ गर्वजानि कुशधरि यकहाथा। मंत्रपढ़त डारे मुनिमाथा॥ कटिगामाथ तुरतमुनिकेरे। शौनकादिबोले तबहेरे॥महाराज यहहरि यशगावा। ताहिहत्योयहनीति नभावा॥ तबप्रभु कहागर्व तेहिजानी। हतेउलाउ अब बालकज्ञानी॥ असकहिबोलि सूतमुनिबालक। बिद्या दीन्ह असुर कुलघालक॥ व्यासगदीपरदीन्हबिठाई। बोलेप्रभु सुनमुनि समुदाई॥

दो० पापछुटत कैसेमहा कहाकरहु अस्नान।
सबतीरथमें जाइके पातक होत निदान॥

सो० कहमुनिरेवतिनाब विल्वलनामयकवानरो।

करत उपद्रव साथ हलधरकाहा हनबतेहि ॥

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्बादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथकृते सूतवधोनाम अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥

दो० महाराजजबमुनिन सब करनलगेमखजानि ।
हलधरकोसुखदानिजिय तबवानरबलवानि ॥

चौ० आयलगा बरसावन लोहू । हलधर को लखि उपजा कोहू ॥ कियेअस्मरण हल अरुमूसल । भयेउपस्थित युगल सोई थल ॥ हलतेखींचिमुसल इकमारा । निसरा प्राण फाटि शिरभारा ॥ शौनकादि मुनि अति सुखपाये । पुष्पमाल दिय गल पहिनाये ॥ बिदा होय सब तीर्थ अन्हाई । पहुचे कुरुक्षेत्र हरिभाई ॥ तहांअष्टदशवांदिन भारी । दुर्योधन अरु भीम मँझारी ॥ होत रहा युध बरणि न जाई । हलधरजाइ बहुत समुझाई॥ तजा न युद्ध तदपिरन फावी । हलधर तजा जानिअस भावी ॥ क्रोधित भीम तबहिं सुनु राई । दुर्योधन पर गदा चलाई ॥

छं० रिसियायकियेउप्रहारजंघमे दुर्योधनकी इकगदा ।
गइटूटिजंघा तबहि सो बलदाउसे या बिधि बदा ॥
गुरु कृष्णके बल पाइ यह दिये तोड़ि मेरी जंघको ।
सुनिगेनिकट हरिसुनहुभ्राता नहिंउचित असभंगको ॥

दो० कहत श्यामप्रति दैबता रही द्रौपदी नारि ।
ताहि पतित दुर्योधन चहा जघ बैठारि ॥
भीमसेन तब प्रणकियो जघ तोरिहौं एहु ।
ताते तोरिदिये हृदय शोच सकलतजिदेहु ॥

सो० सुनिके श्रीबलराम आवत भे पुरि द्वारका ।
भयेमुदितसंगबाम करितीरथपातकनश्यो ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ
कृतेबिल्वल बानर बधो नाम ऊनाशीतितमोऽध्यायः॥७६॥

दो० राजन दक्षिण की दिशा अहै द्रावड़ीदेश ।
तहके नर धर्म्मात्मा धर्म धुरन्ध नरेश ॥

चौ० तहद्विजएक सुदामानामा । हरिगुरुभाइ भजत सुखधामा ॥ अति दरिद्र सो बिप्र गुसांई । तदपिमगन सुमिरत यदुराई ॥ ताकी नारि सुशीला रही । पतिव्रत धर्म जगत मों लही ॥ परमदुखीतदपिपतिसेवा । करत संग सुमिरतजगदेवा ॥ दिवसएक अस अवसर आवा । दुइदिन बीति गयेबिनखावा ॥ चारिपुत्ररह विप्रहिराई । द्वैसुतभये क्षुधा बिकलाई ॥ कहत सुशीला पतिसेबानी । तुम्हरे मित्रहैं हरिअतिदानी ॥ करिहैं अवशि कृपा प्रभु तुमपर । जाहुद्वारका उर आनँदभर ॥

दो० कहद्विज बीते तीनपन सुमिरत श्री जगनाह ।
वृद्धावस्था जाउं कहँ सुमिरत होत निबाह ॥

चौ० मग जो गिरौं भयउ जर्जर तन । होत नाम लोभी प्रिय यहपन ॥ तातेजाय बनहिसो ठामा । सुनि बोली पुनि तिय दुखधामा ॥ जाहुदरश पावतयदुराई । होइहौंपतिकृतार्थबलिजाई ॥ याविधिजानि नारिअभि-लाषा । सपदि सुदामा तियसन भाषा ॥ बिना भेंटदिये गेह प्रवीना । सकनजाइकेउ सुनुप्रियदीना ॥ सुनिप्रिय याचि निकटकेवासो । चारिमुष्टि तंदुलहिहुलासी ॥ देन

हेत दीन्हो पतिहाथा। गमनकरहु जहँ त्रिभुवननाथा॥ बाँधिपोटरी तंदुलकोरी। दाबिकांखलैलोटाडोरी॥ चले जहां श्रीकमलाकंता। रुक्मिणिपति जेहिध्यावतसंता॥ मगमहँ शोच करहिं बहुतेरे। कैसे जावँ कृष्ण के नेरे॥

दो० पहुँचे जब पुरि द्वारका लखासिन्धु चहुँआहिं।
घरघर देखत हरिभजन गै हरि मंदिर पाहिं॥

चौ० विप्रजानि रोका नहिकोऊ। हरिपहँ चर यक भाषा सोऊ॥ बोलिलीन्ह सादर जनत्राता। पूछनलगे सकल कुशलाता॥ दशाविलोकि नयनजलछावा। आपहि ते पगधोइबिठावा॥ रुक्मिणिचवरडुलावनलागी। भोजन विविधधरे तेहि लागी॥ कीन्हा अशनदिये तब पाना। रानिन देखत अचरज माना॥ होत अस्मरण मित्र हमारे। हम तुम पढ़ेरहे यक बारे॥ कीन्ह कृपा सांदीपनभारी। तिनतेकबहुँ न उऋणहमारी॥ मोसम गुरुकहँ जानहिं जोई। दयामोर तिन्ह प्रतिअतिहोई॥

दो० तादिन ते अबहीं मिल्यो भा मोहिँ हर्षअपार।
सुनत सुदामा जोरिकर अस्तुतिकिये मुरारि॥
अगमअगोचर नाथतुम महिमालखेउ न केहु।
जगन्नाथ नर उद्धरन जगत सिखावन देहु॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेव परीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेसुदामाद्वारकागमनोनामअशीतितमोऽध्यायः ८०॥

दो० याविधि अस्तुतिकीन्ह बहु जबबोले जनत्रात।
मित्रभाभि जो दीन्ह मोहि सो दीजै सौगात॥

चौ० लज्जित होइ सुदामा जबहीं। लगे छिपावन

तन्दुल तबही ॥ छीनिलिये श्रीरुक्मिणि नाहा। खान लगे हर्षित चितचाहा ॥ प्रेमसहित अर्पहि मोहिंजोऊ। अल्पहि लगत नीक मोहिंसोऊ ॥ प्रेमविहीन लक्षमन माही। करत प्रसन्न मित्र जग माही ॥ मुष्टिदूइ खागे प्रभुजबही। करगहि लीन्हो रुक्मिणि तबही ॥ हैं प्रभु हमन तुम्हारीदासी। छांडहु हम सबहित अविनासी ॥ दियेलोकदुइ ताहिबिहारी। दैत्रिलोककीहोबभिखारी ॥ कहहरि द्विजकर्म भूलेउ अबहीं। व्याहसमय कस सुख दिय तबहीं ॥

दो० भईरैन द्विज शयनकिय हरि विश्वकर्महिं टेरि।
कहाजाय मन्दिररचहु लावहुनहिं कछु देरि ॥
जहां सुदामा की पुरी घटे न धन कछुताह।
जाइ सपदि तेइरचिदिये पाइवचन जगनाह ॥

चौ० प्रातसमय क्रिय विप्र विदाई। तेहि मगजात शोच अधिकाई ॥ आयउँ जाविधि चलेउँ ताहि विधि। मांगेउं द्रव्य न कछु करुणानिधि ॥ जाइ उतर का देब सुशीला। याविधि शोचत रत हरिलीला ॥ आये निज पुर मन्दिरदेखी। जानाकोउ नृप गेह विशेखी ॥ भूलत मग आयउ यहिकाला। पूंछतभये दूतसेहाला ॥ काके सुन्दर मंदिरयाविधि। कहतसुदामाकीयह सुखनिधि ॥ तबलौं निकट सुशीलाआई। लेइगईगृह पति हरषाई ॥ बैभवदेखिके भयेउदासा। कहतनारितबहृदयहुलासा ॥

दो० काहे भये उदासतुम कहा तबहिं हरिमीत।
भजन न होवतद्रव्यते घटत कृष्णपदप्रीत ॥

विनमांगेमोहिंदीन्हहरि कहनलगीतबनारि।
ममउर यहरहि बासना ताते दीन्ह मुरारि॥

सो० दम्पति आनँदसाज हरिसुमिरे काटे दिवस।
अन्त गये यदुराज 'गम भये तहं दासहरि॥
जोनर सुनहि सप्रेम अतिपावन दम्पतिकथा।
जगमें रहहिं सक्षेम अन्त मुक्ति पद पावही॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षित सम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृते सुदामादरिद्रशमनोनामएकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

दो० भूपति दिनयक रविग्रहण मे हरि कहाबुझाय।
नाना जू कुरुक्षेत्र में जो जन मज्जहि जाय॥

चौ० गुण सहस्र फल होत गुसाईं। करत दान जो न्र सोइठाईं॥ ताते तहां चलहु हरषाई। सुनि यदुवंशी कह समुदाई॥ असमहात्म भा कहु प्रभुकैसे। कहहरि सुनहु कहौं मैं तैसे॥ परशुराम तहं क्षत्रिनमारी। तर्पण कीन्ह रुधिर ते भारी॥ मुनिसबमिलि तहँ पूजनकरेऊ। ताते अस महात्म अनुसरेऊ॥ सुनि नृप यदुबंशी नर नारी। कृष्ण तियनयुत अरु महतारी॥ चढ़ि शिविका सेना संगलेई। चलेभ्रात युत छबि अतिदेई॥

दो० क्षेत्र निकट हरिदेखिकै उतरिगये असवारि।
गये मुदितमन सेनयुत मज्जनकियेसुखारि॥

चौ० अश्वगजादि कीन्ह बहुदाना। धेनुसुवसनरत्न विधि नाना॥ तहँ पाण्डव कौरव नृपजेते। मिलेतियन युत हरिसे तेते॥ कुन्तीकहत सुनहु बसुदेवा। जनदुख टरन भये जगदेवा॥ सेवन कीन्ह सहाई मोरी॥ दुर्यो-

धनदिय दुखसबकोरी॥ कह वसुदेव कर्मकीरेखा। मेटि सकै नहिं कोइ विशेखा॥ हरिआवन सुनि नंदयशोदा। गोपिन गोप सहित अतिमोदा॥ आये मिलनदेखिहरि भ्राता। हलधर सहित गिरे पदमाता॥ बहुरिनन्दपद गिरे मुरारी। मिले ग्वाल बालन ब्रजनारी॥

दो० राधादिक ते प्रेमवश मिले वरणि नहिंजाय।
शोच हर्षमें मगन भे तनकी सुधिबिसराय॥
नन्दमिले वसुदेवसे हरि तब सबहिं बुझाय।
तुम्हरीभक्ति बिवसरहौं घनिगोपीपितुमाय॥

सो० तुमहिं मिलनकेकाज करिबहान मज्जनकरन।
आयों सहित समाज जगन्नाथ ह्वै प्रेमबश॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादे श्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेहरिहलधरकुरुक्षेत्रगमनोनामद्वाशीतितमोऽध्यायः ८२॥

दो० राजन रानी द्रौपदी कह रुक्मिणि ते आइ।
का विधिपायो कृष्णपति सोसबकहो बुझाइ॥

चौ० कह रुक्मिणि सुनु द्रौपदि रानी। पिताजानि मोहिं भई सयानी॥ चाहा व्याहकरन सग गिरिधर। भ्राताके मन भायो नहिंबर॥ चाहा व्याह करन शिशु- पाला। द्विजभेजा मैं जहां दयाला॥ सो द्विजजाइकहा हरिपाहीं। तब आये हरि मोपुरमाहीं॥ जातशिवाकहं पूजत तेहिक्षन। आइगये सच्चिदानन्द घन॥ रथचढ़ाइ निजपुरप्रभुआना। तहं विवाह भा वेदविधाना॥ सुनि द्रौपदिसतभामानारी।जाम्बवतीकालिंदिविचारी॥भद्रा सत्या अरुमित्रबिन्दा। पूंछेउ लक्ष्मणाहिं आनन्दा॥

दो० सोरहसहसरु एकशत आठौरानिहि जाइ।
ब्याहकथा पूछतभई तेसब कही बुझाइ॥
तबरुक्मिणि बोलतभई सुनहुद्रौपदी नारि।
ब्याहकथा तुमआपनी हमतेकहौ सुधारि॥
भईसयानी जबहिं मैं कहतिपांडवन्ह नारि।
पितास्वयम्बररच्योतब याविधि परनविचारि॥
धराकराहमे मत्स्यइक जोनर पृष्ठकिओड़।
दारु ते बेधे मत्स्य को सो नरजीते होड़॥
अर्ज्जुनबेध्योताहिविधि तिन्हकहँदीन्होबोलि।
निजमातहिअर्ज्जुनकहा लायेउंवस्तु अमोलि॥
सो० बोलीअर्ज्जुनमातु जानिवस्तु कछुअशनकी।
बांटिलेहुसबभ्रातु बांटिलिये सब तबहिंते॥
भेपति पांचहमार एकहि मैं सुनु रुक्मिणी।
जगन्नाथ सुखभार इमिहि परस्परबोलती॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेस्त्रीगीतवर्णनोनाम त्र्यशीतितमोऽध्यायः॥ ८३॥

दो० सभामध्यबैठेरहे एकदिवसजगदेव।
तेहिक्षणआयेदेवऋषितबबोलेबसुदेव॥

चौ० भवसागर के तरन उपाई। कहहुनाथ मोपे समुझाई॥ कहमुनि जाकेसुत भगवाना। ताहि तरनकहु कौनविधाना॥ तदपि कहौं सुनिये चितलाई। सोम यज्ञ तुम करहु बनाई॥ सुनि बसुदेव किये तैयारी। आयेबहुनृप यज्ञमंझारी॥ तबहरि तातसहित निजरानी। करन लगेमख सुनु नृपज्ञानी॥ आहुत्द्दिये जबहिं

बसुदेवा । लियेभाग परकटह्वै देवा ॥ हरषित दुन्दुभि लगे बजाना । गन्धर्बन लागेयश गाना ॥ निरतन लगी अप्सरा आई । भाजब पूरण यज्ञ बनाई ॥ किय अर्पण हर्षित बसुदेवा । मखकेफल श्रीपति जगदेवा ॥ दियेअचारजको बहुदाना । हेमधेनुमणि आदिकनाना ॥

दो० मुखमांगादिययाचकन बिदाकियेनृपलोग ।
गयेनिकटतबनन्दके याविधिकहासशोग ॥
तुमतेमित्र उऋणनहिं रहहुइहां चौमास ।
सेवाकरि सुखपाइहौं रहेसकलसुखरास ॥
हरिसेवातिन्हकरनलगनितनव प्रीतिबढ़ाय ।
बीतेअवधिहिद्वारका गमनकहा यदुराय ॥

सो० मूर्छिपरेब्रजबासि तबहरिदीन्हो फेरिचित ।
बिदाकियेसुखरासि तेब्रजगय हरिद्वारका ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदासजगन्नाथ कृतेबसुदेवमखकरनोनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥

दो० भूपतिदिनइकप्रातही हरिहलधर सुखधाम ।
मातुपिताकहँजाइकै कीन्हाजबहिं प्रणाम ॥

चौ० चरणनमहँ गिरिगै बसुदेवा । हो तुम हरि देवनके देवा ॥ प्रथम पुत्रकरि जानत रहेऊं । नारदव-चन ज्ञानयुत सुनेऊं ॥ तब प्रभु पहिचान्यो अवतारा । तुमहि रचहु पालहु संहारा ॥ ताते देहु ज्ञान मोहिं लाला । चीन्हों तुमहिं न परु भव जाला ॥ कहहरिमम स्वरूप जग जानहु । सबहीमहँमोहिंव्यापक मानहु ॥ तब माया नहिं व्यापत ताता ।भजन लगे तेहिबिध

हरिदाता॥ मातातेबालेयदुराई।जोमांगहुसोदेहौंमाई॥ तुमतेहोउंउऋणनहिंमाता।सुनिबोलीसोपुलकितगाता॥ छ सुतमोहिं दियकंस संहारी। लाइदेहुसोई बनवारी॥

दो० सुनिहरिगे पाताल मे जहँके बली भुवाल।
आवतसादर हरषिहिय बैठारे गोपाल॥
कहाकृष्णसुनुबलिनृपति हतेजोबालककंस।
तवगृहलीन्हाजन्मते देहुहंस निज बंश॥

सो० दीन्होतुरत भुवाल गयेमातुपहँलेइकै।
लगीजननिततकाल दुग्धपिलावनबालकन॥
भये प्रफुल्लितगातसकलनारिनरनगरके।
मातुहरपनहिजात जगन्नाथ मोपैकह्यो॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्बादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेदेवकीपुत्र दर्शनोनामपचासीतितमोऽध्यायः॥ ८५॥

दो० राजनश्री हरिकीबहिनि नामसुभद्राताहि।
भईबिवाहनयोगजब तबहर्षितमनमाहि॥

चौ० कह वसुदेव कौनते ब्याहू। करौं सुभद्राकहं नरनाहू॥ कहा कृष्ण अर्ज्जुनते करिये। हलधर कह दुर्य्योधन बरिये॥ हरिकी मति सबही मनभाई। तब हलधर उर रिसि भरिआई॥ उठिबैठे दूसर अस्थाना। उत अर्ज्जुन हरिइच्छा जाना॥ धरि संन्यासी रूप नृपाला। बैठाआइ नगर गोपाला॥ चतुर्मास तहँ रहा सो जबहीं। जानि भिखारीहलधर तबही॥ भोजनहित लैगये गृहमाही। देखि सुभद्रा जान्यो ताही॥ हैकोउ भूपवेष संन्यासू। देखिभयो मोहितमन तासू॥

दो० इतअर्ज्जुनतेहिदेखिके मोहितभामनमाहि ।
शोचितआसनपरगयोकेहिविधि पैहौं ताहि ॥

चौ० यकदिन शम्भुरात ब्रजजानी। बाहरगे पुर-जन सुखमानी ॥ तिनकेमध्य सुभद्रागई । जबशंकरकहं पूजत भई ॥ चढ़ि हरि रथ अर्ज्जुन ततकाला। लिये बैठारि सुभद्रा बाला ॥ भाजि गये आपन पुरमाहीं। हलधर रिसिआये लखि ताहीं ॥ सैनालै चाहा तेहि मारण। तब समुझाये असुर संहारण ॥ चाहिय नाहि हतन तेहि भाई। निन्दाहोतमोहिं सबठाई ॥ करीप्रीति पुनि बैर बिसाहा। देखिके अस जग भाषत काहा ॥ तब हलधर बैठेपछिताई। तुम्हरीहै करणी यह भाई ॥

दो० उतअर्ज्जुन पुरजाइके कियेविवाह बनाइ।
वस्त्राभूषणअनुचरन हरितहं दीन्ह पठाइ ॥
नृपबहुलाश्वऔविप्रइक श्रुतीदेवतेहि नाम।
रहेभक्तदोउकृष्णके तहांजाइ सुख धाम ॥

सो० पूर्णमनोरथकीन्ह दिनएकैसहि दोउ भवन।
दरशिजन्मफललीन्ह हरिआये निजपुरविषे ॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेसुभद्राहरणानामषट्शीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

दो० कहनृपभाष्योप्रथममुनि अस्तुति करतहैं वेद।
हरिरहहीं निर्गुणसदा सोकिमि पायो भेद ॥

चौ० कहमुनि जो हरिरचा पुराना। इन्द्री मनअरु बुद्धि निदाना ॥ अर्थ धर्म कामादिक जोऊ। निर्गुण रूप रहत नृप सोऊ ॥ महा प्रलय जब होत सुजाना।

शयन करत तबहीं भगवाना ॥ यही प्रश्न नारद मुनि-
राई। पूछा नरनारायण पाई ॥ वेद करत स्तुति जाही
विधि। कहबतुमहिंमैंसबयाहीविधि॥ सनकसन्दन अपर
सनातन । सनत्कुमारभाइ चारोंजन। नारदमुनी सन-
न्दनइनहीं। कहहिं कथा तेत्रियमिलि सुनही॥ सृष्टि
करन इच्छा जबहोई। वेद करत स्तुति तब सोई ॥

दो० बेगिरचहु प्रभुसृष्टिको त्यागहुनिद्राभारि।
मायाबश यह जगतहै तुमबिनकिमिनिस्तारि॥

चौ० बिनुतवकृपासकतनहिंजीती। जापरराखहुतुम
परतीती॥ सो मायाते बचत गोसांई। तुम्हरी महिमा
जानिन जाई॥ तुम उपजावहुपालहुनाशा। तरणनाम
बिनुजपे न आशा॥ नृप यह कथा सनंदन गाई। सन-
कादिकमुनितेहरषाई॥ नरनारायण नारदपाहीं। नार-
द व्यास सो मोहिं सकनाहीं॥ सोइ चरित मैं तुमहिं
सुनावा। याविधि वेदब्रह्म जस गावा॥

दो० यहअस्तुतिजोनरकरहिंसुनहिहृदय हरषाहिं॥
जगन्नाथ जगसुखलहहिं अंतबिष्णुपुर जाहिं॥

इतिश्रीकृष्ण सागरे शुकदेव परीक्षित सम्बादे श्री
कृष्णदास जगन्नाथकृतनरनारायणनारदसम्बादो
नाम सप्ताशीतितमो ध्यायः८॥ ८७॥

दो० मुनिवरहरिके भक्तजन रहहिंदरिद्र हमेश।
धनआदिक बहुलहहिंते पुजहिंजोदेवमहेश॥

चौ० सोकारणमोहिं कहहु बुझाई। कहनलगे मुनि
सुनुचितलाई॥ भजन होत हरिद्रव्य बिहीना। तातेहरि
राखहिं जनदीना॥ धनतेनर होवहिं अभिमानी। माया

बशमति रहति भुलानी ॥ रुद्रबहुत असुरन वरदीन्हे। आपैकष्टअन्त तिनलीन्हे ॥ वृकासुरदिन यकतपलागी। बनगामिलिगेनारदत्यागी ॥ पूछामुनिकहुमोहिंबुझाई। सपदि प्रसन्न कोहोत गोसाई ॥ विष्णुकमल भव अपर महेशा। इनमें कोअस पुछेउ नरेशा ॥ कहासपदिहोहीं त्रिपुरारी। तातेतिन्ह तपकरहु सुखारी ॥ सुनि होमन लगुकाटिके मांसा। सप्तदिवस तपकिये हुलासा ॥

दो० अष्टम दिवसअन्हाइके काटन चाहामाथ।
अग्नि कुंडते प्रकट तब होगै भोलानाथ ॥

चौ० नीर कमंडल तेहितन सींचा। दिव्यरूपपावासो नीचा ॥ मांगन कहा तबहि वरदाना। कहादेहु मोहि अस भगवाना ॥ जाके माथ धरों मैं हाथा। होयभस्म तत्क्षण सो नाथा ॥ ऐसहि होतकहा जबराई। तब निश्चरकेमन असभाई ॥ इनके माथ राखिकर मारी। हरिलैजाउं पारवति नारी ॥ असजिय ठानिके धावा जबहीं। भागे शिवशंकर तहं तबही ॥ रक्षाकोउ सका नहिंकरना। तबगे जहं प्रण तारत हरना ॥ समाचार सबदीन्ह सुनाई। धरारूपहरि बिप्र सुहाई ॥

दो० जहंनिश्चर आवत रहा गये तहाँ असुरारि।
पूछतभयेसोकहिदिये जिमिरहबरत्रिपुरारि ॥

चौ० कहहरि रहशिव भंगके माते। बचनसत्यहोवत किमिताते ॥ निज शिरधरि करिलेहु परिच्छा। पूरण करेहुतबहि निजइच्छा ॥ सुनतहिंकरनिज मस्तकराखा। धरतहिंमात्र भयातमराखा ॥ हरहरषे हरिके गुणदेखी।

मुदित भये सब सुरन विशेषी ॥ बर्षावन लगसुमनन रेशा। बिदाकिये हरि तबहिं महेशा ॥ मुदितकीन्हअमरसुर सुरनाथा। पूर्णआश हरिआपन हाथा ॥

दो० रुद्रत्रान लीलामहा कहै सुनै नर जोइ।
जगन्नाथजगसुखलहैअंतमुक्तिफलहोइ ॥

इतिश्री कृष्णसागरे शुकदेव परीक्षित सम्बादे श्री
कृष्णदास जगन्नाथकृते भस्मासुर बधोनाम
अष्टाशीतितमोध्यायः ॥ ८८ ॥

दो० राजन सप्त ऋषीश्वर भृग्वादिक आसीन।
नदी सरस्वतितीरपर तहांबातअसकीन ॥

चौ० सबदेवनमेंको बड़अहई। विष्णु कोउ शिवअज कोउ कहई ॥ भृगुमुनिकह जो लगन बुराई। मद करत जो समझ भलाई ॥ सब महँश्रेष्ठसोइजगजानो। करब परीक्षा असमन मानो ॥ असकहिअजकेलोकसिधाये ॥ बिनादंड बैठे तहँ आये ॥ बिधिचाहाशरापमुनिदीन्हा। पुत्रजानि नृप नहिकछुकीन्हा ॥ जानि रजोगुण मे जग कर्त्ता। पुनिगे जहां रहै संहर्त्ता ॥ मुनिहि देखि शिवमिल बेआये। छूवहु जनि असमुनी सुनाये ॥ तुम्हरे गरे मुंड की माला। सुनि भाशिव कहँ कोप बिशाला ॥

दो० लैत्रिशूल मारनचले दीन्हों उमा बचाय।
इनहितमोगुणजानबशमुनिबैकुंठसिधाय॥

चौ० तहंबिनुरबि शशि रह उजियारा। सोहत महि हाटक आकारा ॥ कूपबापि बरसोह तड़ागा। सब ऋतु तरु पुष्पित फल लागा ॥ तहँ मुनिगेहरिसन्दिरमाहीं।

जहांरहे सोवत शक्रनाहीं ॥ चरण एक छातीमहँमारा । तुरत उठेहरि करत उचारा ॥ कोमल चरण कठिनमम छाती । कष्टसह्यो मुनितुम सब भांती ॥ तुम मोहिंकीन्ह पवित्र गुसांई । ताते चरणचीह्न सुखदाई ॥ रखबसदा मैं मेटब नाही । बोलत भै अस प्रभुमुनिपाही ॥ देखिमुनी असविष्णु सुभाऊ । अस्तुति करन लगे सतभाऊ ॥

दो० रमाचहा मुनिनाथको देनोकछुक शराप ।
हरित्रासनसोनहिं दियेकियेबिदातबआप ॥

चौ० तब मुनिआइऋषिन केपासा । तिनहुँ परिक्षा कीन्ह प्रकाशा ॥ लक्ष्मीपति समदूसर नाहीं । हैदयालु मुनिगण जगमाही ॥ सुनत अटल भा प्रेमसभीकहँ । सबसुरतजि लगभजनहरी कहं ॥ राजन दिनयक हरि पुरमाही । कहाबिप्रएक असनृप पाहीं ॥ हौ अधर्म रत सुनतुम राजा । मरेपुत्र मम सप्त सुकाजा ॥ जहँके भूप होत अघखानी । तहांहोत असविपति निदानी ॥ अस कहि सप्त पुत्र तहँलाई । रखिदीन्हों द्विज सभामझाई॥ गर्वविवशअर्ज्जुन तहँभाखा । करबपुत्रतुम्हरोमैंराखा ॥

दो० पुत्रजनत मोहिं लीजिये बोलिबिप्र दुखमाहिं ।
तब मैं तेहिरक्षा करब यामें संशय नाहिं ॥

चौ० नारित जरब अग्नि लहरावा । द्विजकहसुवन समय जबआवा ॥ बोलिलियेअर्जुननिजओरा गयेधनुष लै गर्ब न थोरा ॥ बाणन ते लीन्हो गृहघेरी । पुत्रजन्यो कछु भईन बेरी ॥ होयगयो अदृश्य नृपाला । अर्ज्जुन कहँगा गर्ब बिशाला ॥ सबलोकन महँ फिरे बहोरी ।

तदपिन हाल मिलो तेहिकोरी॥ लज्जित होइ द्वारका आवा। जरन हेतु सब साज बनावा॥ गर्बहरनतबश्रो कंसारे। तेहिसँगलेइ तहां पगुधारे॥ रमानाथ अष्टभुज जहँवां। शेषारूढ़ रहहिं प्रभु तहँवां॥

दो० देखि श्याम अस्तुतिकिये तब बोले भगवान।
तुमहि मिलन हमविप्रके लीन्ह सुतनकेप्रान॥
मँगादिये तबबालकन हरितब हर्षि निदान।
करि प्रणाम लै बालकन कीन्हद्वारका प्यान॥

सो० अर्ज्जुनद्विज कहँजाय पुत्रन दैलज्ज्या छुड़ेव।
चरण पड़ा यदुराय जीत्योंभारत नाथ बल॥
जोजन सुनहिंसप्रेम जगन्नाथ यहहरि कथा।
तिनके सुतन सक्षेम रहहि लहहि सुखसंपदा॥

इतिश्रीकृष्णसागरेशुकदेवपरीक्षितसम्वादेश्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृतेविप्रदेवविचार करनोनामएकोन नवतितमोऽध्यायः ८९॥

दो० भूपति लीला अकथ प्रभु पावेनहिं कोउपार।
धनमैं अरुपुनि धन्यतुम कहासुनेउ श्रुतिसार॥

चौ० राजनपुरी द्वारका माहीं। अति शोभारह वरणिन जाही॥ बाग तड़ाग सोहबहु जाहां। फूलेफलेवृक्ष बहुताहां॥ आइमहाजनबहुतुमकेरे। निजव्यवसाय करैं बहुतेरे॥मल्लयुद्धकरते सबबीरा। सिंहनादतेकरेंगँभीरा॥ सन्तत तहां पुरीकेबासी। सुमिरणकरैं कृष्णअविनाशी॥ सोलहसहस एकशतआठा। जतप्रभुकीनारिनकरठाटा॥ सेवाकरैं हरिहिहरषाई। दिवसएक जलनिधिमें जाई॥ सबनारिनसँगधरियकरूपा। बिहरनलगेजगतसुरभूपा॥

दो० यकई बोलिउठीतहां तेहिलखि कह यकबाल।
मैं जानी तेरी दशा पति बिनु बकत बेहाल ॥

चौ० सिंधुशब्दसुनिकह यकबाला। यामेंशयन किये जनपाला ॥ ताते बोलत जलधिसुखारी। पुनिइकसखि की ओर निहारी ॥ बोली तुमहरि दरशन पावा। निज तनु के रुज रोग नशावा ॥ पर्वत देखिकहत यकनारी। तुमकिय रुप गोवर्द्धन धारी ॥ राजन या बिधि सबहरि बाला। प्रेम मगन कहं वचन रसाला ॥ याबिधि करत बिहारबिहारी। सेवत पुरत मनोरथ नारी ॥ पुत्रबढ़ेबहु श्री बनवारी। गुरुसंख्यातिन्ह कहों बिचारी ॥ तीनिकोटि चर नारिसआठा। इतेसहस्त्रअरुत्रयशत ठाठा ॥ दीन बन्धु संतन जनप्राना। करतरहे रक्षा कुलदाना ॥

छ० करतेहुते जो दान रक्षन बंशआपन के लिये।
सो एक ऋषिदुर्वासशापित लड़परस्पर मरगये ॥
हरिबंश यक अनिरुद्ध बालक बज्रनाभ रह्यो महा।
सोइभयोराजानगरमथुराप्रजन्हसुखअतिशयलहा॥
तेहि बंश मे ब्रतबाहु अरुसत सेन भे राजा बली।
दोउधर्म पालक दानिद्विज सुखइमिबढ़ी बंशावली॥
श्रीराधिका अवतारलक्ष्मी सखिनसंग लीलाघनी।
सो सकल मथुरा द्वारकाकी जगन्नाथ कछुक भनी ॥

सो० भयहरि अंतर्द्धान करि लीला पावन महा।
दशम स्कन्ध बखान कीन्हेउ मैं हरिकी कृपा॥
कहहिंसुनहिंजेलोइ निहकलङ्क हरि भक्तियुत।
कलिहिकलुपसबखोइअंतमुक्तिपावहिं अवशि॥

चौ० अति दुर्लभ हरिके पदप्रेमा। पावहिं पढ़हिं सुनहिं करिनेमा॥ भर्त्ताभाव सुनें जोनारी। पावहिगति समान ब्रजनारी॥ सबतीरथ मज्जन फल पावहिं। पु-रहि मनोरथ जो मन लावहिं॥ जपतप मख कीन्हेफल जोई। हरियश कहत लहत नरसोई॥ सब पातक जग तूलसमाना। यदुपति कथा कृशानु बखाना॥ कलिमल कठिन ग्रस्यो नरनारी। रहहिं विषयमदते मतवारी॥ तिनहु श्रवण चितदै जो करिहैं। विनुप्रयास भवसागर तरिहैं॥ मैं जड़मनुज कुटिल कुविचारी। कृष्ण कृपाते लीलासारी॥ कहेउँ करहु सतन अबछोहू। दासजानि मोहिं निरत विमोहू॥

दो० मोसमाननहिंपातकी तुमसमपावन देव।
भक्तिअभयबरदीजिये हेनन्दन बसुदेव॥
जगदाधारजगतपतिश्रीपति नन्दकुमार॥
जगन्नाथकोशरणलखिकरुभवसागरपार॥

सो० कियउँकृष्णगुणगानअपनीमतिअनुहारमैं।
बालबुद्धिअज्ञान लेहु सुधारिसुजानजन॥

दो० अंगरेजीनितपढ़तहोंसमयमिलतबहुथोर।
मासतीनकेमध्यमे कहेउँचरितचितचोर॥

इतिश्रीकृष्णसागरे शुकदेव परीक्षितसंवादे श्रीकृष्णदास जगन्नाथ कृते श्रीकृष्णवंश विस्तार बर्णनो ग्रन्थ समाप्तो नाम नवतितमोऽध्यायः॥ ९०॥

अथ आरती ॥

श्रीआरतिकीजैश्रीमोहनलालजीकी । बिनशतपापकोटि जन्मनकेपावत सुखसबकाल ॥ ध्रु० ॥ कमलनयन शिर मुकुट बिराजै कानन कुण्डलधारी । कोटिन कामदेखि छबिलज्जितशोभतचन्दनभाल ॥ १ ॥ उरबैजन्तिकमाल बिराजै अंगपिताम्बर धारी ॥ करबशी शोभा अधिकाई टेरत श्रीनँदलाल ॥ २ ॥ कटिकिंकिणि पगनूपुर बाजै शोभासिन्धुबिहारी ॥ माखनचोरि करत घरघर प्रभु संगहिगोपनबाल ॥ ३ ॥ सोछबिमेरे हृदयबसो प्रभु है गोबरधनधारी ॥ याहिसुखदजगन्नाथदास केहे दीनन के दयाल ॥ ४ ॥ आरतिकीजे श्री मोहनलाल जीकी ॥

अथछन्दगीतक श्रीकृष्णाकृत ॥

निजबंश कमलप्रकाश रबिसमज्ञानअम्बुधि मानिये । यश उजागर नीति आगरभाग सागरजानिये ॥ नाम देवचन्दलाल कापथ करन जगमेंसब कहै । श्रीरामपद पाथोजखट पदसरिसमनजिनके रहै ॥ १ ॥

चौ० रामचरणतिनके सुतभयऊ । संतचरणरतनिशि दिनरहेऊ ॥ पढ़ेयमनविद्या परबीना । गुणगाहक हरि पदलवलीना २ बिष्णुप्रसाद तिनहिंसुतभयऊ । बिष्णु प्रसाद नाम तेहि दयऊ ॥ निजकुल कमल प्रकाशित करहीं । दानदेइ द्विजगण सुखभरहीं ॥ ३ ॥

छं० जगन्नाथसहाय तिनसुतजानिये गुणनिधिमहा ।

सकल शास्त्रप्रबीणजानो कृष्णसागर जिनकहा ॥
तिन अनुजहै यदुनाथ तिनको तर्पत्रयक जानहू ।
बाललीलाकरतबहुबिधिपितहिस्वनिधिमानहू४

सो० वर्ष अष्टदशजान जगन्नाथ के जन्मते ।
तिनभाषेउपरमानयहपुस्तकलिखिदेहुमहिं ५ ॥
हरिहर नाथ सहाय जगन्नाथ कहँ सुत भये ।
बालचरित हरषाय करतेवहिक्रम वर्द्धइ ६ ॥

दो० निजगुणसमश्रीकृष्णद्विज लिखिसंपूरणकीन्ह ।
जगन्नाथ के हुकुमते तिनमोहि बहुधनदीन्ह ७ ॥
त्रयनिशिक ग्रहअवनियुत संवत संख्याजान ।
फाल्गुणशुक्लचतुर्दशी शनिवासर अनुमान ८ ॥

इतिश्रीजगन्नाथसहायकृत कृष्णसागरसम्पूर्णम् ॥

दो० जोजन जहँते आयऊ कथा सुन्यो मनलाय ।
सोसब निजनिज धामको बिदाहोय हरषाय ॥

इति
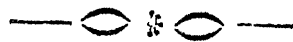
नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भ्रमजालकनाटक	यमुनालहरी	ज्ञानमाला
वेदान्त	जगद्विनोद	गोपीचन्दभरतरी
योगवाशिष्ठ	शृंगारबत्तीसी	कथाश्रीगंगाजीकी
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	पद्मावत	अवधयात्रा
सांख्यतत्वकौमुदी	**राग**	भरतरीगीत
पारसभाग	रागप्रकाश	दानलीला व नागलीला
ज्ञानाभूषण	लावनी	रासलीलाद्वारकाप्र० कृ०
काव्य	**क़िस्सावग़ैरह**	दोहावली रत्नावली
सूरसागर	नानार्थसंग्रहावली	गोकर्णमाहात्म्य
कृष्णसागर	ब्रह्मसार	श्रीगोपालसहस्रनाम
विश्रामसागर	शिवसिंहसरोज	कथासत्यनारायण
प्रेमसागर	भक्तमाल	हनुमान्बाहुक
ब्रजविलास	इन्द्रसभा	जनकपचीसी
कृष्णप्रिया	बिक्रमबिलास	हरिहरसगुण निर्गुणप०
बिनयमुक्तावली	वैतालपच्चीसी	बनयात्रा
अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	कायस्थवर्ण निर्णय
छन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	बिहारवृन्दावन
कविकुलकल्पतरु	बकावलीसुमन	समरबिहारवृन्दावन
[illegible]	चहारदरवेश	कल्पभाष्य
[illegible]र्थमूल तथासटीक	अपूर्व्वकथा	अक्षरावली
[illegible]म.बिलास	क़िस्सागुलसनोबर	स्वयम्बोध
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	सहस्ररजनीचरित्र	ज्ञानचालीसी
भजनावली	सिंहासनबत्तीसी	दोहावली
प्रेमरत्न	राबिन्सनक्रूसोइतिहास	बालाबोध
युगलबिलास	सीताहरण	विद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
चित्रचंद्रिका	सतीविलास	किताबजंत्री
बारहमासाबलदेवप्रसाद	**मुतफ़र्क़ात**	गणितकामधेनु
मनोहरलहरी	मनमोहनी	लीलावती
गंगालहरी	शनिश्चरकी कथा	पटवारीकीपुस्तकें ४भाग

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्योतिषभाषा	मुहूर्त्तदीपक	षट्पञ्चाशिका
जातकचन्द्रिका	वृहज्जातक सटीक	सामुद्रिक
जनराभरण	जातकालङ्कार	**अन्यपुस्तकें**
दैवज्ञाभरण	जातकाभरण	कालिंजरमाहात्म्य
शुनस्वरोदय	लग्नचन्द्रिका	सुधामन्दाकिनी
इन्द्रजाल	वृहत्संहिता भा०टी० स०	रामविनयशतक
रमलसार	जातकपारिजात	नारीबोध
संस्कृतकीपुस्तकें	**संस्कृतउर्दूटीकास०**	प्रतापविनोद
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	मनमोजचरित्र
सिद्धान्तचन्द्रिका	विष्णुहारीत स्मृति	भविष्योत्तरपुराण
अमरकोषतीनोकाण्ड	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०क०सेतुब
निर्णयसिंधु	व्रतार्क	मनोहरकहानी
संग्रहशिरोमणि	याज्ञवल्क्यस्मृति	सीतावनबास
भगवद्गीतासटीक	**संस्कृतभाषाटी०स०**	किस्सामर्दऔरत
दुर्गापाठमूल	श्रीमद्भागवतदशमस्कन्ध	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठसटीक	भाषाटीकासहित	सुदामाचरित्र
विष्णुभागवत	अमरकोषतीनोकाण्ड	ज्ञानतरंग
अपराधभञ्जनस्तोत्र	याज्ञवल्क्यस्मृति	सप्तशतिका
कायस्थकुलभास्कर	सन्ध्यापद्धति	विजयचन्द्रिका
कायस्थधर्मनिरूपणबड़ा	भगवद्गीताटीका आनन्द	भुवनेशभूषण
तथा छोटा	गिरि	महाभारतसबलसि
मथुरामभा	भगवद्गीताटीकाह० व०	चौहानकृत
तुलसीतत्वभास्कर	गीतगोविन्द	सुन्दरबिलास
रामविवाहोत्सव	कथाश्रीसत्यनारायण	गीतरसिका
ज्योतिष संस्कृत	परमार्थसार	इलाजुलगुरबामाद
मुहूर्तगणपति	शार्ङ्गधरसंहिता	रसायनप्रकाश
मुहूर्तचक्रदीपिका	पाराशरीसटीक	रामचन्द्रिकासटीक
मुहूर्तचिन्तामणिसटीक	शीघ्रबोधसटीक	बाराहपुराण
मुहूर्तमार्तण्ड सटीक	लघुजातक	बाल्मीकीयरामाय